हिन्दी मासिक प्रकाशन तिथि:३ मार्च एक प्रति मूल्य १८/-

जनज्ञान

मार्च २०१५ वर्ष:५० अंक:११ फाल्गुन-चैत्र २०७१

ओ३म्

महात्मा वेदभिक्षुः की अमर वाणी

मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूँ –

के अनूठे संकलन के साथ

आग्नेय जीवनव्रती
महात्मा वेदभिक्षुः (पं भारतेन्द्रनाथ)

(जन्म १४ मार्च १९२८ – निधन २१ दिसम्बर १९८३)

महात्मा वेदभिक्षुः जयंती विशेषांक

श्री नन्द प्रकाश थरेजा

With Best Compliments From :

सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय ॥

HUMAN CARE CHARITABLE TRUST

hcct

god created human beings to feel sympathy with those in distress otherwise there was no scarcity of angles to worship him.

ENGAGED IN WELFARE OF POOR AND NEEDY

HUMAN CARE CHARITABLE TRUST (Regd.)

D-94, Saket, New Delhi-110017
Tel. : 26524607, 40514515 E-mail : hctrust@yahoo.com

دردِ دل کے واسطے پیدا کیا انسان کو
ورنہ طاعت کے لیے کچھ کم نہ تھے کرّ و بیاں

दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया इंसान को
वरना ताअत के लिए कुछ कम न थे करुँ बयां

لب پہ آتی ہے دعا بن کے تمنا میری زندگی شمع کی صورت ہو خدایا میری
دور دنیا کا مرے دم سے اندھیرا ہو جائے ہر جگہ میرے چمکنے سے اجالا ہو جائے
ہو مرے دم سے یونہی میرے وطن کی زینت
جس طرح پھول سے ہوتی ہے چمن کی زینت
زندگی ہو مری پروانے کی صورت یارب! علم کی شمع سے ہو مجھ کو محبت یارب!
ہو مرا کام غریبوں کی حمایت کرنا دردمندوں سے ضعیفوں سے محبت کرنا
مرے اللہ! برائی سے بچانا مجھ کو نیک جو راہ ہو اس رہ پہ چلانا مجھ کو

लब पे आती है दुआ बन के तमन्ना मेरी।
जिन्दगी शमा की सूरत हो खुदाया मेरी।
दूर दुनिया का मेरे दम से अंधेरा हो जाए।
हर जगह मेरे चमकने से उजाला हो जाए।

हो मेरे दम से यूँ ही मेरे वतन की ज़ीनत
जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत
जिन्दगी हो मेरी परवाने की सूरत यारब
इल्म की शमा से हो मुझको मोहब्बत यारब

हो मेरा काम गरीबों की हिमायत करना
दर्द मंदों से, जईफों से मोहब्बत करना
मेरे अल्लाह बुराई से बचाना मुझको
नेक जो राह हो उस राह पे चलाना मुझको

॥ ओ३म् ॥

जनज्ञान

वेद
ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

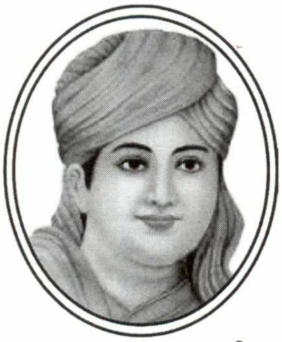

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली

हिन्दुत्व एवं विशुद्ध राष्ट्रवाद को समर्पित

संस्थापक : स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः
सम्पादक : पंडिता राकेश रानी
सह-सम्पादक : दिव्या आर्य
मोबाइल : 8459349349, 9810257254
Email : dayanandsansthan.jangyan@gmail.com

मुख्य कार्यालय :
वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
केशवनगर बस स्टैण्ड
(इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर
दिल्ली-110036

एक प्रति-18 रु०, वार्षिक शु०-200 रु०, पांच वर्ष-900 रु० और आजीवन-3100
विदेश में **वार्षिक शुल्क**-2100 रु.
(हवाई जहाज से) **वार्षिक शुल्क**-3100 रु.

मार्च 2015 वर्ष 50 अंक 11
आवरण पृष्ठ : **अरविन्द मोहन मित्तल**

सम्पादकीय

आग्नेय जीवन व्रती महात्मा वेदभिक्षुः

14 मार्च, वेद प्रचार अभियान को गतिमान करने के लिए अपना समग्र जीवन समर्पित कर अपनी नश्वर काया का परित्याग कर देनेवाले **आग्नेय जीवन व्रती महात्मा वेदभिक्षुः (पं. भारतेन्द्रनाथ) की जन्मतिथि है।** अपने 87वें जन्मदिवस की इस प्रेरक बेला में वह पुण्यआत्मा हमारे मध्य सशरीर तो उपस्थित नहीं है। **किन्तु महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, जनज्ञान मासिक और स्वामी दयानन्द संस्थान के माध्यम से प्रचारित प्रसारित हो रहा है... देव दयानन्द द्वारा उद्‍घोषित "लौटों वेदों की ओर" का युग परिवर्तनकारी आह्वान।**

महर्षि दयानन्द के आह्वान को जिन पुण्यात्माओं ने अपने कर्म कौशल से मूर्तिमान किया उनकी पंक्ति में महात्मा वेदभिक्षुः ने भी अच्छा स्थान पाया है। **14 मार्च 1928 उस आग्नेय जीवनव्रती की जन्मतिथि है। वे सशरीर तो हमारे मध्य विद्यमान नहीं है, किन्तु इस अवसर पर उनका पुण्य स्मरण कर उनकी स्मृतियों को मैं अपने शब्दों में संजो रही हूं।** असमंजस ग्रस्त हूं क्या लिखूं क्या ना लिखूं? क्या भूलूं क्या स्मरण करूं?

मुझे आज भी **याद है 8 जून, 1950 का दिन** जब पिताजी की कमीज की जेब से निकला एक पत्र प्राप्त हुआ था, जिसमें **उन्होंने लगभग बीस शर्तों के साथ विवाह की स्वीकृति दी थी** (तब वे **पं. भारतेन्द्रनाथ शुक्ल** के नाम से आर्यसमाज के क्षेत्र में जाने जाते थे।) उन शर्तों में ये शर्तें भी शामिल थीं-**एक सादी साड़ी में होगी लड़की की विदाई। नेग के नाम पर एक रुपया भी नहीं होगा। दहेज के नाम पर एक चम्मच तक भी नहीं। साधारण भोजन-दाल रोटी ही**

मुद्रक, स्वामी, प्रकाशक व सम्पादक : श्रीमती राकेश रानी वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, केशवनगर बस स्टैण्ड (इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर दिल्ली-110036 एवं डीलक्स आफसेट प्रिन्टर्स ३०८/४ शहजादा बाग दिल्ली से मुद्रित।

बनेगी। बारात में केवल पांच बराती ही आएंगे। कन्या पक्ष की ओर से कोई दिखावा नहीं करेगा। सम्बन्धियों का भी जमघट नहीं होगा और विवाह संस्कार सम्पन्न होने के पश्चात् यज्ञ शेष में लड्डू जैसा कोई मिष्ठान विवाह संस्कार में सम्मिलित लोगों में प्रसाद के रूप में वितरित किया जा सकता है।...... ऐसे क्रान्तिकारी विचारों के धनी की जीवनसंगिनी होना मैंने अपना परम सौभाग्य माना था!!!....

स्मरण हो आ रहा है वह क्षण भी जब मेरी मां ने जिज्ञासावश पिताजी से पूछ लिया था कि "लड़के के परिवार वाले कैसे हैं? लड़का काम क्या करता है? और पिताजी ने उत्तर दिया– "मेरी बात केवल लड़के से हुई है। वह ऐसा है कि यदि कहीं जंगल में भी बैठ जाएगा तो हमारी मुन्नी को (अर्थात् मुझे) कोई कष्ट नहीं हो पाएगा। पिताजी ने आगे व्यक्त किए थे कुछ इस तरह के भावोद्गार–उसके विचारों में देव दयानन्द की क्रान्ति भावना है, वही जो हमने मुन्नी को संस्कार में प्रदान की है।

आग्नेय जीवनव्रती दम्पत्तिः पं. भारतेन्द्रनाथ एवं पं. राकेशरानी

पिताजी का अनुमान कितना सत्य था, यह मैंने उनके साथ बिताए समय में भली-भान्ति अनुभूत किया। **पिताजी ने जैसे क्रान्तिधर्मियों की जीवन गाथाएं मुझे पढ़ाई थीं–सुनाई थीं, वैसे ही क्रान्ति धर्मी की सहधर्मिणी होने का गौरव प्राप्त कर वास्तव में ही मैं धन्य हो गई।**

कितनी ही घटनाएं- कितनी ही स्मृतियां मानस पटल पर उनकी जयन्ती के इस प्रेरक अवसर पर उभर रही हैं...... **कण्ठ रोग से ग्रस्त होने के कारण मैं लगभग ग्यारह वर्ष तक अन्न ग्रहण नहीं कर पाई। तब मात्र दूध ही रहा मेरे जीवन का आधार। परन्तु उन्होंने कभी रोग के समक्ष मुझे झुकने नहीं दिया। उपचार का क्रम रुकने नहीं दिया। वे स्वयं आयुर्वेदाचार्य भी तो थे! अतएव मेरे उपचार के दौरान औषधियों सम्बन्धी परीक्षण तथा अनुसन्धान भी करते रहे। कभी-कभी वह डांटते तो उसमें अपनत्व का भाव समाहित रहता था। अर्थाभाव झेला, परिस्थितियों से उन्होंने संघर्ष भी किया। परन्तु अपने स्वास्थ्य की चिन्ता त्याग वह मेरे लिए हर सम्भव उपचार और सुविधा की व्यवस्था हेतु सदैव सचेष्ट और सक्रिय रहे।** परिवार के सभी सदस्यों, परिचितों और सम्बन्धियों सभी को भी उनकी जीवन विधा का सहज भाव से अहसास हो जाता था, क्योंकि **स्वयं कष्ट झेलकर भी अन्य को सुख देना** यही था उस, महान कर्मयोगी के जीवन व्यवहार का मूलमन्त्र।

उनके सशरीर अपने मध्य नहीं रहने पर उनके सहस्रों प्रशंसकों, परिचितों ने उनके सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा-वह पढ़ने का भी मुझे अवसर मिला। सभी ने उनके उदार स्वभाव तथा सहज ही अपना बना लेने के गुण, समाज और राष्ट्र की समस्याओं के प्रति सजगता आदि की चर्चा की, वह सब उस अनुकरणीय व्यक्तित्व और संकल्पबद्ध पथ-प्रदर्शक के अपने अनुभवों पर आधारित है। **वस्तुतः जो भी व्यक्ति उनके सम्पर्क में आता था, अपनत्व का अनुभव करता था,** उसे पारिवारिक जन की सी अनुभूति होती थी। **वैदिक संस्कृति के व्यवहार पक्ष का वह प्रतिमान थे। सभी के प्रति पक्षपात रहित और समता तथा ममता यही उनकी व्यवहार विधा का वैशिष्ट्य था।**

अपने जीवन के हर क्षण को उन्होंने अपने **कर्मण्यवाधिकारस्ते** की उक्ति को चरितार्थ करने वाले जीवनवृत में साकार किया था। **मृत्यु की छाया और अपनी जीवन यात्रा के अन्तिम चरण में भी सबल-सुदृढ़ भारत और वैदिक मान्यताओं से समृद्ध हिन्दू राष्ट्र ही उनका एकमात्र स्वप्न था।**

संसार में अपना घर संसार बसाने के लिए हर कोई सक्रिय रहता है, संघर्ष करता है..... किन्तु **धुन के उस धनी ने तो घर फूंक तमाशा देखा था।** उन्होंने अपनी व्यक्तिगत सुख सुविधाओं पर ध्यान नहीं देते हुए कभी परिवार की सुख सुविधा पर दृष्टि नहीं लगाई थी। **जिस**

इस अंक में पढ़ें

(आवश्यक नहीं कि सम्पादक लेखकों की रचनाओं में अभिव्यक्त सभी विचारों से पूर्णत: सहमत हो)

सम्पादकीय–आग्नेय जीवनव्रती महात्मा वेदभिक्षुः ३
सामायिक-विचार: यात्रियों का रेल बजट
–*अश्विनी कुमार* ७
आपके पत्र ८
हृदय मंदिर के उद्गार –*दिव्या आर्य* ९
वेदोपदेश: प्रसुव यज्ञम्! –*श्री भारतेन्द्रनाथ* १०
महात्मा वेदभिक्षुः जी (पं भारतेन्द्रनाथ)–संक्षिप्त परिचय:
एक संघर्षशील जीवन –*सत्यपाल शास्त्री* १२
मेरी माता का जय गौरव २३
महात्मा वेदभिक्षुः चिन्तन-मनन की झांकी
महात्मा वेदभिक्षुः जी ने कहा था– २५
वसुधा में वैदिक-ज्ञान जगे २६
हमारा सौवाँ जन्म दिन –*श्री भारतेन्द्रनाथ* २७
अनुपमेय: राकेशरानी २८
हम संसार में क्यों आये हैं और हमें यहां से क्या... २९
दिव्य स्वप्नों की खोज ३१
मेरी माँ रो रही है ३३
मृत्यु निमन्त्रण ३४
तुम क्या सोचते हो? ३९
लक्ष्य क्या हो? ४०
क्या आपको ऋषि दयानन्द से प्यार है? ४२
ईमान बिक रहा है.... ४३
भूली बिसरी यादें ४४
काम का मूल्य नहीं, नारों पर न्योछावर..... ४६
फिर आया पन्द्रह अगस्त.... ४७
संघर्ष का मूल आधार ४८
हृदय-मन्दिर की शंखध्वनि ५०
दिल्ली भारत की राजधानी सही... ५१
पत्थर भी पिघलते हैं ५२
हिमगिरि भी अब डोल उठा है ५३
ताजमहल की झोपड़ी ५६
ईश्वर से मिलना है? ५७
प्रेम से जीता जा सकता है महानगर ५९
धर्म और क्रान्ति ६२
दीप जलाओ और ऋषि दयानन्द को.... ६३
यज्ञानि आहुति मांगती है ६५
तांगेवाला कैसे बना मसालों... –*म. धर्मपाल गुलाटी* ४४

जाति के लिए, जिस समाज हेतु उन्होंने अपने जीवन का हर क्षण और रक्त का हर कण समर्पित किया, उसने उनकी नहीं सुनी। सम्भवत: वह वेद का 'जीवेम शरद: शतम्' मन्त्र भी अपने जीवन में सार्थक कर जाते, यदि उन्हें समाज में अपने कुछ सहपंथी और अपने समान ध्येय के धुनी सहयोगी मिल जाते।

मेरा यह अडिग विश्वास है कि एक प्रकार से **उन्होंने स्वेच्छया अपनी काया राष्ट्रदेव को समर्पित की थी।** अपनी जीवनयात्रा के समापन से कुछ दिन पूर्व ही वह कुछ ऐसा अनुभव करने लगे थे कि उनकी जर्जर काया इस जर्जरी मूल राष्ट्र के समक्ष विद्यमान चुनौतियों को सम्भालने में समर्थ नहीं रह पा रही। वैदिक दर्शन और हिन्दुत्व के प्रति अपनी अमिट आस्था से आप्लावित उनका मन, उनका हृदय इस मान्यता से, इस धारणा से परिपूरित था कि.....

आसेतु हिमाचल यह पुण्य भूमि देव दयानन्द, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, देवतास्वरूप भाई परमानन्द, स्वातान्त्र्य वीर सावरकर और लाला लाजपतराय के उद्घोषों पर ध्यान देगी और अपने गत गौरव को प्राप्त कर ऐसे महान राष्ट्र का रूप ग्रहण करेगी जो आर्थिक समृद्धि, आध्यात्मिक गरिमा और प्रचण्ड सैन्य बल के आधार पर महान विश्व शक्ति के रूप में जगद् मान्य हो। जो मानवता-विरोधी आसुरी, आतंकवादी शक्तियों को अपनी प्रबल हुंकार से प्रकम्पित कर उन्हें इस सत्य और तथ्य से अवगत करा सके कि मानवमात्र ही उस परमपिता परमात्मा की सन्तान है, "सर्वे भवन्तु सुखिन:" का लक्ष्य और "सर्वे सन्तु निरामया:" की कामना को साकार करना ही मानव जीवन की सार्थकता है।

महात्मा वेदभिक्षुः सदैव आर्थिक साधन विहीन तो रहे, किन्तु वे साधनामय जीवन के धनी एक तपोधन भी थे। सतत सजगता, सक्रियता, ध्येयपूर्ति की लगन ही उनकी पूंजी रही। **मुझे भी वे यही भावनिधि और राष्ट्र जागरण यज्ञ को सतत गतिमान रखने की धरोहर सौंप गए हैं।** उनके द्वारा प्रदर्शित अग्निपथ की, अपनी यात्रा में मैनें **अभाव-अभियोगों की तपन** भी **स्वामी दयानन्द संस्थान** और **'जनज्ञान'** मासिक के संचालन क्रम में झेले हैं।

वह महान प्रेरक, जीवन का धनी, वैदिक आदर्शों के प्रति मनसा, वाचा कर्मणा समर्पित आदर्श पुरुष ही मेरा प्रेरणा के स्रोत हैं, जो जीवन में अभावों में रुका नहीं, चुनौतियों के समक्ष झुका नहीं।.... वह महात्मा मेरी सतत् प्रेरणा हैं और आप सभी बन्धु मेरा सम्बल हैं जो उस महान् विभूति की जयन्ती के अवसर पर मात्र श्रद्धा समर्पण की रस्म ही नहीं निभाएंगे। अपितु उनके जन्मदिवस पर यह संकल्प भी ग्रहण करेंगे कि महात्मा वेदभिक्षुः द्वारा आरम्भ किया गया वेद प्रचार अभियान और राष्ट्र को बलिष्ठ एवं समृद्ध तथा संगठित रूप प्रदान करने हेतु प्रारम्भ किए गए महान यज्ञ की अग्नि सतत प्रज्वलित रहेगी। आतंकवाद, क्षेत्रवाद और मजहबी उन्माद का क्षरण ही हम सबका प्रण होगा।

आप सभी से मेरा अनुरोध है कि-उनके सपनों को साकार करने हेतु, **मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगेश्वर श्रीकृष्ण के प्रति श्रद्धानत, देव दयानन्द के प्रति अनुरक्त शिवा, प्रताप, गुरु गोविन्दसिंह के वंशज आप सत्यधर्म और संस्कृति की परिचायक पावन ओ३म् पताका को विश्व में सगौरव फहराने के लिए अपने सहयोग का सशक्त हाथ आगे बढ़ाएंगे।**

गतिशील हिन्दुत्व की चिन्तन धारा को सतत प्रवाहित रखने हेतु सम्पूर्ण शक्ति सहित जुट जाएंगे। देशद्रोही, राष्ट्र विरोधी और आसुरी शक्तियों को भस्मसात करने के महात्मा वेदभिक्षुः के स्वप्न को साकार करने के लिए आप मनसा, वाचा, कर्मणा "स्वामी दयानन्द संस्थान" व "जनज्ञान मासिक" को अपने सहयोग का सम्बल प्रदान करेंगे।....

उन युग नायकों का भी करें स्मरण– आंग्ल दिग्दर्शिका में प्रस्तुत तिथिक्रम पर दृष्टिपात करते ही यह स्मरण हो आता है कि **इस मार्च मास का इस महान आर्यावर्त, भव्य भारत और पुण्य भूमि हिन्दुस्तान में अपने कर्मकौशल के बल पर अमरत्व प्राप्त कर गए चिर स्मरणीय मनीषियों से अटूट नाता है।**

छह मार्च की तिथि देव दयानन्द के आह्वान पर अपना जीवन वैदिक धर्म के प्रचारार्थ प्रसारार्थ लगा देने वाले अमर हुतात्मा धर्मवीर आर्यपथिक पं. लेखराम द्वारा अपना जीवन समर्पित करने का स्मरण दिलाएगी। **आर्य समाज के उज्ज्वल नक्षत्रों में अग्रगण्य थे धर्मवीर आर्य पथिक पं. लेखराम**, जिन्होंने अपनी प्रखर लेखनी से आर्य हिन्दू जाति को तन्द्रा से त्यागकर सजग और सक्रिय होने की प्रेरणा प्रदान की थी।

भारतीय स्वातन्त्र्य समर में क्रान्ति पथ के पथिक बने **क्रान्तिधर्मी युवा साधकों में अग्रगण्य भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव की त्रिमूर्ति का स्मरण भी मार्च माह का अन्तिम सप्ताह हर राष्ट्रभक्त को याद कराएगा।** वीराग्रणी भगतसिंह को राष्ट्रभक्ति और स्वातन्त्र्य साधना की राह पारिवारिक संस्कारों से मिली थी। **उनके केशधारी पिता सरदार किशनसिंह और चाचा सरदार अजीतसिंह स्वाधीनता संग्राम के सक्रिय सेनानी थे। सरदार किशनसिंह ने अपने पुत्र भगतसिंह का यज्ञोपवीत संस्कार भी सम्पन्न कराया था और देव दयानन्द के चिन्तन-दर्शन से भी भगतसिंह को अवगत कराया था।**

देव दयानन्द के निष्ठावान अनुयायी एवम् क्रान्ति यज्ञ के पुरोधा तथा बलिष्ठ हिन्दू राष्ट्र के पुनरोदय के प्रबल आकांक्षी देवता स्वरूप भाई परमानन्द के श्री चरणों में छात्र के रूप में बैठकर ही वीरवर भगतसिंह ने क्रान्ति के प्रेरक पथ के अनुसरण का असिधारा व्रत ग्रहण किया था। सुखदेव और राजगुरु भी इसी पथ के राही तथा भगतसिंह के सहयात्री थे।

इन तीनों ही नरपुंगवों को ब्रिटिश सत्ता ने लाहौर षड्यन्त्र काण्ड में सहभागी होने के आरोप में 23 मार्च, 1931 को लाहौर में मृत्युदण्ड दिया था।

आओ, इन पुण्यात्माओं का पुण्य स्मरण कर राष्ट्र को सबल, सुदृढ़ और समर्थ तथा अजेय बनाने के लिए मनसा, वाचा, कर्मणा सक्रिय रहने का व्रत ग्रहण करें।

–राकेशरानी ❖❖❖

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

परमात्मा की अमर वाणी

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य अपने तथा अपने मित्र परिवारों में पहुँचाएं। मूल्य 2800 रु.। बढ़िया कागज-मूल्य 3600 रु.

यात्रियों का रेल बजट

-अश्विनी कुमार

संसद में रेल मन्त्री श्री सुरेश प्रभु द्वारा पेश किया गया रेल बजट अर्से बाद राजनीतिक हानि-लाभ को दरकिनार करते हुए भारत के साधारण यात्री के हक में रखा गया सरकारी दस्तावेज है जो नई रेलगाड़ियां चलाने का लालच त्याग कर वर्तमान रेलवे तन्त्र को पुख्ता और मजबूत बनाते हुए उसमें गुणात्मक सुधार करने का आश्वासन देता है। **रेल मन्त्री ने यात्री किरायों में किसी भी प्रकार की बढ़ौतरी नहीं की है मगर मालभाड़े में तर्कसंगत वृद्धि की है और सामान्य व्यक्ति की खाद्यान्न सामग्री को अप्रभावित रखने की कोशिश की है।** फिर भी विभिन्न वस्तुओं के वर्गीकरण में बदलाव लाकर माल भाड़े को कुछ मदों में दस प्रतिशत तक इस प्रकार बढ़ाया गया है जिससे रेलवे में माल ढुलाई ज्यादा हो सके और इसकी आमदनी भी बढ़ सके।

पिछले लगभग 20 वर्षों से विभिन्न सांझा सरकारों के दौरान रेल मन्त्रालय का जिस तरह राजनीतिकरण हुआ था उसने एशिया के सबसे बड़े रेल तन्त्रों में से एक हमारे रेल तन्त्र को जर्जरता की स्थिति में पहुंचा दिया था। हर साल नई रेलों की घोषणाएं थोक भाव से रेल मन्त्री कर जाते थे जबकि पिछली घोषणाओं पर अमल होता ही नहीं था और यदि होता भी था तो नाम मात्र को।

रेलवे को पिछले 20 वर्षों के दौरान राजनीतिज्ञों ने दूध देने वाली गाय की तरह प्रयोग किया और इसके सहारे अपने राजनीतिक जनाधार को मजबूत करने की कोशिश की। **एक रेल मन्त्री लालू प्रसाद यादव तो ऐसे हुए कि उन्होंने रेल पटरियों की क्षमता का उपयोग दुगने से भी ज्यादा करके उन्हें जड़ से खोखला बना डाला और खुद लाभ में रेलवे चलाने का ढिंढोरा पीटते हुए 'मैनेजमेन्ट गुरु' का खिताब पाने के लिए जम कर हार पड़वाये।**

सबसे बुरा नतीजा रेलवे और इसके कर्मचारियों को भुगतना पड़ा। एक तरफ लाखों रेलवे कर्मचारियों के पदों को रिक्त रखा गया और दूसरी तरफ रेलवे को कमजोर बना दिया।.....

यह केवल लालू जी ने ही किया हो ऐसा नहीं है। हालांकि उन्होंने भी जम कर अपने राज्य बिहार में नई रेलगाड़ियां चलाईं और कई कारखाने भी लगवाने की घोषणा की मगर उनके बाद जब पं. बंगाल की नेता **सुश्री ममता बनर्जी रेल मन्त्री बनीं तो उन्होंने भारतीय रेलवे को 'बंगाल रेलवे' में बदलने की कोशिश की।**

यह हकीकत है कि पिछले बीस साल में रेलवे ऐसा मन्त्रालय बन गया था जो रेलवे को तो चला ही रहा मगर रेल मन्त्री की पार्टी भी चला रहा था।

हर साल वादे होते थे, नई घोषणाएं होती थीं मगर यात्रियों की दिक्कतें वैसी ही रहती थीं और वे बद से बदतर होती जा रही थीं मगर श्री प्रभु ने राजनीतिक लालच छोड़ कर अपने रेलवे बजट में वादा किया है कि यात्रियों की सुविधाओं में सुधार होगा और उन्हें रेल यात्रा में कम से कम कष्ट का अनुभव होगा। **चाहे, वह टिकट आरक्षण को लेकर हो** या **बुजुर्गों के लिए आसान यात्रा हो** अथवा **रेलवे स्टेशनों पर साफ-सफाई के साथ ही ट्रेनों के भीतर स्वच्छता हो।**

वर्तमान रेल पटरियों पर ही यदि हम रेलगाड़ियों की रफ्तार बढ़ा कर यात्रा समय कम करते हैं और मौजूदा पटरियों को मजबूत बनाते हुए पुरानी परियोजनाओं को लागू करने के लिए कारगर कदम उठाते हैं तो यह एक बड़ी सफलता होगी।

श्री प्रभु ने रेलवे की कार्य कुशलता में दक्षता लाने की गरज से ही कार्यशील अनुपात (आपरेटिंग रेशो) 93 प्रतिशत से घटाकर 88 प्रतिशत करने का लक्ष्य रखा है।

इसे पाने का उन्होंने तरीका भी बता दिया है तथा रेलवे स्टेशनों को आधुनिक बनाने के लिए कारगर योजना भी बनाई है।

साथ ही **कुछ गन्तव्यों के लिए रेलवे व बस यात्रा का समागम भी किया है जिससे यात्रियों को एक ही टिकट से अपने निश्चित गन्तव्य तक पहुंचने में धक्के न खाने पड़ें। वस्तुतः इस देश को आज ऐसे ही रेल बजट की जरूरत थी जो यात्रियों के लिए हो, जबकि अभी तक रेलवे बजट यात्रियों के लिए कम राजनीतिक दलों के लिए ज्यादा होते थे।** यह लीक से हट कर काम हुआ है, इसका स्वागत किया जाना चाहिए।

(पंजाब केसरी, 27 फरवरी, 2015 से साभार)

●●●

दिव्या के प्रति

दिव्या एक; अदिव्य शक्तियों के,
जमघट हैं चारों ओर,
अस्त्र-शस्त्र ले खड़े हुए हैं,
असुरों के अनेक सिरमौर।
धन बल,जन बल सभी क्षीण है,
अभिमन्यु सा एकल प्राण,
किन्तु धन्य तुम महिला मणिवर,
विघ्नों को करती म्रियमाण।
जन जन का ज्ञानाश्रम अनुपम,
यह जनज्ञान एक अभियान,
वेदभिक्षुः, पण्डिता महिम्ना द्वारा परिपोषित उद्यान।
इसकी निर्मल सुरभि चतुर्दिक,
फैल रही है दिशा-दिगन्त,
पांच दशक की आयु हो गई, अद्यावधि भी चाल दुरन्त।
मूल्य और आदर्शहीन यह काल,
कठिन है और असाध्य..........
दिव्या दिव्य सुमति से तत्पर,
फल इच्छा से हीन सुकर्म,
कीर्ति और आत्मिक प्रशान्ति से,
सफल कर रही जीवनधर्म।
हम जैसों की सतत शुभेच्छा,
अरु आशीष तुम्हारे साथ,
सतत ध्येय पर अडिग रहो,
जनज्ञान न होगा कभी अनाथ।
जो आत्मदा, प्राणदा प्रभु हैं, जो द्यौ-पृथवी रचते हैं,
उन्हें समर्पित करके दिव्या!!
कर्म मार्ग पर सतत प्रशस्त,
भय-चिन्ता विहीन रह,
अपना कर्म करती रहो सतत।

–डॉ. ज्ञानचन्द्र, सुशांत लोक, गुड़गांव

गोवंश का संरक्षण जरूरी

आदरणीय सम्पादक जी!

आज जिस प्रकार से गोवंश को समाप्त करने का षड्यन्त्र रचा जा रहा है वह देश के लिए खतरे की घण्टी है। कुछ पूर्व के वर्षों में देखें तो एक सोची-समझी रणनीति के तहत देसी गायों के नाम पर विदेशी गायों को यहां लाया गया और **देसी गायों का यह कहकर वध किया गया कि वह दूध कम देती हैं!**..लेकिन **सवाल है कि जिन गायों को दूध के नाम पर लाया गया क्या उनका दूध देशी गायों के मुकाबले उतना ही उत्तम है?** केन्द्र सरकार को गोवंश के संरक्षण और उसकी समृद्धि के लिए तत्काल कड़े कदम उठाने की जरूरत है।

–मुलखराज विरमानी गुलमोहर पार्क (नई दिल्ली)

शुभकामनाएं

बहन दिव्या जी,

नमस्ते!

आपसे व माता पण्डिता राकेशरानी जी से मिलकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। मैं जनज्ञान का विगत 2 वर्षों से नियमित पाठक हूं। आपका सरल व मधुर बातचीत का तरीका बहुत अच्छा लगा। आज की चकाचौंध भरी दुनियां में **'सादा जीवन उच्च विचार'** के दर्शन हुए। आप जिस प्रकार से सतत जनज्ञान के माध्यम से राष्ट्रभक्ति की मशाल जलाए हैं, उसे देखकर सत्य ही मन हर्षित होता है।

परन्तु.... यह देखकर दुःख हुआ कि **इतने अच्छे कार्य करने के लिए आपके पास आर्थिक कमी है। भगवान से प्रार्थना करता हूं कि आपके अद्भुत कार्यक्षेत्र में आने वाले सभी कठिनाईयों को दूर करें** तथा राष्ट्र को जगाने का आपका अभियान सफल करें। माता जी को नमस्ते कहिएगा।

आपका भाई

–नन्दू (रवीन्द्र कुमार), सोनीपत, हरियाणा

यह बहिष्कार क्यों?

महोदया,

कहने को तो विश्व पुस्तक मेले का आयोजन हुआ, लेकिन दुःख इस बात का है कि संस्कृत पुस्तक प्रकाशकों ने इसके बहिष्कार की घोषणा की। यह सब इसलिए **क्योंकि जिस स्थान पर पुस्तकों को प्रदर्शित करना था, उस जगह का किराया आयोजकों की ओर से अधिक रखा गया था,** जबकि संस्कृत प्रकाशकों का तर्क है कि आध्यात्मिक पुस्तकों की इतनी अधिक बिक्री नहीं होती है जिससे यह किराया आसानी के साथ दिया जा सके।

–राम शास्त्री, गली नं.-6, राधेपुरी (नई दिल्ली)

हृदय मन्दिर के उद्गार

–दिव्या आर्य

**गुरुवर दयानन्द के कर्मठ सैनिक, अनुपमेय विरले शिष्य आप भारतेन्द्रनाथ,
माता विद्यावती के लाड़ले पुत्र, पिता गया प्रसाद शुक्ल का गौरव आप भारतेन्द्रनाथ,
भारत माता के सपूत, मां-पंडिता राकेशरानी की प्रेरणा और जीवन साथी आप भारतेन्द्रनाथ
अप्रतिम वेद प्रचारक, वेदोद्धारक महात्मा वेदभिक्षुः! मेरे जनक-जन्मदाता भारतेन्द्रनाथ!
आपके हर स्वप्न की पूर्ति हेतु तत्पर रहूं दिन-रात, यहीं है हृदय-मन्दिर के उद्गार।**

**देखो वीर जवानों अपने खून पे ये इल्ज़ाम ना आए,
मां ना कहे कि तेरे बेटे वक्त पड़ा तो काम ना आए...**

मार्च माह का प्रारम्भ होते ही सम्पूर्ण माह की स्मृतियां मानों जीवन्त हो उठती हैं। **कहीं फाल्गुन की बयार है विविध रंगों की छटा समेटे, तो कहीं गौरव की अनुभूति है शहीद दिवस के स्मरण से–भगतसिंह जी, सुखदेख जी और राजगुरु जी** का वह आत्मबलिदान हृदय को झकझोरता है और **देशप्रेम के रंगों में सराबोर हो जाता है तन-मन!**

हृदय प्रण लेता है कि **हे प्रभु!** मेरा जीवन भी सार्थक बने और मातृभूमि के काम आए, **नश्वर देह के रोम-रोम से भारत मां का ऋण चुकाऊं, इतनी क्षमता और सामर्थ्य देना कि अपने पिता भारतेन्द्रनाथ (महात्मा वेदभिक्षुः) जी के पदचिन्हों पर अनवरत चलूं** और सतत गाऊं...

छोटी बिटिया दिव्या आर्य के साथ
पिता भारतेन्द्रनाथ

***सितारों से ऊंचा हो रुतबा आपके आदर्शों का,
बन सके जो प्रेरणा हर इक ज़िन्दगी का,
शुभकामनाओं का जन्मदिवस 14 मार्च पर,
ऐसा समुन्दर लहराए,
आपके स्वप्नों को मेरी हज़ारों उम्र लग जाए...***

पिताजी हमारे मध्य में, हमारे हृदय में सर्वदा जीवित हैं, और रहेंगे। उनकी आराध्यस्थली उनके वेद मन्दिर के निर्माण का स्वप्न, **जहां से सम्पूर्ण विश्व में वेद की ऋचाएं गुञ्जायमान होंगी,** ऐसा वो सर्वदा कहते थे..... अभी अधूरा है और जिसे पूर्ण करना मेरा जीवन लक्ष्य है....

वेद मन्दिर के निर्माण का कार्य अक्टूबर माह से आरम्भ हो चुका है परन्तु आर्थिक अभावों के कारण बहुत धीमी गति से चल रहा है। आपका सहयोग मिलेगा ऐसा विश्वास है क्योंकि समय बीत रहा है... बीतता जाएगा.

समय या पैसे में से, मैंने समय का वरण करते हुए नौकरी छोड़ दी क्योंकि हमारी प्रेरणा हैं **क्रान्तिकारी लाला हरदयाल** जी जैसे बलिदानी महान क्रान्तिकारी इसी माह 4 मार्च जिनकी पुण्यतिथि है। जिन्होंने प्रथम विश्व युद्ध से पूर्व ही अंग्रेजों को खदेड़ने के प्रयास विदेश में रहकर किए और **'क्रान्तिकारियों को डिग्री से क्या प्रयोजन'** ऐसा कह 80 पाउण्ड और 50 पाउण्ड की मिलने वाली दोनों छात्रवृत्तियां ठुकराकर कष्ट का जीवन चुना।

पिताजी के जन्मदिवस 14 मार्च पर यह महात्मा वेदभिक्षुः जयन्ती विशेषांक प्रस्तुत है जिसमें वर्षों पूर्व लिए गए उद्गार आज भी हृदय को झकझोर देते हैं... कितना सारगर्भित और दूरदृष्टि से पूर्ण था उनका आकलन! यह अंक हमारे भटके हुए विचारों को दिशा प्रदान करने में सहायक बने और जीवन लक्ष्य का मार्ग प्रशस्त करे। आइए, 14-15 मार्च महात्मा जी की जयन्ती और दयानन्द संस्थान का वार्षिकोत्सव मनाएं....

प्रसुव यज्ञम्!

–भारतेन्द्रनाथ

ओ३म् देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय दिव्यो गन्धर्वः केत-पूः केतं नः पुनातु। वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु॥ (यजु.–अ. ३०–१)

अर्थ–हे (**सवितः देवः**) उत्पादक ईश्वर! (**भगाय**) ऐश्वर्य के लिए (**यज्ञं**) सत्कर्म की (**प्रसुव**) प्रेरणा करो! (**दिव्यः**) दैवी गुणों से युक्त (**गं-धर्वः**) वाणी का पोषक और (**केत-पूः**) ज्ञान से पवित्र करने वाला (**नः**) हम सब के (**केत**) ज्ञान को (**पुनातु**) पवित्र करे। तथा (**वाचस्पति**) वाणी का स्वामी (**नः वाच**) हम सब की वाणी को (**स्वदतु-स्वादयतु**) स्वाद से युक्त अर्थात् मीठी बनाए।

भावार्थ–परमेश्वर सबको सत्कर्म करने की तथा सत्कर्म का संरक्षण करने की बुद्धि दे। अपने उत्तम ज्ञान से पवित्रता करने वाला ज्ञानी हम सब के ज्ञान की पवित्रता करे, तथा उत्तम वक्ता हम सब की वाणी को मधुर बनाए। जिससे हम सब की उन्नति हो सके।

उक्त आशय इस मन्त्र का है। उन्नति चाहने वाले मनुष्यों के अन्दर जिन-जिन गुणों के विकास की आवश्यकता है, उन गुणों का उल्लेख उक्त मन्त्र में है– **(१) सत्कर्म की प्रेरणा (२) सत्कर्म का संरक्षण (३) ज्ञान से पवित्रता और (४) वाणी का माधुर्य।** यह चार सद्‌गुण हैं जिनसे मानव मानवता के पथ पर अविराम गति से चलता रहता है।

आइए, अब हम इस मन्त्र पर गहराई से विचार करें–प्रथम शब्द हैं, **"देव सवितः"** "सविता देव" परमेश्वर की ही शक्ति का नाम है। देखिए–**"सविता वै देवानां प्रसविता"** (शत. ब्रा. १।१।२।१७)

सारे देवों (**सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, वायु, अग्नि, आदि**)का उत्पन्न कर्ता परमेश्वर है। सब देवों की उत्पत्ति करने वाली शक्ति **"सविता"** है। "सविता" का वर्णन तैत्तिरीय ब्राह्मणों में भी देखें।

सविता प्रसविता दीप्तो दीपयन दीप्यमानः॥
(तैति ब्रा. ३।१०।१।२)

"सविता" सबका उत्पादक है वह स्वयं तेजस्वी है, और सभी को प्रकाशित करता है। 'सविता' का मूल अर्थ 'परमेश्वर' है। **'सु'** धातु से **'सविता'** शब्द बनता है। **प्रसव, ऐश्वर्य, प्रेरणा** यह तीन अर्थ इस धातु के हैं। **उत्पन्न करना, प्रभुत्व करना और प्रेरणा करना** यह तीन भाव **'सविता'** शब्द में निहित हैं। सबको धर्म की प्रेरणा करने वाला परमेश्वर ही **'सविता'** है।

मानव अपने अंतस् की समस्त भावनाएं साथ ले जब उन्नति पथ की ओर अग्रसर होता है तो वह उस समय अपनी शक्तियों की वृद्धि के लिए प्रार्थना करता है- सर्व जगत् की प्रेरणा देने वाले प्रभु से। वह चाहता है उसे नित नई प्रेरणा मिलती रहे, निरन्तर मिलती रहे, इसी निरन्तर प्रेरणा प्राप्ति की महती भावना 'सविता' शब्द से ध्वनित है।

'प्रसुव-यज्ञम्' 'यज्ञ की प्रेरणा करो' यह इस मन्त्र की पहली प्रार्थना है। अत्यन्त उच्च कार्य का नाम यज्ञ है। **'यज्ञ'** का अर्थ ही **'श्रेष्ठतम कर्म'** की प्रेरणा करो! यह उपदेश उक्त वाक्य से मिलता है। प्रत्येक मानव हृदय में उच्च, पवित्र कर्म करने की प्रेरणा व भावना होनी चाहिए। **सर्वत्र उत्साह की प्रेरणा से सभी कर्म करते रहें, इसी में संसार चक्र की उन्नति का मूल छिपा है।** अतः मानव ने प्रेरणादायक शक्ति के भण्डार से जहां निरन्तर प्रेरणा प्राप्त करते रहने की प्रार्थना की, वहां यह भी चाहा कि उस प्रेरणा का लक्ष्य निरन्तर पवित्र व उच्चतम कर्म करना हो।

निरन्तर पीड़ामय संसार की काली घटाओं में भी वैदिक धर्मी, आस्तिक व्यक्ति हिम्मत नहीं हारता अपितु निरन्तर बढ़ते रहने की इच्छा लेकर वह सभी दुखों को, कष्टों को पी लेना चाहता है, और पर दुःखहरण ही उच्च कर्म है, यज्ञ धर्म है।

"प्रसुव यज्ञपतिं भगाय"

(**भगाय**) ऐश्वर्य के लिए यज्ञपति की प्रेरणा करो! **'भग'** शब्द का अर्थ है–**उन्नति, अभ्युदय, महानता** आदि। अर्थात् संसार में ऐसी जितनी भी विभूतियां है जिनको पाकर मानव महान बन जाता है। उसके हृदय में सन्तोष व आनन्द की सरिता प्रवाहित होने लगती है। उन सभी को **'भग'** कहा जा सकता है।

भक्त भगवान से उसको समीपतम समझ प्रार्थना करता है कि वह प्रेरणादायक प्रभु हमारे हृदय में यज्ञ की (शुभ कर्मों की) प्रेरणा निरन्तर अविराम गति से करता रहे और यज्ञ के स्वामी को (शुभ पथ पर चलने वाले को) सदैव सत्कर्मों का प्रवाह प्रवाहित करते रहने की प्रेरणा देता रहे।

नाना प्रकार के कष्टों और पीड़ाओं से घिरे हुए पृथ्वीतल पर शान्ति और आनन्द की सरिता प्रवाहित करने के लिए यह आवश्यक है कि हम मन वचन और कर्म से शुभ सोचें, शुभ करें, और शुभ प्रेरणाएं दूसरों को दें।... जब हम ऐसा चाहते हैं तो हम सभी के नियन्ता, सृष्टि के मूलाधार से यही कहते हैं कि-जितने भी ऐश्वर्य, प्रकाश और आनन्द प्राणीमात्र के कल्याण भोग के लिए उसने पृथ्वी पर प्रदान किए हैं वह हमें मिलते रहें और हम अविरल गति से प्रेम की मंदाकिनी बहाते हुए उसी की राह पर उसके ही होकर चलते रहें।

"दिव्यो गन्धर्वः केत-पूः केतं नः पुनातु।"
"गाँ वाचं धारयतीति गं-धर्वः।"

उत्तम वाणी का धारण करने वाला जो उत्तम वक्ता होता है उसका नाम **गंधर्वः** होता है। अतः इस पद का भावार्थ हुआ कि दिव्य गुण युक्त वक्ता अपने ज्ञान से हम सभी के ज्ञान को पवित्र करे।

हम चाहते हैं कि संसार यज्ञमय हो। सुख और शान्ति की राह पर चले हम यह भी इच्छा रखते हैं कि धरतीतल के सारे मानव शुभ प्रेरणा युक्त हों, कर्म करने वाले हों, वह एक राह पर चलें और वह राह प्रभु की राह हो। पर संसार के अन्य मतावलम्बी अपनी बात (विचार) मनवाने के लिए साम, दाम, दण्ड, भेद का आश्रय लेते हैं। पर वेद ज्ञान की अलौकिकता, अपूर्वता देखिए, कितना महान् आदर्श है!

शान्ति पथ का कितना मनोहर आलम्बन है कि वह दिव्य गुण वक्ता जो अपनी राह पर, धर्म मार्ग पर, यज्ञ प्रकाश की ओर हमें ले जाना चाहता है, अपने ज्ञान से हमें ज्ञान युत करे। लाठी से नहीं, धन लालच से भी नहीं, अपितु अपने अगाध सत्य ज्ञान से वह सभी के हृदय का अन्धकार हटा दे। ताकि हम भी अपने नेत्रों को खोल उसी सत्य पथ के राही बन सकें, जिस पर वह चल रहा है।

पर हो सकता है कि हमें (**ज्ञान**) वाणी से देने वाला भी कड़वी, तीखी, बातें कहकर हमारा उपहास उड़ा कर, हमें राह बताना चाहे!.. आज तो संसार में चारों ओर होता भी ऐसा ही है।

सभी अपनी बातों को मनवाने के लिए नाना आडम्बरों का आश्रय, झूठ, छल कपट की भाषा में लेते हैं और अनाचार पापाचार की आग फैलाते हैं, तो सच्चा उपाय भ्रान्त को राह बताने का कौन सा हो।

वेद कहता है–**"वाचस्पतिः वाचं नः स्वदतु।"** "वाणी का स्वामी हम सभी की वाणी को मीठी बनाए।" **हम जो कुछ भी कहना चाहें वह मीठा हो। हृदय में प्रेम भरा हो और वही प्रेम का मधुर अस्त्र लेकर हम विश्वविजय करने निकलें। यह है वेद का सन्देश।**

वाणी में मिठास न होने से संसार के सारे झगड़े फिसाद तथा द्वेष उत्पन्न होते हैं। अथर्ववेद १।३४ में भी वेद कहता है–**जिव्हया अग्रे मधु मे, जिव्हया मूले मधुलकम्।** मेरी जिह्वा में अग्र भाग में माधुर्य है। मेरी जिह्वा में मूल में मधुरता है।

अतः तात्पर्य यह है कि हम संसृति की सारी अनुभूतियों को प्रेरणामय यज्ञमय बनाने के लिए प्रेम का आश्रय लें। भिन्न-भिन्न पथ में पथिकों को एक राह पर लाना हमारा कर्तव्य है।

संसार को यज्ञमय, त्यागमय बनाना हमारी चाह है। पर हमारी यह चाह भी है कि इस सारे उद्योग के लिए हम प्रभु का ज्ञान साथ लेकर सत्य धर्म और प्रेम का सम्बल न छोड़ें। **प्रभु का प्रकाश हमारे पथ की ज्योति बने, प्रेरणा देता रहे।** संसार स्वर्गधाम बने और फिर चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश हो।

आओ, आर्यसमाज शताब्दी पर **हम वेद ध्वजा सर्वत्र फहराकर चहुँओर धर्म यज्ञ सम्पन्न करें।**

❖❖❖

जन-जन की भाषा है हिन्दी, भारत माता के मस्तक की बिन्दी

हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है। हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना हम सभी का दायित्व है। अतः आप अपने सभी लेखन कार्य, पत्र तथा निमन्त्रण पत्र, अपने हस्ताक्षर आदि देवनागरी लिपि में ही लिखने का निर्णय करें। –सम्पादक

महात्मा वेदभिक्षुः जी (पं. भारतेन्द्रनाथ)–संक्षिप्त परिचय
एक संघर्षशील जीवन–(चित्रमय झांकी)

–सत्यपाल शास्त्री

उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के टोपरी ग्राम में सन् 1901 में **चौधरी न्यामतसिंह के यहां विद्यावती (शारदा) ने जन्म लिया।** उनकी माता का नाम आनन्दी देवी था। **उत्तर प्रदेश के ही उन्नाव जिले में बीघापुर गांव में सन् 1887 में श्री मनराखनलाल शुक्ल के कुल दीपक के रूप में श्री गयाप्रसाद शुक्ल ने जन्म लिया।** वे राघव नाम से गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में आचार्य नरदेव शास्त्री से विद्याध्ययन करते रहे। (**उन दिनों आचार्य उदयवीर शास्त्री उनके सहपाठी थे**) लोकमान्य तिलक द्वारा लिखित ग्रन्थ **'गीता रहस्य'** सदा उनके सामान में रहता था। **विद्यावती शारदा की शिक्षा-दीक्षा शारदा निकेतन ज्वालापुर में हुई।**

बालक भारतेन्द्रनाथ, माता विद्यावती शारदा और बहन वसुन्धरा (गोदी में) के साथ

दोनों में अनेक समानतायें थी–दोनों आर्यसमाजी थे, दोनों राष्ट्रवादी थे और दोनों मे कुछ कर गुजरने की साध थी। सन् 1926 में दोनों विवाह सूत्र में बंधे। दोनों का पारस्परिक परिचय भी क्रान्तिकारी कार्यों के सिलसिले में ही हुआ था।

(शहीद भगतसिंह तीन महीने तक लालसिंह के छद्म नाम से विद्यावती जी शारदा के घर टोपरी में रहे थे।) पं. गयाप्रसाद शुक्ल और माता विद्यावती शारदा जी का जीवन दूरदर्शन पर भी "कहां गये वो लोग" धारावाहिक में नवम्बर 1990 में डी.डी.-1 पर निर्माता-निर्देशक श्री धीरज कुमार जी द्वारा प्रस्तुत किया गया था।

इन्हीं माता-पिता की सन्तान थे हमारे चरितनायक भारतेन्द्रनाथ।

उनका **जन्म 14 मार्च सन् 1928 को डफरिन अस्पताल कानपुर में हुआ।** जन्म के समय कांग्रेस के प्रसिद्ध नेता मौलाना हसरत मोहानी ने इनकी हथेली पर चांदी का एक रुपया रखते हुए कहा कि **"मैं अल्लाह से दुआ करता हूं कि आगे चलकर यह बालक बड़ा आदमी बने।"** (भारतेन्द्रनाथ जी की एक बहन हैं वसुन्धरा।) सन् 1932 में आचार्य मुक्तिराम जी (स्व. स्वामी आत्मानन्द जी महाराज) ने जेहलम में एक गुरुकुल स्थापित किया। **मुक्तिराम जी शुक्ल परिवार के गुरु थे।** आगे चलकर भारतेन्द्रनाथ जी का यज्ञोपवीत संस्कार भी बीघापुर में मुक्तिराम जी के हाथों हुआ। वे गुरुकुल पोठोहार, पंजाब (अब पाकिस्तान में) में बीघापुर पधारे थे। **माता विद्यावती जी चार वर्ष के शिशु भारतेन्द्रनाथ को साथ लेकर गुरुकुल के स्थापना समारोह में भाग लेने जेहलम गईं। लेकिन उम्र छोटी होने के कारण उन्हें वहां प्रविष्ट न कराया जा सका।** सन् 1934 में माताजी फिर गुरुकुल जेहलम के वार्षिकोत्सव पर गई, लेकिन तब भी भारतेन्द्रनाथ केवल 6 वर्ष के थे; इसलिए गुरुकुल में प्रविष्ट न किये गये। (**इन पंक्तियों का लेखक उसी वर्ष गुरुकुल में प्रविष्ट हुआ था।**) तब भारतेन्द्रनाथ दुबले-पतले थे। **माताजी उन्हें 'भारत' कहकर पुकारती थीं। स्व. आचार्य रामदेव** (जो सन् 1940 में जेहलम से आने पर सन्यास लेकर स्वामी सत्यानन्द बने और वेद मन्दिर, ढन मुहल्ला, पुरानी रेलवे रोड, जालन्धर शहर में रहे।) **तब गुरुकुल के मुख्य अधिष्ठाता थे।** बाद में वे आचार्य हो गये तथा **स्व. शिवकुमार जी शास्त्री भूतपूर्व संसद सदस्य, मुख्य अधिष्ठाता हुए।**

ऐसा लगता है कि माताजी के दिल में यह साध सदा बनी रही कि बालक को गुरुकुल में प्रविष्ट करवाना है। इस बीच भारतेन्द्रनाथ जी की शिक्षा-दीक्षा चलती रही। पिताजी का देहान्त तो सन् 1932 में ही हो गया था।

माताजी ने सन् 1935 में नाहन रियासत सिरमौर** (अब हिमाचल प्रदेश) **में शारदा निकेतन विद्यालय स्थापित किया। सन् 1936 में कन्या महाविद्यालय बड़ौदा में अध्यापन कार्य किया, सन् 1937 में उन्नाव (उ.प्र.) में सरकार ने उन्हें अवैतनिक मजिस्ट्रेट नियुक्त किया। उस समय भारत भर में वे पहली महिला मजिस्ट्रेट थीं। सन् 1940 में उन्होंने कनखल में मातृ शक्ति सदन की स्थापना की।

इस अवधि में भारतेन्द्रनाथ जी अपनी माताजी के साथ रहे। सन् 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। माताजी इस राष्ट्रव्यापी अभियान में जी-जान से जुट गईं। **एक दिन रात को अपना मिशन पूरा करके बम्बई से हरिद्वार लौटीं तो, भारतेन्द्रजी से बोली–"तू अभी तक जिन्दा है? या तो कुछ कर, नहीं तो मर।"** (गांधी जी का नारा भी तो यही था–करो या मरो।) **इस पर बालक भारतेन्द्र को इतना तैश आया कि वह रात के ग्यारह बजे बिस्तर से उठे और डाकघर फूंक आये। कुल मिलाकर उन्होंने शायद लगभग एक दर्जन से अधिक ही** थानों को आग की भेंट किया। **जब थानेदार ने पकड़ा तो उम्र कम होने पर उसके मुंह से निकला अभी तुम फूल हो, जब पेड़ बन जाओ, तब यह सब करना।"**

(उन दिनों यही सब होता था!!) भारतेन्द्र जी भी स्वतन्त्रता संग्राम में जुट गये। उन्हें पढ़ने-लिखने का शौक बचपन से ही था। उनका ट्रंक पत्र-पत्रिकाओं से भरा रहता था। **राष्ट्रीय कार्यों में भाग लेने पर वे पुलिस की नजरों से कैसे बच सकते थे??** पुलिस उनके पीछे पड़ गई। उन दिनों क्रांतिकारी गुप्त रूप से अपना कार्य जारी रख रहे थे–बड़े-बड़े कांग्रेसी नेता तो जेल में थे। **माताजी के लिए चिन्ता का विषय यह था कि अपने पुत्र को पुलिस की गिरफ्तारी से कैसे बचायें**? उन दिनों गिरफ्तारी तो सामान्य बात थी। अन्धाधुन्ध गिरफ्तारियाँ हो रही थीं। मैथिलीशरण गुप्त और किशोरी दास वाजपेयी सदृश राष्ट्रवादी लेखक भी जेल में सींखचों में बन्द थे।

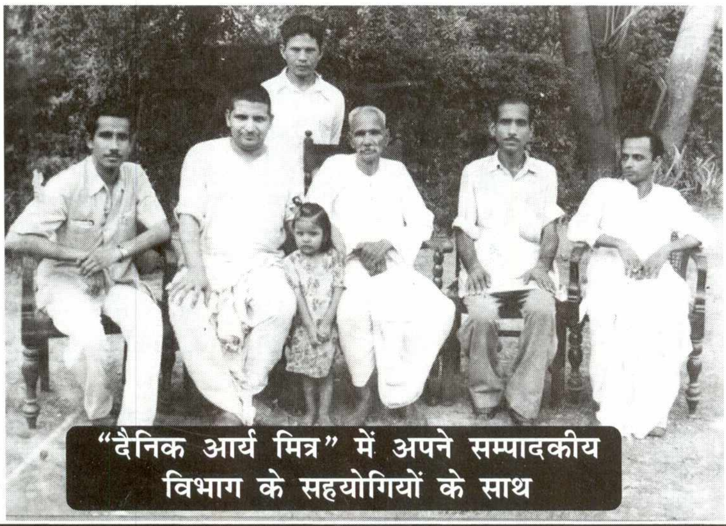
"दैनिक आर्य मित्र" में अपने सम्पादकीय विभाग के सहयोगियों के साथ

माता जी को चिन्ता थी कि क्रान्ति का मिशन किस प्रकार अबाध गति से आगे बढ़े? इसी खातिर वे भारतेन्द्र जी को गिरफ्तारी से बचाना चाहती थीं। फलस्वरूप **उन्होंने भारतेन्द्र जी को अपने मुंह बोले भाई स्वामी योगेश्वरानन्द जी के ऋषिकेश स्थित आश्रम अब "योग निकेतन" में भेज दिया।** (उस समय तक स्वामी जी ने संन्यास न लिया था और ब्रह्मचारी व्यासदेव जी के नाम जाने जाते थे। हमारे पाठक जानते होंगे कि **महात्मा खुशहालचन्द जी (बाद में महात्मा आनन्द स्वामी जी) ने भी इन्हीं स्वामी जी से योग साधना की शिक्षा ली थी।**)

भारतेन्द्र जी के शब्दों में 'शुरू-शुरू में पालथी मारकर घंटों बैठना और ओ३म् का जप करना बहुत उबाने वाला लगा। जी करता था कि उठकर भाग जाऊं लेकिन धीरे-धीरे मन टिकने लगा। हम दोनों के इस सान्निध्य में स्वामी जी भोजन बनाते थे और मैं बर्तन मांजता था।**" जब आश्रम में रहकर भी भारतेन्द्र जी पुलिस की नजरों से न बच पाये, तब उन्हें वहां से कहीं अन्यत्र भेजने का विचार माताजी के मन आया।** ऐसे समय में माताजी को अपने जेहलमवर्ती प्रिय गुरुकुल की याद आई। **प्रायः नेता अपनी सन्तानों की ओर ध्यान नहीं देते, लेकिन माताजी इस ओर जागरूक थीं।** वे भारतेन्द्र जी को गुरुकुल में प्रविष्ट कराने से पूर्व अनेक बार गुरुकुल का निरीक्षण करने आईं।

(इन पंक्तियों के लेखक को अभी तक याद है कि) छात्रों की योग्यता जांचने के लिए माताजी ने मुख्याध्यापक से कहकर हमारी निबन्ध की कापियां देखी थीं। तब वे पूर्णतः सन्तुष्ट हो गईं कि गुरुकुल का शिक्षा स्तर बहुत अच्छा है।; तब वे भारतेन्द्र जी को लेकर गुरुकुल आईं और उन्हें वहीं प्रविष्ट करा दिया। माताजी ने तब जो शब्द इन पंक्तियों में लेखक से कह रहे थे, वे मैं स्मृति के आधार पर उद्धृत कर

रहा हूं--उन्होंने कहा था कि **"मेरे भारत" को अनेक महापुरुषों की जीवनियॉं जबानी याद हैं।"**

गुरुकुल में ही आकर भारतेन्द्र जी ने पंजाब विश्वविद्यालय की हिन्दी भूषण परीक्षा उत्तीर्ण की। यहां रहकर **उन्होंने 18 वर्ष की आयु में "विहान" नाम से हिन्दी की हस्तलिखित पाक्षिक पत्रिका चलाई।** उन्होंने सन् 1943 में हिन्दी भूषण, सन् 1944 में मैट्रिकुलेशन और हिन्दी प्रभाकर व सन् 1945 में इण्टरमीडिएट परीक्षा उत्तीर्ण की। **वे वहां की छात्रोत्साहिनी सभा की बैठकों में बहुत उत्साह के साथ भाग लिया करते थे।** बालकृष्ण शर्मा नवीन, सोहन लाल द्विवेदी और भगवत्प्रसाद शुक्ल 'सनातन' सदृश अनेक कवियों की कविताएं वे झूमझूमकर गाते और सुनाते थे।

स्वामी ओमानन्द, तत्कालीन रक्षा मन्त्री बाबू जगजीवनराम, डॉ. प्रशांत वेदालंकार एवं पं. राकेशरानी के साथ

स्वामी सत्यानन्द जी के सान्निध्य में

स्वामी सत्यानन्द जी सरस्वती श्री गयाप्रसाद शुक्ल के अन्तरंग मित्रों में से थे। **स्वामी जी ने अपने शिष्य भारतेन्द्रनाथ जी के निधन पर उनकी धर्मपत्नी पंडिता राकेशरानी जी को लिखे अपने पत्र में लिखा है कि "गुरुकुल के निवासकाल में विद्यावती जी शारदा कभी-कभी अपने पुत्र 'भारत' को देखने आ जाया करती थीं। भारतेन्द्र जी वाग्वर्धिनी सभा की बैठकों में भाषण देते थे और कविताएं सुनाते थे।** (वाग्वर्धिनी सभा के नाम बदलते रहे—कभी छात्रोत्साहिनी और कभी विद्योल्लासिनी।"

"भारतेन्द्र जी ने गुरुकुल में रहकर हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी" तीनों भाषाओं का अध्ययन किया। (ऊपर जिन गुरुजनों की चर्चा आ चुकी है, उनके अतिरिक्त श्री राजपाल 'जयेश शास्त्री भी वहां अध्यापक थे। जिनका निवास स्थान 7/20 रमेशनगर, नई दिल्ली-15 है।)

विद्यावती जी शारदा जब भी गुरुकुल में आतीं, अपने 'भारत' को देश और समाज की सेवा करने की प्रेरणा देतीं। गुरुकुल की शिक्षा पूर्ण होने पर दीक्षान्त समारोह के अवसर पर उन्होंने नवस्नातकों को आशीर्वाद भी दिया था और **'भारत' को सम्बोधित करते हुए कहा था कि "बेटा, जीवन भर अर्थोपार्जन की दृष्टि से कोई काम न करना। अपना सारा जीवन देश और जाति की सेवा में लगाना।"**

"मैं भी भारतेन्द्र जी को सदा महान् बनने की प्रेरणा देता था और उनकी सुख-सुविधा का विशेष ध्यान रखता था। **सन् 1946 की बात है। टोपरी से भारतेन्द्र जी की माताजी का पत्र आया कि "मैं सख्त बीमार हूं। आप तुरन्त आकर मिलें।"** (उन दिनों पोस्ट आफिस में हड़ताल चल रही थी अत: पत्र देरी से मिले।) दो-तीन पत्र और आये। और भारतेन्द्र जी अवकाश लेकर टोपरी चले गये। **वहां पहुंचकर भारतेन्द्र जी ने पत्र द्वारा सूचित किया कि "माताजी का देहान्त हो गया है।"** इस पर मैं और आचार्य रामदेव जी टोपरी गये और तीन-चार दिन वहां रहे। अब भारतेन्द्र जी की बहन वसुन्धरा भी वहीं थी। हम सब माताजी की अस्थियां लेकन हरिद्वार गये और कनखल के समीप गंगा में अस्थियां विसर्जित कीं। **वहां से हम लोग भारतेन्द्र जी के पैतृक गांव बीघापुर गये।** वहां सम्पत्ति इत्यादि का जायजा लेकर भारतेन्द्र जी तो टोपरी लौट गये और मैं तथा आचार्य जी गुरुकुल जेहलम में वापस आ गये।"

(गुरुकुल में अध्यापकों में प्रसिद्ध आर्य समाजी कवि पंडित ओंकार मिश्र "प्रणव" भी थे।) भारतेन्द्र जी ने उन्हीं दिनों **"आर्य" "आर्यमित्र"** इत्यादि **पत्र पत्रिकाओं में लिखना शुरू कर दिया था।** आज भी उन पत्रिकाओं की **फाइलों में भारतेन्द्रनाथ शुक्ल "विप्लव"** नाम से उनकी रचनाएं देखी जा सकती हैं।

सन् 1944 में भारतेन्द्र जी ने अयोध्या विद्यापीठ की साहित्यालंकार परीक्षा भी उत्तीर्ण की। अनेक वर्षों तक वे यह उपाधि अपने नाम के साथ लगाते रहे। उन दिनों उनकी माताजी "आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब" की उपदेशिका थीं।

गुरुकुल से विदाई

सन् 1945 में वे गुरुकुल से स्नातक बनकर निकले। दीक्षान्त समारोह में उन्हें विद्याभूषण की

उपाधि दी गई। (दीक्षान्त अभिभाषण पंडित यशपाल सिद्धान्तालंकार ने दिया था जो उन दिनों "आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब" के वेद प्रचार विभाग में अधिष्ठाता थे।)

गुरुकुल से विदाई लेकर वे उत्तरप्रदेश में आर्यवीर संघ की शाखाओं के संगठन में जुट गये। कुछ ही समय बाद बरेली के प्रसिद्ध आर्यसमाजी नेता डॉक्टर श्यामस्वरूप सत्यव्रत ने उन्हें अपनी मासिक पत्रिका "संघ" का सम्पादक नियुक्त किया। उस समय उनकी उम्र केवल अठारह वर्ष थी।

8 अगस्त सन् 1946 को उनकी माता जी का देहान्त हो गया और वे संघर्ष से जूझने के लिए अकेले ही रह गये। तीन जून 1947 को भारत विभाजन की घोषणा हुई। दूरदर्शी नेताओं ने तभी समझ लिया था कि हिन्दू पाकिस्तान में न रह पाएंगे। **जेहलम का गुरुकुल पहले फगवाड़ा (पंजाब) और उसके बाद बिरालसी (जिला मुजफ्फरनगर) स्थानान्तरित किया गया। भारतेन्द्र जी ने वहां मुख्याध्यापक के रूप में काम किया।** वहां के स्थानीय लोगों में गुरुकुल पर कब्जे को लेकर चल रहे वैमनस्य ने इतना उग्र रूप धारण किया कि दोनों गुट हथियार लेकर मैदान में निकल आये।

ऐसी स्थिति में भारतेन्द्र जी को गुरुकुल छोड़ना पड़ा। वे अपने ग्राम बीघापुर (उन्नाव) चले गए। **23 जुलाई सन् 1950 में उनका विवाह गाजियाबाद के पंडित रामचरण शर्मा की सुपुत्री पंडिता राकेश रानी से हुआ।** यहां यह लिख देना भी अप्रासंगिक न होगा कि **जब चौधरी चरण सिंह आर्य समाज गाजियाबाद के मंत्री थे। उन्हीं दिनों सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के संचालन में सार्वदेशिक प्रकाश लिमिटेड द्वारा "पुण्यभूमि" नाम से एक साप्ताहिक पत्र निकाला गया, जिसके सम्पादक श्री ब्रह्मदत्त स्नातक थे। इस पत्र की फाइलें गवाह हैं कि पति-पत्नी (भारतेन्द्रनाथ जी शुक्ल और राकेशरानी जी शुक्ल) दोनों इस पत्र के लिए कविताएं और लेख लिखा करते थे। अनेक अन्य हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में भी इस युगल की रचनाएं प्रायः प्रकाशित होती थीं।**

तभी आजीविका का प्रश्न सामने आया, तो भारतेन्द्र जी ने रेल विभाग में 250 रुपये पर हिन्दी अधिकारी का पद न ग्रहण कर "आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब" में 60 रुपये मासिक पर उपदेशक बन वेदप्रचार के कार्य को अपनाया।

(बचपन में भारतेन्द्र जी का झुकाव धर्म की अपेक्षा राजनीति की ओर अधिक था। आपके विचार क्रान्तिकारी और समाजवादी थे।)**सभा में उपदेशक के रूप में कार्य करते हुए आप "आर्य" के सह-सम्पादक भी थे।** उन दिनों "आर्य" अम्बाला छावनी से प्रकाशित होता था और उसके सम्पादक सभा मन्त्री पंडित भीमसेन विद्यालंकार थे तथा सह-सम्पादक भारतेन्द्र जी। **अम्बाला में आपने एक विराट् आर्य सम्मेलन का भी आयोजन किया।** आपने प्रचारशैली को नया रूप दिया। वे **1953 के अन्त तक "आर्य" में रहे। उसके बाद आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मुखपत्र साप्ताहिक "आर्यमित्र" के सम्पादक होकर लखनऊ चले गये।**

"आर्यमित्र" में उन दिनों आर्य समाज के प्रतिष्ठित विद्वानों की रचनाएं पढ़ने को मिलती थीं। **आचार्य नरदेव शास्त्री, पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय सदृश अनेक विद्वान् भारतेन्द्र जी की योग्यता से प्रभावित थे।**

तत्कालीन प्रधानमन्त्री मोरारजी देसाई एवं बालेश्वर अग्रवाल के साथ-क्रान्तिकारी दम्पती

भारतेन्द्र जी ने बिना विशाल धनराशि के सिर्फ आत्मविश्वास और अदम्य साहस का परिचय देते हुए "साप्ताहिक आर्यमित्र" के साथ ही ग्यारह मास तक "आर्यमित्र दैनिक" रूप में भी निकाला जो सभा अधिकारियों के आपसी मतभेदों के कारण नहीं चल सका। उनकी पत्नी राकेशरानी ने उनके उस समय की मनः स्थिति के शब्द बताये- "यदि मेरा कोई बच्चा भी मर तो इतना दुःख नहीं होता जितना "आर्यमित्र" के बन्द होने पर है।"

वहां से आप गाजियाबाद आ गये

और आपने **"उत्तराखण्ड आयुर्वैदिक रसायनशाला"** नाम से एक फार्मेसी खोलकर आयुर्वैदिक औषधियों का निर्माण प्रारम्भ किया। **आपकी फार्मेसी की दन्तकल्पमंजन, यौवनदा, ज्योति सुरमा, बाल ज्योति आदि औषधियां बहुत लोकप्रिय हुईं।** इसके साथ ही **आपने "अन्तरराष्ट्रीय ईसाई प्रचार निरोध प्रकाशन" नाम से प्रकाशनगृह भी चलाया।** सन् 1960 में आप श्री रामनाथ भल्ला के अनुरोध पर **"इंस्पैक्टर ऑफ स्कूल्स" होकर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में आये।**

मई सन् 1961 में दिल्ली में नौवाँ आर्य महासम्मेलन हुआ। उसकी सफलता के लिए आपने रातदिन एक कर दिया। उन दिनों आप की धर्मपत्नी पंडिता राकेशरानी अस्पताल में थीं और उनका ऑप्रेशन होने वाला, लेकिन आप उनका समाचार जानने के लिए भी कुछ ही क्षण निकाल पाते थे।

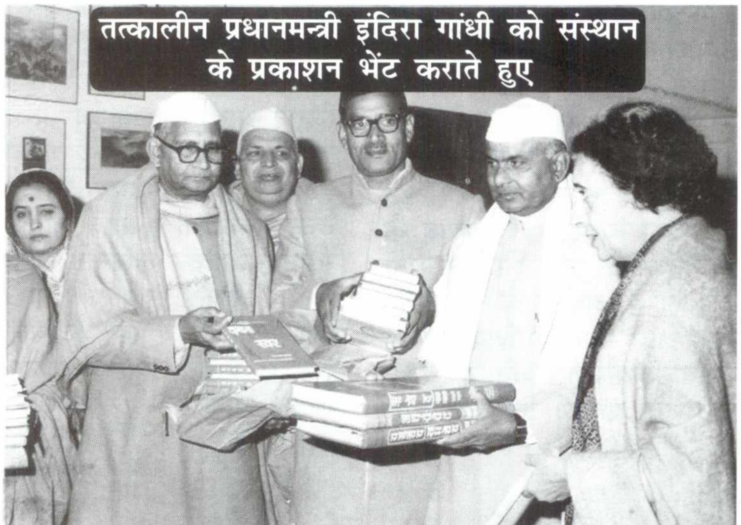

तत्कालीन प्रधानमन्त्री इंदिरा गांधी को संस्थान के प्रकाशन भेंट कराते हुए

उन दिनों **आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख पत्र "आर्योदय" दिल्ली से निकला करता था। आप उसके सम्पादक नियुक्त हुए।** (सभा मन्त्री के नाते पधान सम्पादक श्री रघुवीरसिंह शास्त्री थे।) **आपने पत्र में जान डाल दी।** कई विशेषांक निकाले।

सन् 1968 में सभा अधिकारियों की गुटबन्दी ने उग्ररूप धारण किया, तो आप उससे अलग हो गये और आपने **श्री भगवान् देव शर्मा (भूतपूर्व संसद सदस्य) को साथ लेकर जन-ज्ञान नाम से मासिक पत्रिका निकालने की योजना बना कार्य प्रारम्भ किया।)** (इस पत्रिका का **शुभारम्भ भारत के प्रसिद्ध सन्त रविशंकर जी महाराज के हाथों से हुआ था।**)

पत्रिका के प्रकाशन से पूर्व आप अपनी धर्मपत्नी पंडिता राकेशरानी के साथ आशीर्वाद लेने महात्मा आनन्दस्वामी जी के पास गये, जो उन दिनों चमेलियन रोड पर ठहरे हुए थे। भारतेन्द्र जी ने स्वामी जी से निवेदन किया कि "अठारह वर्ष तक आर्यसमाजी संस्थाओं में काम करके मैंने देखा कि जो काम नहीं करना चाहते, वे संस्थाओं और समाजों पर कब्जा किये बैठे हैं और जो काम करना चाहते हैं, उन्हें काम नहीं करने दिया जाता। इसलिए हम संस्थाओं की गुटबन्दी से अलग रहकर स्वतन्त्र रूप से काम करना चाहते हैं और इसके लिए आपका आशीर्वाद लेने आये हैं।" इस पर स्वामी जी ने कहा कि "आशीर्वाद आपके साथ है—कोरा आशीर्वाद ही नहीं, इस काम के लिए में आपको 101 रुपये भेंट करता हूं।" "इस छोटी-सी राशि से आपने काम करना प्रारम्भ किया। बाद में जब भी स्वामी जी दिल्ली आते तो भारतेन्द्र जी को सहयोग राशि हित आशीर्वाद देते थे। वे कहते थे "तू तो मुझ से भी आगे बढ़कर संन्यासी है जो धर्मप्रचार करने की धुन में धन अपने पास रूकने ही नहीं देता है!!!....."

उन दिनों छुआछूत को लेकर विवाद छिड़ा हुआ था। स्वामी निरंजनदेव तीर्थ (शंकराचार्य) अस्पृश्यता को सही ठहरा रहे थे। और **बाबू जगजीवन राम ने अस्पृश्यता के विरुद्ध जिहाद छेड़ रखा था। भारतेन्द्र जी ने श्री शिवकुमार शास्त्री (तब संसद सदस्य) से इस विषय पर एक पुस्तिका लिखवा कर संसद सदस्यों में बंटवाई। जन-ज्ञान प्रकाशन की ओर से शुरू-शुरू में जो पुस्तकें प्रकाशित हुईं, यह उन्हीं में से थी।** उसके बाद तो धड़ाधड़ पुस्तकें प्रकाशित होने लगीं।

आपने Ligh of Truth नाम से अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशित कर उसे केवल पांच रुपये में जनता तक पहुंचाया। उसके बाद Life and Teachings of Swami Dayanand प्रकाशित किया। इस बृहत्काय ग्रन्थ का मूल्य केवल दस रुपये रखा गया और शुरू में पाँच रुपये में ही जनता को दिया गया।

आपको दिन-रात इसी कार्य की चिन्ता रहती। जब तक कार्य पूरा न हो जाता, आप चैन न लेते! आप अपने कार्य का दायरा बढ़ाते जा रहे थे। **जन-ज्ञान प्रकाशन की ओर से स्वामी दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरित्र (हिन्दी) अत्यल्प मूल्य पर दिया गया।**

आप उत्साह के पुंज थे। विषम से विषम परिस्थितियों में हिम्मत न हारते थे। स्वर्गीय स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती (**पंडित बुद्धदेव विद्यालंकर**) की यह उक्ति आप अक्सर दोहराया करते थे कि ***"बुद्धिमान् व्यक्ति वह है, जो प्रतिकूल से प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपना लक्ष्य पूर्ण कर ले और मूर्ख व्यक्ति वह है, जो अनुकूल से अनुकूल परिस्थितियों में भी अपना लक्ष्य पूर्ण न कर पाये।"***

चारों वेदों के हिन्दी भाष्य का प्रकाशन

सन् 1971 तक काम बहुत फैल चुका था और उसमें समन्वय और सामंजस्य स्थापित करने की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी। लम्बे सोच-विचार के बाद आपने **सन् 1972 में दीपावली के दिन दयानन्द संस्थान नाम से एक संस्था स्थापित करने का निश्चय किया। इसके साथ ही यह निश्चय हुआ कि चारों वेदों का भाष्य प्रकाशित किया जाये।** हमारे देश में योजनाएं बनाने वालों की कमी नहीं, लेकिन उन योजनाओं को क्रियान्वित करने वालों की संख्या बहुत कम है। ***भारतेन्द्र जी उन व्यक्तियों में से न थे, जो किसी योजना को पूरा किये बिना छोड़ दें।*** तुरन्त ही आर्य समाज के प्रमुख व्यक्तियों को निमन्त्रित किया-**स्वामी ओमानन्द जी, प्रो. रामसिंह, जगदीश्वरानन्द जी, आचार्य वैद्यनाथ, सार्वदेशिक सभा के मन्त्री ओमप्रकाश तथा श्री रामगोपाल शालवाले आदि प्रमुख थे।**

तत्कालीन उपराष्ट्रपति बी.डी. जत्ती के साथ

आपने घोषणा कर दी कि केवल पैंतीस रुपये में चारों वेदों का भाष्य दिया जायेगा। जब आपने अपनी इस घोषणा की चर्चा स्वामी योगेश्वरानन्द जी से की, तो उन्होंने कहा कि "मैंने तुम जैसा मूर्ख व्यक्ति नहीं देखा। इतना बड़ा ग्रन्थ तुम पैंतीस रुपये में कैसे दोगे?" भारतेन्द्र जी का उत्तर था कि "मैंने परमात्मा के विश्वास पर यह कार्य प्रारम्भ किया है; वही इसे पूर्ण करेगा।"

इस पर स्वामी जी ने उन्हें आशीर्वाद के साथ 1001 रुपये भेंट किये। **घोषणा के कुछ ही दिनों में लाखों रुपये के आदेश धनसहित आ गये। जनता को अपने पिछले अनुभव के आधार पर आप के वादों पर विश्वास था।**

आपने वेद भाष्य छपने के लिए प्रेस में दे दिया। **सबसे पहले महर्षि दयानन्द सरस्वती का ऋग्वेद के 6 मंडलों का भाष्य प्रकाशित हुआ, जिसका विमोचन सन् 1973 में आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड के सभागार में तत्कालीन रक्षामन्त्री बाबू जगजीवनराम जी के कर कमलों से हुआ।**

<u>उसी वर्ष</u> आर्यसमाज मन्दिर करौलबाग में **तत्कालीन नागरिक उड्डयन और पर्यटन राज्यमन्त्री डॉ. सरोजिनी महिषी के हाथों से "यजुर्वेद और सामवेद" के भाष्य की संयुक्त जिल्द विमोचित हुई।**

इन पंक्तियों के लेखक के पुस्तकालय में यजुर्वेद और सामवेद के भाष्य की संयुक्त जिल्द की वह प्रति मौजूद है, जिस पर भारतेन्द्र जी ने अपने हाथ से लिखा था-श्री सत्यपाल जी शास्त्री को शुभ कामनाओं सहित-भारतेन्द्रनाथ 20.10.73। ऐसे अवसरों पर वे अनेक प्रतियां भेंट किया करते थे। **कार्यकाल में भी जब कोई पुस्तकें खरीदने आता था, तो वे कहा करते थे कि "मैं आपको अधिकाधिक रियायत देने को तैयार हूं, लेकिन शर्त यह है कि इस रियायत से आपको जो बचत हो, उससे आप और अधिक से अधिक साहित्य खरीदें।"**

<u>उनके लिए प्रचार मुख्य था, अर्थोपार्जन गौण था।</u> **सन् 1975 के प्रारम्भ में आर्य समाज मन्दिर मार्ग में**

अथर्ववेद के भाष्य का विमोचन डॉ. कर्णसिंह के हाथों हुआ। इस अवसर पर महात्मा आनन्द स्वामी, प्रो. शेरसिंह, श्री के नरेन्द्र पत्रकार इत्यादि अनेक प्रतिष्ठित महानुभाव उपस्थित थे।

ऋग्वेद भाष्य के दूसरे खंड का विमोचन भारतेन्द्र जी के सूर्यनगर स्थित निवास स्थान पर भारत स्थित नेपाली राजदूत श्री खनाल के हाथों हुआ। उन दिनों आपातकालीन स्थिति थी, इसलिए अधिक धूमधाम न की गई।

इन सब वर्षों में काम बढ़ता ही गया, लेकिन परमात्मा ने भारतेन्द्र जी को न जाने कैसी शक्ति दे रखी थी और उनमें न जाने कितना उत्साह भर रखा था कि वे काम को और अधिक विस्तार देते जाते थे। ऊपर हमने आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड के जिस विमोचन समारोह की चर्चा की है, उसमें भारतेन्द्र जी ने घोषणा की थी कि "जब तक वेद भाष्य का कार्य पूर्ण न हो जायेगा, मैं नमक, मीठा और अन्न ग्रहण न करूंगा।" भारत सरकार द्वारा अचानक कागज का मूल्य चार गुना बढ़ाने की घोषणा होने से वेद भाष्य छपने में कठिनाइयां आना स्वाभाविक था लेकिन आंशिक अनशन की इस स्थिति में भी आप नये उत्तर दायित्व सम्भालने में पीछे न रहे। अंग्रेजी और मराठी में "जन-ज्ञान मासिक" प्रकाशित किया।

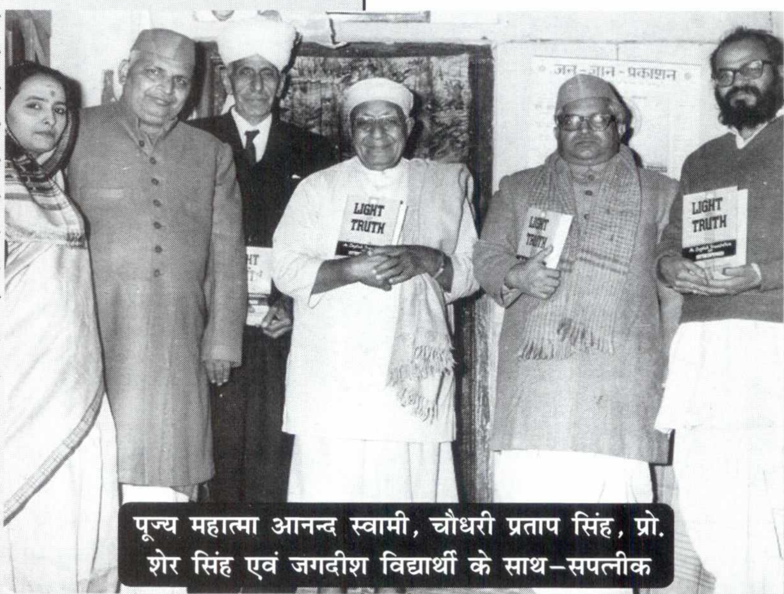

पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी, चौधरी प्रताप सिंह, प्रो. शेर सिंह एवं जगदीश विद्यार्थी के साथ-सपत्नीक

हिन्दी जन-ज्ञान मासिक के साथ ही साथ उस का "साप्ताहिक संस्करण" भी प्रकाशित किया। वेदों का यथार्थ स्वरूप, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका (हिन्दी और अंग्रेजी), वेदांजलि (स्वामी अभयदेव जी द्वारा लिखित वैदिक विनय का नया संस्करण) आदि अनेक वृहत्काय ग्रन्थ प्रकाशित किये।

सांसारिक हलचलों की अनदेखी करके आप अपने काम में जुटे रहते। स्थान और भोजन तक का ध्यान न रहता)। **सन् 1975 में अलवर में आर्यसमाज की शताब्दी मनाई गई, तो आपने अत्याधिक व्यस्त रहने के बावजूद कार्य की गति और तेज कर दी। जैसे गान्धी जी की प्रात:कालीन सैर के समय उनके साथियों के लिए कदम से कदम मिलाकर चलना कठिन हो जाता था** (क्योंकि गांधी जी बहुत तेज चलते थे) **कुछ वैसा ही हाल उनके साथियों का रहता था। वे हर काम तुरन्त करवा डालना चाहते थे।**

ज्यों-ज्यों मैं ये पंक्तियां लेखनी बद्ध कर रहा हूं त्यों-त्यों उनके कामों की स्मृति दिमाग में आती जाती है।

दिसम्बर (1975) के अन्त में दिल्ली में आर्यसमाज स्थापना शताब्दी मनाई गई, तो आपने हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन' द्वारा सम्पादित "वन्दना के स्वर" पुस्तक प्रकाशित की। शताब्दी समारोह के समारम्भ से एक दिन पूर्व इस पुस्तक की प्रथम प्रति प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को भेंट की गई।

भगवान ही जानता है कि वे किन विचारों से संचालित होते थे? उनका प्रेरणा स्रोत क्या था? मजाल नहीं कि कोई उनके पास बैठ कर गप्पों में समय नष्ट करे। जो कोई भी आकर बातें करने लगता, उसे यह कहने की बजाय कि- 'आप बातें न करिये," वे उसे कोई न कोई काम बता देते। इन पंक्तियों के लेखक से वे अक्सर कहा करते कि "आप इतना पढ़ते हैं, उसी अनुपात में लिखा भी करिये।" यह कहकर वे कोई लेखन कार्य सौंप देते।

उन्हें काम में झुंझलाहट न होती थी-झुंझलाहट होती थी, जब काम रुक जाये। **सुबह पांच बजे ही उठ जाते थे और रात के ग्यारह-बाहर बजे तक काम**

करते थे। दुनिया भर की गतिविधियों का पता रखते थे। स्मरण-शक्ति बहुत अच्छी थी। न जाने कितने टेलीफोन नम्बर उन्हें जबानी याद थे। प्रकाशन के साथ दौरों का कार्यक्रम भी चलता रहता। हर क्षेत्र की अद्यतन व्यावहारिक जानकारी आपको थी। कुछ कर गुजरने की साध माता-पिता से विरासत में मिली थी।

श्री केदारनाथ साहनी के साथ पं. भारतेन्द्रनाथ

आप दुर्लभ प्राचीन ग्रन्थ न जाने कहां-कहां से लाकर प्रकाशित करवाते। रामायण, (अंग्रेजी) महाभारत, भगवद्गीता (पंडित आर्यमुनि कृत टीका), स्वामी सत्यप्रकाश जी की अनेक पुस्तकें, प्रो. इन्द्र विद्यावाचस्पति की पुस्तक 'मेरे पिता'–

किस-किस पुस्तक का नामोल्लेख किया जाये, जो आपने प्रकाशित कीं!!!! बच्चों के लिए-**श्री प्रेमचन्द शास्त्री से पुस्तक लिखवाकर प्रकाशित की, जो हरियाणा सरकार द्वारा पुरस्कृत भी हुई।**

डॉ. रामनाथ वेदालंकार, श्री क्षितीश वेदालंकार, श्री दीनानाथ सिद्धान्तालंकार से अनेक पुस्तकें लिखवाकर प्रकाशित कीं। स्वयं भी लिखते थे। **कविता लिखने का आपको बचपन से ही शौक था। हर काम में एक ही कामना निहित थी। कुछ करके इस संसार से विदा होना है।** अपना नाम उज्ज्वल करना है। इस सब के साथ चिन्तन का क्रम भी चलता रहता था। फलस्वरूप विचार भी बदलते रहते थे।

डॉ. कर्ण सिंह के साथ–पं. भारतेन्द्रनाथ

एक समय वह भी था, जब भारतेन्द्र जी कट्टर कांग्रेसी थे और हिन्दू महासभाइयों को साम्प्रदायिक कहकर पुकारते थे। फिर एक समय वह भी आया जब आप जी-जान से हिन्दू संगठन के काम में जुट गए। भारतीयता के उपासक थे। शुद्ध खादी के धोती-कुरते में रहते थे। मजाल नहीं कि आपकी उपस्थिति में कोई सिगरेट सुलगा ले। तुरन्त टोक देते थे। हीन भावना उन्हें छू तक न गई थी। काश, वे इस सब के बीच अपने स्वास्थ्य का भी ध्यान रखते, तो मात्र 54 वर्ष की अल्प आयु में इस संसार से विदा न होते।

आर्यसमाज में नवजीवन का संचार करने के लिए आप सदा सचेष्ट रहते। इस सम्बन्ध में आपने **एक बार गाजियाबाद में और दूसरी बार आर्यसमाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में सम्मेलन भी आयोजित किये। वे उन थोड़े-से व्यक्तियों में से थे, जिनकी प्रतिभा प्रतिकूल परिस्थितियों में अधिक निखार पाती है। वे एक सफल सम्पादक थे।**

सब प्रकार की मन:स्थितियों में उनका काम अबाध गति से चलता रहता था। बहुत-सी खूबियां थीं मरने वाले में, किस-किसका बयां करूं????....

सन् 1978 के सितम्बर में दिल्ली में भयंकर बाढ़ आई। आपका आश्रम (वेदमन्दिर) भी उसकी लपेट में आ गया लाखों रुपयों की क्षति हुई। लेकिन भारतेन्द्र जी घबराना तो जानते ही नहीं थे!!! सारा सिलसिला नये सिरे से जमाया।

हिन्दू हितों की रक्षा का अभियान

ऊपर **हमने जो कुछ लिखा, वह उनके कार्यों का सांस्कृतिक पक्ष था। लेकिन बचपन से ही देशभक्ति की घुट्टी उन्हें पिलाई गई थी।** सन् 1978 में देश की राजनैतिक स्थिति विचित्र थी। आपातकालीन स्थिति तो जनता पार्टी का शासन आते ही समाप्त हो गई थी, लेकिन जनता पार्टी की विधिवत् स्थापना के कुछ ही दिनों बाद पार्टी में फूट पड़ गई थी। भारतीय जन संघ जनता पार्टी में विलीन

होकर अपना अस्तित्व खो चुका था। जनता पार्टी के सोशलिस्ट घटक की मांग थी कि भूतपूर्व जनसंघी, जो जनता पार्टी के सदस्य बने हैं, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से अपना सम्बन्ध विच्छेद करें। जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर ने तो यहां तक कहा कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ भी जनता पार्टी में विलीन हो जाये। जनता पार्टी धर्मनिरपेक्षता की पक्षपाती थी और है। **कुल मिलाकर स्थिति ने ऐसा रूप धारण किया कि हिन्दू हितों की रक्षा करने वाला कोई न रहा।** मानो इतना ही काफी न हो, स्थान-स्थान पर हिन्दू-मुसलमान दंगे होने लगे। अलीगढ़ में दंगा हुआ, तो वहां के भूतपूर्व जनसंघी नेता श्री कृष्णकुमार नवमान को,जो उस समय जनता पार्टी में थे, दंगे भड़काने के आरोप में पार्टी से निकाल दिया गया। हिन्दू हितों की आवाज उठाने वाला साम्प्रदायिक माना जाने लगा।

इस स्थिति में भारतेन्द्र जी के मन को बहुत चोट लगी और उन्होंने विशुद्ध राष्ट्रवादी विचारों के प्रचार के लिए "भारत रक्षा समिति" की स्थापना की। उसी वर्ष अपने जन्म-दिन चौदह मार्च को अपने जीवन के पचास वर्ष पूर्ण होने पर आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध वीतराग संन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी से वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा ली। तब से आप महात्मा वेदभिक्षुः के नाम से जाने जाते रहे।

नेपाल के राजदूत श्री मल्ल एवं सहधर्मिणी पंडिता राकेशरानी के साथ

पांच वर्ष पूर्व सन् 1973 में आप इब्राहीमपुर में '**वेद मन्दिर**' नाम से एक आश्रम स्थापित कर चुके थे। वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश के बाद आपने कुछ समय वेद मन्दिर में साधना की। **उन दिनों आप पर लकवे का आक्रमण हो चुका था। लेकिन विश्राम की तो बात ही क्या, आपने कार्य की गति तेज कर दी!!** वेदभाष्य के पुनर्मुद्रण का काम प्रारम्भ किया। राजनैतिक स्थिति बिगड़ती जा रही थी। **कांग्रेस का शासन यदि कुशासन कहलाता था,तो जनता पार्टी का शासन अराजकता का पर्यायवाची बनकर रह गया था!!**

नेपाल के प्रधानमन्त्री डॉ. तुलसी गिरी को वेदभाष्य समझाते हुए

आपने **हिन्दू हितों की रक्षा की रक्षा के लिए एक मोर्चा गठित करने का संकल्प किया।** आप श्री रामगोपाल शालवाले, श्री के. नरेन्द्र, प्रो. बलराज मधोक, श्री हंसराज गुप्त, डॉ. गोस्वामी गिरिधारी लाल सदृश अनेक हिन्दू नेताओं से मिले। **अन्ततः श्री के. नरेन्द्र के निवास स्थान पर हिन्दू नेताओं की एक बैठक भारतेन्द्र जी ने बुलाई, जिसमें मोर्चा गठित करने का फैसला हुआ।** लेकिन नेताओं की आपसी फूट के कारण एक जगह दो संगठन खड़े हो गये-राष्ट्रवादी मोर्चा और हिन्दू मंच। इस पर **खिन्न होकर महात्मा वेदभिक्षुः ने विवश "भारत रक्षा समिति को हिन्दू रक्षा समिति" का नाम देकर हिन्दू हितों की रक्षा के लिए अभियान छेड़ दिया।** स्वर्गीय प्रोफेसर रामसिंह इस समिति के संरक्षक बनाये गये। **अध्यक्ष पद महात्मा वेदभिक्षुः ने संभाला।**

15 अगस्त 1980 को देश के अनेक भागों में हिन्दू-मुस्लिम दंगे हुए। मुरादाबाद और अलीगढ़ में तो बार-बार दंगे होते रहे। वेदभिक्षुः जी ने अनेक नगरों का दौरा किया। **आर्यसमाज दीवान हाल में जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द जी की उपस्थिति में**

हिन्दू रक्षा समिति के प्रथम सम्मेलन के अवसर पर जगद्गुरु शंकराचार्य श्री स्वरूपानन्द जी से विचाार-विमर्श करते हुए

"हिन्दू रक्षा समिति" का विधिवत् शुभारम्भ हुआ। उसके बाद अजमेर, मकराना, मुरादाबाद, शाहगंज रतलाम, हैदराबाद आदि अनेक स्थानों पर हिन्दू सम्मेलन आयोजित किये गये।

जन-ज्ञान वैदिक विचारों की पत्रिका पहले भी थी, अब भी है। लेकिन "हिन्दू रक्षा समिति" की स्थापना के बाद वह हिन्दू हितों की प्रवक्ता भी बन गई। जनता में इसकी लोकप्रियता भी बढ़ी। इस सबके पीछे वेदभिक्षुः जी की प्रेरणा थी। उन्होंने ही रुचि लेकर इसके जय हिन्दू और महान् हिन्दू जैसे विशेषांक प्रकाशित करवाये।

यह सब तब जबकि दिसम्बर सन् 1979 में आप जिगर की बीमारी से पीड़ित हो चुके थे। अनेक बीमारियों से पीड़ित होने के बावजूद आप का कार्य न केवल जारी रहा अपितु बढ़ता ही गया। आपका नारा था—काम, काम और काम। डाक्टर जोर से बोलने को मना करते थे, लेकन आपकी ओजस्वी वाणी जनमानस को जाग्रत करती रही। ब्लड-प्रेशर, डायबीटिज, "पोर्टल हाइपरटेंशन"—कोई भी बीमारी आपको काम से न रोक पाई!! लगता है कि अनेक अन्य महापुरुषों की तरह आपने भी ठान ही लिया था और आप मंच से गर्वपूर्ण शब्दों में घोषणा किया करते थे कि "जब मरना ही है तो जो समय ईश्वर ने दिया है, उसका अधिकाधिक सदुपयोग किया जाये।"

आपने हिन्दू समाज का पक्ष प्रस्तुत करने और इस्लाम व ईसाइयत पर प्रबल प्रहार करने वाली बीस से अधिक पुस्तक-पुस्तिकाएं प्रकाशित कीं। स्वातन्त्र्यवीर सावरकर, पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय, कुंवर चांदकरण शारदा सदृश लेखकों की पुरानी पुस्तक-पुस्तिकाओं का पुनर्मुद्रण किया।

जीवन के अन्तिम वर्ष में भी **The History of the Assassins** (हत्यारों का इतिहास), वैदिक सम्पति और **Inside Congress** (कांग्रेस के अन्दर) जैसी बृहत्काय पुस्तकें प्रकाशित कीं। नवम्बर 1983 के प्रारम्भ में आप महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह में भाग लेने के लिए अजमेर गये। वहां से खांसी-जुकाम लेकर लौटे।

सामान्य व्यक्ति सोचता है कि विघ्नबाधाएं दूर हो जाएं। तब निश्चित होकर अपने काम में लगूंगा, लेकिन वेदभिक्षुः जी विघ्नबाधाओं से रुकने वाले न थे। बीमारी में भी काम में लगे रहते—पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा गांधी और सुभाषचन्द्र बोस की तरह!!!

पांच दिसम्बर 1983 को आप सुबह से ही पेट में जलन की शिकायत कर रहे थे। रोग गम्भीर होने पर भी काम में लगे रहना आप का स्वभाव बन गया था। उस

सरसंघ चालक (स्वं.) बाला साहेब देवरस को वेदभाष्य भेंट करते हुए

अपने पूर्व गुरु स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती से 50 वर्ष पूरे होने पर 16 मार्च, 1979 को वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा लेते हुए

दिन भी आप दिन-भर काम करते रहे। रात के लगभग साढ़े दस बजे आपको खून की उल्टियां हुईं। तुरन्त आपको गोबिन्द वल्लभ पंत अस्पताल ले जाया गया।

इस अस्पताल के डाक्टरों के अतिरिक्त दयानन्द अस्पताल, शाहदरा के चीफ सर्जन डाक्टर कृष्णस्वरूप श्रीवास्तव ने छुट्टी लेकर आपके आरोग्यलाभ के लिए जो भी सम्भव था, किया। **बाबू जगजीवनराम, श्री केदारनाथ साहनी, लाला राम गोपाल शालवाले ने विशेष रूप से डाक्टरों की पूरी टीम की व्यवस्था की। बीच में सप्ताह भर के लिए आपकी हालत कुछ सुधरी भी, लेकिन रक्तस्राव इतना अधिक हो चुका था कि लगभग 16 बोतलें खून चढ़ाने पर भी क्षतिपूर्ति न हो सकती।**

इन्जैक्शन देकर रक्तस्राव रोका गया, लेकिन ऐसा करना कब तक सम्भव था??? **उसके बाद जो कुछ हुआ, वह होना ही था!!** उस संघर्षशील और यशस्वी जीवन की वह अन्तिम रात्रि थी। और... अन्त में,.....**हमारे लिए रह गई उनकी स्मृति और प्रेरणा**!!!

+++

धधक रहा था जिसका अन्तस्, सुन जननी की करुण पुकार,
मौन हो गया वह अधिनायक गरज रहा था बारम्बार!!!

जनज्ञान 'मासिक' विज्ञापन दरें

जनज्ञान में विज्ञापन दें सहयोग का हाथ बढ़ाएं।

देश-विदेश में अपने प्रतिष्ठान का नाम गुँजाएं।।

अन्तिम कवर पृष्ठ	25000/-रुपए
कवर पृष्ठ दो व तीन	23000/-रुपए
सामान्य पूर्ण पृष्ठ (रंगीन)	18500/-रुपए
सामान्य पूर्ण पृष्ठ	15000/-रुपए
आधा पृष्ठ	8000/-रुपए
चौथाई पृष्ठ	4500/-रुपए

बैंक ड्राफ्ट तथा मनीआर्डर "जनज्ञान मासिक" के नाम भिजवाएं। अथवा आप राशी सीधे यूनियन बैंक में खाता नं. 30790201005688З
IFSC: UBIN 0530794 में जमा करा सकते हैं।

बैंक में जमा की गई राशी की रसीद की प्रतिलिपि हमें अवश्य भेजें।

विज्ञापन व्यवस्थापक- *जनज्ञान-मासिक*

वेद मन्दिर, महात्मा वेदिभिक्षुः सेवाश्रम, केशवनगर (इब्राहीमपुर)
पो.-मुखमेलपुर, दिल्ली-36 दूरभाषः 08459349349

मैं हृदय-मन्दिर से लिख रहा हूँ

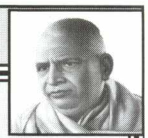

मेरी माता का जय गौरव

मेरी माता का जय गौरव, फिर से धरती पर छा जाए,
मेरे सपनों की आशा है, युग फिर से शान्ति-सुधा पाए॥
मेरी जननी वह संस्कृति है, जिसकी छाया में मानवता,
फलती रहती, बढ़ती रहती, चिरता, रूचिता, मधु-प्राण लता,
जिसके चरणों पर झुक जाते, युग-मूर्ति स्वयं, युग मदमाते,
जिसकी आशा में बढ़ते हैं, सारे ही मानव इठलाते,
वे पा न सके तो पार, इसी से कहता हूँ, यदि पा जाएं,
मेरी माता का जय गौरव, फिर से धरती पर छा जाए॥......
यह दानवता, यह भोगवाद, यह अर्थ, रूप की छलनाएं,
यह घोर युद्ध के घन गर्जन, फैली यह क्रूर कुटिलताएं,
यह सर्वनाश की प्यास मधुर, है मानव जिसको समझ रहा,
पर हाय अभागा जिस पीछे है, प्राणों से भी उलझ रहा,
क्या रहने पाएं किसी छोर? यदि राह अभी भी पा जाएं,
मेरी माता का जय गौरव, फिर से धरती पर छा जाए॥......
मैं श्वास-श्वास से जीवन की, झंकृत वीणा को गा दूंगा,
जो रूठ चुके हैं भाव उन्हें, संसृति में फिर से ला दूंगा,
मैं कह दूंगा अभिशापों से, इस पार नहीं उस पार चलो,
मैं कह दूंगा वरदानों से, उस पार नहीं इस पार रहो,
जो प्राण लुटाए जगती ने, उनको पाकर वह मुस्काए,
मेरी माता का जय गौरव, फिर से धरती पर छा जाए॥......
फिर करवट लें, जागें, ये जीवन की फुलझड़ियां,
फिर टूक-टूक हो बिखर जाएं, यह क्रूर कुटिलता की लड़ियां,
यह महानाश की आग बुझे, फिर शान्ति सुधायुत बरसाए,
यह सर्वनाश का राग बन्द हो, और हृदय-जग मुस्काए,
यह नहीं कठिन, पर सब मिल कर, यदि शाश्वत गीत बजा पाएं,
मेरी माता का जय गौरव, फिर से धरती पर छा जाए॥......
मैं आज चला यह ध्येय लिए, तुम सुनो! सजग हो जग वालों!!
यह लक्ष्य तुम्हारे सम्मुख है, तुम सोचो-समझो कुछ पा लो,
जो भी कण्टक बन कर आए, उसको ना जीता रहने दूं,
जो मानवता का शत्रु कहो, उसकी क्या सीमा रहने दूं?
पाखण्ड-पाप औ भेद-भाव, सब दूर करो, जो ज्वालाएं,
मेरी माता का जय गौरव, फिर से धरती पर छा जाए॥......
मैं आज अकेला चलता हूं, जो बन सकता साथी आए!
है कौन विश्व में आज कहो, जो मानव दुःख समझे गाए,
इस गायन में है छिपा हुआ, स्वर रोदन का जगती भर के,
उससे ली जाती है करुणा, अब हिलें दुर्ग आडम्बर के,
युग-युग का दारुण चीत्कार, जो धू-धूकर जलता जाए,
मेरी माता का जय गौरव, फिर से धरती पर छा जाए॥......

(फाल्गुन संवत् 2055 "जनज्ञान" से...)

महात्मा वेदभिक्षुः जी की अमर वाणी

"मैं हृदय मंदिर से लिख रहा हूं"

महात्मा वेदभिक्षुः : चिन्तन-मनन की झांकी

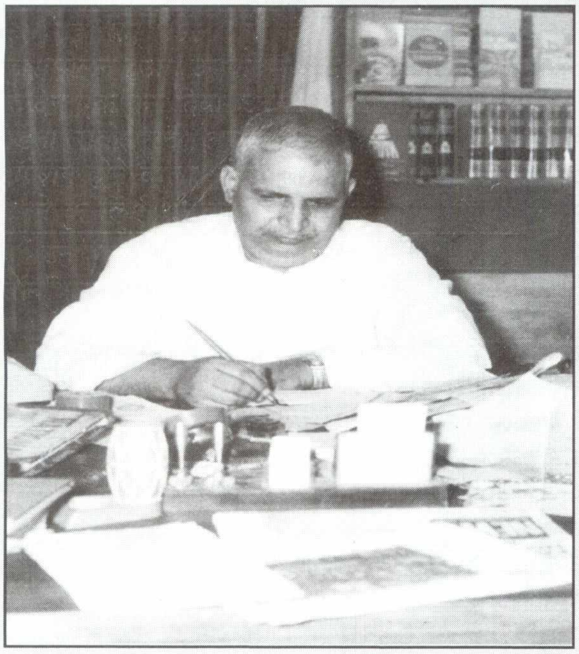

महात्मा वेदभिक्षुः वाणी के धनी थे। धन की दृष्टि से तो उनके जीवन में यह पौराणिक मान्यता ही साकार हुई थी कि-सरस्वती (विद्या) के साथ लक्ष्मी (धन) का सहवास नहीं होता। धन दर्पण की स्थिति के दर्शन तो उनके जीवन में नहीं हो पाए, किन्तु चिन्तन-मनन-वेदाध्ययन की पूंजी से वह समृद्ध रहे। वेद के प्रचार-प्रसार के लिए उन्होंने हिन्दू जन्म के समक्ष झोली निश्चय पसारी–किन्तु जो कुछ आया उसे अपने व्यक्तिगत सुख हेतु उपयोग में नहीं लगाया अपितु उस राशि को वेद-प्रचार की पावन गंगा में ही प्रसारित कर आत्मिक सुख पाया।

वेद का निर्देश-"दो हाथों से अर्जित कर सहस्त्र हाथों से समर्पित कर" इसी को अपनी व्यवहार विधा बनाकर उन्होंने अपनी चिन्तन-मनन अर्जित पूंजी को "जनज्ञान" के माध्यम से सहस्त्र बनाकर कोटि-कोटि जन तक पहुंचाया।

उसकी चिन्तन-पूंजी के कण–"मैं हृदय मंदिर से लिख रहा हूं" के माध्यम से देश-विदेश के लाखों श्रद्धालु, जिज्ञासु और समालोचक व आलोचक जन को भी मिले।

प्रस्तुत हैं उनके गहन मनन के परिचायक उसके कुछ विचार-सुमन! एवं ...

अन्तर्मन को झकझोरने वाली हृदय मंदिर से लिखीं कुछ कविताएं......

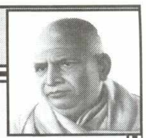

महात्मा वेदभिक्षुः ने कहा था–

वस्तुतः सृष्टि चक्र का यह अटल सत्य है कि जीवन ही जीवन देता है। अग्नि से अग्नि प्रज्वलित होती है। प्राणों की शान्ति ही प्राण भरने में समर्थ होती है।

अपने मन में जिस बात की इच्छा जागे उसके लिए श्रम साधना की जाए तो इच्छा पूर्ण होती है। सत्य की सफलता भी साधना चाहती है, तभी कामनाएं फलती हैं और फूलती हैं।.....

प्रभुपुत्र बनने का मूल मन्त्र

प्रतिदिन रात्रि को सोते समय अपने दिन भर के कामों पर दृष्टि डालो और स्वयं सोचो कि इनमें से क्या तुम दुनिया से छिपाना चाहोगे, जिन्हें छिपाना पड़े ऐसे काम करना छोड़ दो। और सदा सोचो–मैं कौन हूं? मैं इस संसार में क्यों आया हूं? और मुझे यहां से क्या लेकर जाना है?

स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः का यक्ष प्रश्न??

हम क्या करेंगे, यह आपके सामने आयेगा। पर आप क्या सोचते हैं, हमें तो यह देखना है! वेद की ऋचाएं धरती पर गूंजे, यह हमारा सपना है। विदेशी पादरियों और मौलवियों से संघर्ष में हम जीतें यह हमारा लक्ष्य है। वेद-शास्त्र, उपनिषद, गीता और गायत्री की छाया धरती पर छाए, इसके लिए मैं जो कुछ भी कर सकता हूं, कर रहा हूं और करता रहूंगा। किन्तु क्या इतने बड़े देश में एक ब्राह्मण के आह्वान पर आगे बढ़ने वाले वीरों का अभाव हो गया है? क्या समझू मैं??.....

नींद छोड़ो

नींद छोड़ो, खड़े हो जाओ, युग को चुनौती दो।..... नई धारा बहाने के लिए उठो, तैयार हो जाओ।
जो तुम्हारा मार्ग है, वह सर्वनाश की ओर जाता है। उस पर चलना क्या जरूरी है?
मरने के लिए क्यों सामान जोड़ रहे हो। रोटी कपड़ा और मकान जरूरी है।...
पर केवल इन्हीं में डूब जाना, मनुष्य का काम नहीं है।
क्योंकि मनुष्य-पशु में कोई अन्तर है भेद है, इस को समझने का यत्न करो।....
जीवन का लक्ष्य जानो-समझो रास्ता बदलो, जल्दी बहुत जल्दी, क्योंकि जीवन का समय निश्चित है।
एक-एक पल मूल्यवान है। जो जा रहा है वह कभी लौटकर नहीं आएगा।....
इसलिए तुम कमाओ ऐसा धन जो तुम्हारा हो, केवल तुम्हारा।
तुम्हारे मन के मीठे-मीठे सपने पूरे हों, तुम जीवन भर हंसते हुए रह सको,
दुःख तुम्हारे पास भी न आए, इसके लिए तुम्हें जो प्रकाश चाहिए, वह ढूंढो।.....
प्यार एकता और सभी को अपना समझना,
जीवन की लहरों पर मुस्काना सीख लो, जान लो, मेरे भाई....
काम तुम्हारे आएगी बस तुम्हारी यही कमाई।.......

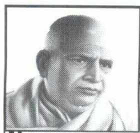

वसुधा में वैदिक-ज्ञान जगे

बलिदान जगे, सम्मान जगे, युग-युग का गौरव गान जगे।
सदियों के गहन निराशा-घन, अब दूर भगें, रवि-ज्ञान जगे॥
जगें कणाद, महर्षि पातंजलि, जगे रामकृष्णार्जुन का बल।
जगे सत्य का वर सिंहासन, जगे शास्त्र-ऋषियों का शासन॥
भारत की मिट्टी के कण से, जीवन का वो अभिमान जगे॥
बलिदान जगे, सम्मान जगे, युग-युग का गौरव गान जगे॥
हम एक बनें, हम एक रहें, मत-ऐक्य भावना की भाषा।
हो शान्ति-न्याय का प्रिय दर्शन, सतयुग की पावन प्रत्याशा॥
पापों की गद्दी डोल उठे, वह दूर कहीं उस पार भगे।
बलिदान जगे, सम्मान जगे, युग-युग का गौरव गान जगे॥
हे आर्य जगो! आलस्य तजो! धरती है तुम्हें पुकार रही।
यह देखो दुनिया उजड़ रही, आशा की भिक्षा मांग रही।
बलिदेवी का इतिहास स्वयं, हो मूर्ति-रूप उत्थान जगे।
बलिदान जगे, सम्मान जगे, युग-युग का गौरव गान जगे॥
आलस्य यहीं पर छोड़ो तुम, जीवन-मद-माया कुचलो रे।
इन महानाश की लहरों के, आने से पहले संभलो रे।
वह वेग लिए तुम चाल चलो, वीणा की भैरव तान जगे।
बलिदान जगे, सम्मान जगे, युग-युग का गौरव गान जगे॥
हिमगिरि का आसन डोल उठे, सागर का पानी खौल उठे।
उन प्रलयकारिणी का, यौवन भी जय-जय बोल उठे॥
तुम शक्तिरूप हो गरज उठो, वसुधा में वैदिक ज्ञान जगे।
बलिदान जगे, सम्मान जगे, युग-युग का गौरव गान जगे॥

अमर प्यार गंगा...

शुद्धि का डंका बजाते चलो,
हिन्दू की संख्या बढ़ाते चलो!
सभी एक हों हिन्द वासी प्रभो!!
"भारत की जय हो", गुंजाते चलो
शुद्धि का डंका बजाते चलो ॥
मिटा दो सभी भेद-भावों को तुम,
जला दो, उठो, जाति-पांति को तुम
अमर प्यार गंगा बहाते चलो,
ध्वजा 'ओ३म' की तुम उड़ाते चलो
शुद्धि का डंका बजाते चलो ॥
जो दुश्मन हैं मेरे अमर देश के,
जिन्हें प्यार धरती से होता नहीं,
गुंजाते नहीं हैं जो वन्देमातरम्,
उन्हें शक्ति से तुम मिटाते चलो,
शुद्धि का डंका बजाते चलो ॥
न झुकना हमें आज तक भी है आया,
न रुकना हमें काल से भी है आया,
भारत हमारा है माता हमारी
सजग प्राण हैं तो, विजय है हमारी
दुश्मन के सिर तुम झुकाते चलो
शुद्धि का डंका बजाते चलो॥
अमर प्यार गंगा बहाते चलो,
तिरंगा हमारा उड़ाते चलो!!!........

मैं हृदय-मन्दिर से लिख रहा हूँ

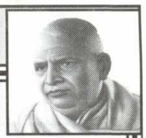

हमारा (आर्य समाज का) सौवाँ जन्म दिन

महात्मा वेदभिक्षुः जी ने जब वह पं. भारतेन्द्र नाथ जी के नाम से जाने जाते थे 1957 में, आर्य समाज की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने पर "मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूं" में अपनी अन्तर्व्यथा व्यक्त की थी। उनके उद्गार– ''हम प्रतिवर्ष जो जलसे आयोजित करते हैं उसका औचित्य क्या है? अगर महर्षि का सन्देश सही अर्थों में न दे पाएं तो....

हम सौ वर्ष के हो गए। **100 वर्षों में सत्य-ज्ञान-न्याय धर्म की पताका फहराते हम बढ़ते गए।** जहाँ भी हम गए विजय ने पुष्प मालाओं से हमारा स्वागत किया। मनुष्य मात्र को हमने शान्ति का संगीत सुनाया! विजय के गीत, प्राणों में पवित्र अमृत सा बरसाते रहे, हम बढ़ते रहे।

1875 से 1975 तक की हमारी– आर्यसमाज की यात्रा इतिहास की गौरवमयी गाथा है।.....

इन 100 वर्षों में हमने संसार को प्रकाश दिया, किन्तु दुर्भाग्यवश हमारे विकास और प्रसार के लिए जिन संगठनों का निर्माण हुआ था, उनमें कीचड़ ने प्रवेश कर गंगा के पवित्र जल को गंदला कर हमारी प्रभा को धूमिल करने का प्रयास किया। देव दयानन्द द्वारा संस्थापित आर्यसमाज के साथ यह सबसे बड़ी विडम्बना है।

आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है कि हम आर्यसमाज को और आर्यसमाज के प्रतिनिधि संगठनों को अलग-अलग कर के देखें। **"आर्यसमाज" उतना ही महान् और पवित्र है जितना संसार में सत्य-धर्म और प्रभु का ज्ञान पवित्र है।** उसके चरणों में प्रत्येक बुद्धिमान-विवेकी व्यक्ति का सिर झुक जाएगा। परन्तु आज इस पर.....अयोग्य, स्वार्थी पदलोलुप और व्यापारी मनोवृत्ति के व्यक्ति अधिकार जमाये बैठे हैं। **फूट-द्वेष-ईर्ष्या से ओत-प्रोत इन व्यक्तियों ने इन संगठनों की लालिमा को कालिमा में बदलने का जो अपराध किया है, उसे इतिहास कभी क्षमा नहीं करेगा।**

हम चाहते हैं कि संसार के लोग ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों-ग्रन्थों के आधार पर आर्यसमाज को समझें। आर्यसमाज के स्वर्णिम नियमों को आर्यसमाज समझें और गुरुदत्त–लेखराम–श्रद्धानन्द–हंसराज–दर्शनानन्द–नारायण स्वामी की पावन परम्परा के पूज्य महात्माओं की पृष्ठभूमि में आर्यसमाज को परखें।

हमारा दृढ़ विश्वास है कि ऋषि के आर्यसमाज के जो भी दर्शन करेगा, उसका जीवन बदल जायेगा। वह पूत पावन बनकर सच्चे अर्थों में धर्म की गरिमा को समझ जायेगा।

हम शताब्दी मना रहे हैं ऋषि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज की और बधायी देते हैं।' उन दयानन्द के वीर अनुयायियों को, जिन्होंने हमारे आवाहन पर शताब्दी की ज्योति जगायी!

आर्यसमाज की शताब्दी जीवन के प्रेरक संगीत की शताब्दी है। **यह शताब्दी है सत्य की, प्रतिष्ठावान् धर्म के उद्धार की, ज्ञान के मंगलमय गान की!** यह पर्व मानवता के उद्धार का पर्व है। **इस पर्व को जिन्होंने शान-मान से मनाया, वे सचमुच ऋषि के भक्त हैं,** हम उन सभी का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

हमें विश्वास है कि युग प्रवर्तक दयानन्द का तप-त्याग-बलिदान उनके अनुयायियों के मन में जीवन की सशक्त प्रेरणा देगा, और आगे आने वाले दिनों में संसार के कोने-कोने में सत्य-धर्म का सन्देश 'वेद' की ऋचाओं के स्वर में गूंजेगा। प्रत्येक पूजा स्थल से वेद की वीणा झंकृत होगी और प्रत्येक मनुष्य परमात्मा का अमृत पुत्र बन अपने सारे भेद भुला धरती को स्वर्ग बनाने की कल्पना को साकार रूप देगा।

–भारतेन्द्रनाथ ●●●

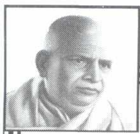

अनुपमेय : राकेशरानी

नेता बनना आसान है और उपदेश देना भी। लेख कविता और साहित्य सृजन करने वाले भी बहुत हैं, किन्तु **भारत के वर्तमान इतिहास में ऐसी किसी महिला के दर्शन दुर्लभ हैं। जिसने अपने को तिल-तिल कर के जलाया हो,** आराम, सैर, आमोद-प्रमोद और लौकिक कार्यक्रमों से परे रहकर केवल किसी के कहने पर जीवन के समस्त क्षणों की आहुति दी हो.... **वस्तुतः खोजने पर भी ऐसा व्यक्तित्व मिलना दुर्लभ है, इसलिए मैं अपने मानस की समस्त श्रद्धा से इन की वन्दना करता हूँ।** अपने किसी प्रिय व्यक्ति के सम्बन्ध में लिखते हुए लेखनी रुकती है किन्तु यह कृतघ्नता होगी, यदि मैं यह न कहूँ कि-**हमारी सारी सफलता का 95 प्रतिशत श्रेय पण्डिता राकेशरानी जी को जाता है।**

घर में अत्यन्त सरल, निरन्तर श्रम, साधना और पागलपन की सीमा तक कार्य के प्रति अनुरक्ति ही नहीं अपितु अपने को भूल जाने तक की भावना, उनके लिए सहज बन गयी है। उत्सवों के निमन्त्रण, सम्मेलनों की अध्यक्षता और राजनीति के प्रलोभन ठुकराना उनका स्वभाव है। और सबसे बड़ी बात यह है कि उनकी गत 30 वर्षों की (अब 64 वर्षों की) साधना केवल इसीलिए है कि हमारी भावना पूर्ण हो। क्रोध भी उन्हें आता है और झुंझलाहट भी, पर गत जीवन में 8-10 बार ही ऐसे अवसर आये होंगे। वे बातों में नहीं, काम में विश्वास रखती हैं, और यही उनकी सफलता का मूल मन्त्र है।

बड़े से बड़ा दुःख और बड़े से बड़ा सुख उनके लिए समान है। प्रतिदिन नियम से प्रातः करोलबाग से 8 बजे वेद मन्दिर जाना, रात्रि को 8-9 बजे तक लौटना, फिर घर के कार्य करते रहना। पता नहीं कौन सी शक्ति है जिस के बल पर वे इतना बोझ उठा पाती हैं। सचमुच **आज कोई अनुभव करे या न करे, वेद प्रचार के पवित्र कार्य में उन के योगदान का मूल्यांकन वर्तमान करे ना करे, किन्तु निष्पक्ष इतिहासकार उनकी वेद साधना को अद्वितीय स्वीकार किये बिना चल न सकेगा। आठ वर्ष में 28 हजार वेद भाष्यों का प्रकाशन, प्रेषण और प्रसार (सम्प्रति लगभग साढ़े चार लाख) उनकी एक ऐसी देन है जिस पर जितना भी उनका अभिनन्दन किया जाए, थोड़ा है।**

अनेक सज्जनों ने उनके सार्वजनिक अभिनन्दन की इच्छा प्रकट की पर उन्होंने उसे मानने से स्पष्ट इन्कार ही नहीं किया अपितु यहाँ तक कह दिया कि ऐसा होने पर मैं उस दिन दिल्ली में नहीं रहूँगी। **वे उच्च कोटि की लेखिका, सफल सबल कवयित्री और उत्तम भाषण देने में समर्थ हैं। किन्तु अपने इन सब गुणों को दबाकर उन्होंने मशीन बन कर दयानन्द संस्थान को उभारा है। यह उनकी कृति उनकी गरिमा को स्पष्ट करती है।**

8 जून को उनका जन्मदिन था। मैं सोच रहा था, कि इस महान् आत्मा को क्या इसी तरह सदा चक्की में पिसना होगा। कहना बड़ा आसान है पर लगातार मशीन बन लगे रहना बहुत ही कठिन तलवार की धार पर चलने जैसा है। इसलिए वस्तुतः इनका अभिन्दन यही हो सकता है कि कोई उनके कार्य को सम्भाले। यह उनका दुर्भाग्य है कि उनकी सन्तानें उनकी राह पर न चल सकीं और अब मैं देख रहा हूँ कि वे भीतर ही भीतर टूट रही हैं। कार्य के बोझ ने उन्हें थका दिया है। फिर भी उनको देखकर कोई उनकी इस मनःस्थिति का अनुमान नहीं लगा सकता।

जीवन के प्रत्येक चरण में मुझे उनका सहारा मिला, **संकटों में उन्होंने पतवार सम्भाली और नैया पार लगायी, मेरे कर्म के प्रति अर्पित होकर जीवन उन्होंने जिया,** कभी भी राह की बाधा नहीं बनी अपितु बाधाओं को हटाने में सहयोग दिया। इसीलिए मैं हृदय से इस महान् देवी के प्रति नतमस्तक हूँ। ***प्रभु ऐसे कर्मठ कार्यकर्त्ता यदि 5-7 भी और उत्पन्न कर दे तो भारत का भाग्य बदल जाये, ऐसा मेरा विश्वास है।*** मैं असाध्य रोग से पीड़ित होकर भी उनके कारण निश्चिन्त हूँ। रोग की गम्भीरता त्याग अब तो दिन रात कार्य में लगा हूँ-केवल इन्हीं के बल पर परमात्मा इन्हें शतायु करें, मंगल कामनाओं के साथ।

-वेदभिक्षुः (जनज्ञान 1982 से उद्धृत)●●●

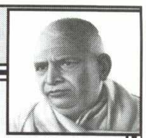

हम संसार में क्यों आये हैं और हमें यहाँ से क्या लेकर जाना है?

इस धरती पर **अमृत क्या है? आनन्द और संगीत क्या है? मानव मन का वांछित स्वर्ग क्या है**? वह क्या है, जिसे पाकर मनुष्य देव बन जाता है? वह क्या है जो अन्धकार का शत्रु है? **वह क्या है जहां प्रकाश निरन्तर नृत्य करता है?** इन प्रश्नों का उत्तर है **अध्यात्म।**

'अध्यात्म' वह शब्द है, जिसमें जीवन की सफलता का सार छिपा है। **अणु बम से भी अधिक शक्तिशाली** शस्त्रों का सामना करने का सामर्थ्य उत्पन्न करने वाला ब्रह्मास्त्र है **'अध्यात्म'**।

अध्यात्म अर्थात् आत्मज्ञान! मनुष्य क्या है, क्यों है, किसलिए है और जो वह है वह वस्तुतः क्या है, यह जानना ही **अध्यात्म है।** अपने को जानना कितना साधारण किन्तु कितना कठिन है, इसकी कल्पना भी साधारण नहीं। व्यक्ति की महत्ता का स्रोत इस विज्ञान में है, इसीलिए ज्ञान की अनन्त महिमा ऋषि-मुनियों ने गाई।

ब्राह्मण इसीलिए पूज्य था कि वह अध्यात्म जानता था। विद्या का लक्ष्य ही था आत्म-विज्ञान। इस विज्ञान द्वारा मनुष्य-मनुष्य बनता था, वह सब कुछ पा लेता था, जिसे पाने के लिए उसने धरती पर जन्म लिया। **समय के फेर ने आत्म-विज्ञान के स्थान पर प्रकृति-विज्ञान को महत्व दिया। हमने आत्मा को भुलाकर शरीर की उपासना आरम्भ की।** शरीर का उपासक पशु बन सकता है, मनुष्य नहीं।

सचमुच, **बिना अपने को जाने हम कितना भटक जाते हैं, हमारे मन और मस्तिष्क सभी बदल जाते हैं। हम मृत्यु में जीवन और जीवन में मृत्यु को देखते हैं।** हमें निर्माण में विनाश और महानाश में निर्माण प्रतीत होता है। शब्दों के अर्थ बदल जाते हैं, दृश्यों का रुप बदल जाता है। पता नहीं क्या हो जाता है इन दो मार्गों के अंतर में।

शरीर सत्य नहीं, इसका मूल्य भी कुछ नहीं। यह तो जलेगा, हम प्रतिदिन देखते हैं, फिर भी नहीं देखते। **एक पल भी तो नहीं लगता, "मैं" चला जाता हूं तो सभी कुछ समाप्त हो जाता है** और मेरे प्यारे-प्यारे शरीर को सभी जलाने हेतु उद्यत हो उठते हैं। क्यों? कभी सोचा है आपने? क्या कारण है इसका?

शरीर को जीवन भर सजाया, आत्मा को भुलाया, पर आत्मा गई तो शरीर भी जलाया। सत्य तब प्रकट होता है जब "सत्य" समाप्त हो जाता है।..... आज मुनष्य अंधा हो चुका है। प्रकृति-विज्ञान की सीमा लांघ उसने अपने को प्रभु से भी महान् समझ लिया है। ...किन्तु पशुता के उभार के अतिरिक्त इस विज्ञान की देन और क्या है? आत्म-विज्ञान देवता उत्पन्न करता है और प्रकृति-विज्ञान राक्षस!!

परिणाम सामने है। आज की दुनिया राक्षसों की नगरी बनती जा रही है। हमने गहराई में पैठ कर सोचा है। जीवन के सत्य को समझने का यत्न किया है और अनुभवों के आधार पर हमारा यह सुदृढ़ मत है कि **अध्यात्म विज्ञान का पंडित हुए बिना कोई भी व्यक्ति मनुष्य की संज्ञा से अभिहित नहीं किया जा सकता।**

योग क्या है?–**आत्मा-परमात्मा का संयोग।** भोग क्या है?–**देह-प्रकृति का मिलन**। देह-प्रकृति मिलकर जब आम-तत्त्व विस्मृत कर देती है, तब महानाश नृत्य करता है, किन्तु देह-प्रकृति मिलन में जब देह की ज्ञानेन्द्रियां 'आत्म-तत्त्व' जान, देह द्वारा प्रकृति से लाभ उठा कर भी कभी **'मैं'** को विस्मृत नहीं करतीं, तब प्रकृति अपने उत्कर्ष के लिए प्रकृति का लाभ प्राप्त करता है, प्रकृति में लीन नहीं होता।

आत्म-तत्व को जान मैं देह का प्रयोग आत्म-तत्व के उत्कर्ष हेतु कैसे करूं? **प्रकृति के विशाल भंडार से कैसे वह साधन खोजूं** जो आत्म-तत्व के उत्कर्ष का कारण बनें। अपने को जान कर अपने प्रकाश से मैं स्वयं ज्योतित हो प्रकाशपुंज प्रभु के आनन्द का पान कैसे करूं? यह सब ज्ञान ही आत्म-विज्ञान है।

अध्यात्म अर्थात् आत्म-विज्ञान की शिक्षा का प्रबन्ध आज कहीं नहीं। जो शिक्षक हैं भी वे

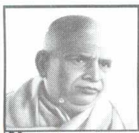

महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणी

बहकाने वाले हैं। भूमण्डल की सारी शक्ति आज अज्ञान को ज्ञान समझ उसी के प्रसार में लगी हैं।

आर्यसमाज का कार्य अज्ञान को ज्ञान में बदलना या यों कहिए अध्यात्म-विज्ञान की शिक्षा देना है। दुर्भाग्य यह हुआ कि इस पवित्र आन्दोलन के संचालक स्वयं अध्यात्मशून्य हो गए और वैदिक धर्म के ये अध्यात्मकविहीन ठेकेदार पशुओं की तरह आपस में संघर्षरत हैं। संस्थापक का महान् लक्ष्य भुला दिया। प्रभु का दिव्य संदेश, ज्ञान, भूल गए। ऋचाओं के गीत गाने याद नहीं रहे, रह गईं स्मरण गद्दियां, पद और स्वार्थ।

'आत्मा' को मारकर–अन्धकार में डालकर कौन आगे बढ़ा है, और आत्मा को जानकर कौन पीछे रहा या हारा है?

हम अपने को मिटा रहे हैं तो कभी जीत नहीं सकते। **आर्यपुत्र! अपने को जान! अपने को समझ!** देख तो सही, तू कौन है? आंखे खोल, अन्धा मत बन! ईश्वर पुत्र! प्रभु की शरण में आ और उस मार्ग को जान, जो मार्ग देवताओं का है।

जिसे हम अपना-अपना कहकर जीवन की अनमोल घड़ियाँ नष्ट कर रहे हैं, वह सब हमारा नहीं है। जो हमारा है, उसे जान! जो साथ जायेगा, वह एकत्र कर। अपने को सजा! उठ! अपना श्रृंगार कर! मत बहक, मत भटक, देख तो सही, **तेरे गुरु ने अपने जीवन में कुछ भी करने से पहले कितनी साधना की थी**????

बालक आत्म-तत्व के ज्ञान के लिए पढ़ता है। पढ़कर अपने को जान तब वह कर्मक्षेत्र में आता है तो उस ज्ञानी बालक की पवित्रता से सर्वत्र महक उठती थी। जीवन में साकार स्वर्ग थिरकता था। और आज मन करता है कह दूं मैं इस दुनियां से कि–

लौटो जीवन की ओर और अध्यात्म-विज्ञान की उपासना करो। अपने को जानो। **विद्या वह पढ़ो जो तुम्हें आनन्द दे सके। जो तुम्हें मनुष्य बना सके।** जो तुम्हें ज्योति दे। **जो तुम्हें यह बताए कि तुम कौन हो**? यहाँ धरती पर क्यों आए हो?

("नवम्बर 1970 जनज्ञान")

यह कैसा चिन्तन है!

माता की छाती पर, लातें कोई मारे तो,
बेटे देखते रहें??
यह कैसा पौरुष है? यह कैसा जीवन है?.....
माँ जिसे कहा हो, माना हो जाना हो,
उस की आहों को, चुपचाप बैठे सुनते रहें,
यह कैसा चिन्तन है?.....
भारत माता को, माँ ही तो माना था!!!
गोली भी खायी थी, फांसी भी चूमी थी।
जेलें भी काटी थीं,
माँ के बन्धन काटने को.
बन्धन तो काट दिए, क्रन्दन पर सुनते हैं!!
अपनों ने-अपनी में,
माँ को भुला दिया, आंसू से रुला दिया!!
सब को चिन्ता है, अपनी बस अपनी,
मां की चिन्ता करने वाले, चिता पर बैठ चुके।
स्वार्थों ने जन्म लिया, माँ को भुला दिया,
और आज!!
सब मिल कर रौंद रहे हैं माँ को,
क्या सोचते हो, बोलो!!
कब तक सहोगे, माँ का अपमान?...
क्रन्दन, रुदन, हाहाकार!!!!
कुछ तो बोलो रे माँ के बेटों!!!!!
क्या तुम जिन्दा हो?????.........

(आश्विन सम्वत् 2037 "जनज्ञान")

बिगड़ा भाग्य बचालो रे

देश खड़ा है आज हमारा, ज्वालाओं के बीच में,
नेताओं ने सुधि है खो दी, पश्चिम के संगीत में।
आग लगी है घर आंगन में, झुलस रही फुलवारी है,
सिसक रही अत्याचारों से, प्रान्त-प्रान्त की क्यारी है।
बढ़कर पतवार संभालो रे, बिगड़ा भाग्य बचा लो रे।
समय नहीं मिल पायेगा फिर, अपना सौभाग्य बचाने का,
स्वतन्त्रता अनमोल राष्ट्र की, पावन लाज बचाने का।
कफन बांधकर बढ़ो जवानों, मौत खड़ी है द्वार पर,
डगमग-डगमग जीवन नैय्या, डोल रही मझधार में।
उसको वीर सम्भालो रे, बिगड़ा भाग्य बचा लो रे।।

(दिसम्बर 1969 "जनज्ञान" से...)

मैं हृदय-मन्दिर से लिख रहा हूँ

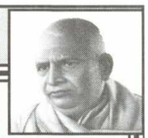

दिव्य स्वप्नों की खोज

हमारे पथप्रदर्शक विश्व-वंद्य महर्षि दयानन्द ने कुछ स्वप्न देखे थे, कुछ रेखाचित्र उनके मस्तिष्क में उभरे थे, **उन रेखाचित्रों का मूल्यांकन जिस दिन ऋषि के अनुयायी कर लेंगे, उस दिन उनकी पूर्ति होने में भी देर नहीं लगेगी।** ऋषि के स्वप्नों का संसार दु:ख-कष्ट, क्लेश आदि से मुक्त संसार है। उसमें जातिगत, वर्गवाद और नीच-ऊंच की विवादास्पद द्वेष लहरों के लिए कोई स्थान नहीं। मनुष्य ईश्वर का पुत्र है। पिता के आदेशों का पालन पुत्र का कर्तव्य है। पुत्र पिता का आज्ञाकारी ही होता है।

और **प्रभु ऐसा पिता है जिसका पुत्र अपराध-पाप कर ही नहीं सकता। किन्तु हम ऋषि के अनुयायी पिता परमात्मा से अभी बहुत दूर हैं।** प्रभु से दूर हैं तो सत्य से भी दूर हैं और **सत्य से दूर रहने वाला और कुछ भी हो महर्षि दयानन्द का अनुयायी नहीं हो सकता।**

> ***महात्मा गांधी के उत्तराधिकारियों ने जैसे गांधीवाद को समाप्त किया वैसे ही ऋषि के अनुयायियों ने दयानन्द के स्वप्नों को समाप्त कर डाला है। ऋषि दयानन्द की जय का नारा लगाते हुए हमने कभी यह नहीं सोचा कि इसका अर्थ क्या है? ऋषि दयानन्द के शब्दों को प्रमाण रूप स्वीकार करते हुए भी हमने सदा उनके आदेशों की अवहेलना की है। जातिवाद के पुछल्ले नामों को साथ लगा कर हमने क्या उनके विचारों के विरुद्ध आचरण नहीं किया? ईश्वर भक्ति की भावना को ठुकराकर हमने क्या ऋषि के स्वप्नों को ही नहीं ठुकराया? शक्ति पाकर निर्बल पर प्रहार करने की वृत्ति को क्या हम छोड़ सके हैं? ऋषि ने कहा था कि जो बलवान् होकर निर्बलों की रक्षा करता है वही मनुष्य कहाता है और जो स्वार्थवश होकर पर-हानिमात्र करता है वह जानो पशुओं का भी बड़ा भाई है।***

मन रोता है जब दयानन्द के शब्दों से दूर दयानन्द के अनुयायियों को देखते हैं। ऋषि का लक्ष्य अधूरा पड़ा है किन्तु हमने उनका नाम लेकर मनमानी व्याख्याएं की हैं। **हम वह करते हैं जो हम चाहते हैं, वह सब कुछ भुला देते हैं जो ऋषि चाहते थे।**

विचारों की क्रान्ति का यज्ञ अधूरा पड़ा है। **मतवादों की समाप्ति का आंदोलन चलाने का साहस हम खो चुके हैं। पाखंडों पर प्रहार करने में हमें भय लगने लगा है। जातिवाद की दीवारें गिराने के स्थान पर हम उनसे प्यार करने लग गए हैं।**

रास्ता हम भूल गए, सत्य पर विश्वास नहीं, ईश्वर की ज्योति से प्रकाश हम ले नहीं पाए, फिर **कैसे बढ़ेंगे और करेंगे दयानन्द का काम!** राजनैतिक दांव-पेंच धर्म पर अधिकार कर चुके हैं। धर्म पर आस्था लड़खड़ा चुकी है। चुनाव, गद्दियां, भाषण और प्रस्ताव से आगे हमारे पास कोई कार्यक्रम नहीं। काम करने के लिए कोई तैयार नहीं। मरने का साहस हम खो बैठे इसलिए जीने का ढंग भूल गए। **हमें तो यह भी समझ नहीं आ रहा है कि किससे कहें कि भाई! आओ, ऋषि दयानन्द का काम करें। क्योंकि जो हम ठीक समझते हैं उसे ठीक समझने को कोई तैयार नहीं। और हमारा मस्तिष्क औरों के रास्ते को ठीक नहीं समझता।** हमारे मन और मस्तिष्क पर ऋषि का जो प्रभाव है उसके प्रकाश से हमारा जो भी चिन्तन है उसमें कोई उलझन हमारे सामने नहीं है। हम चाहते हैं कि ऋषि के सभी अनुयायी एक साथ मिलकर करें–

1. **वेद का, वेद की विचारधारा का प्रचार।**
2. **अध्यात्मवाद का, प्रभु से मिलने का मार्ग- दर्शन।**
3. **मतवादों पर प्रबल प्रहार।**
4. **जातिगत वर्ग-भेदों का समूल नाश।**
5. **धर्म के उदात्त स्वरूप का संरक्षण।**
6. **वेद-सत्यार्थ प्रकाश और ऋषि जीवन का विभिन्न भाषाओं में प्रसार।**
7. **अज्ञान-पाखंड का प्रबल खंडन।**
8. **संगठन, आर्य समाजें व संस्थाएं करें कार्य संचालन।**
9. **उपदेशकों की सेना को तैयार करें और दिया जाए उन्हें सर्वोच्च सम्मान।**
10. **संसार का प्रत्येक मनुष्य ईश्वर को माने, जाने और उससे मिले। संसार एक हो, एक राह पर चले, एक ढंग से सोचे और अनेकता मिटे।**

इन 10 सूत्री कार्यक्रमों को कौन चलाएगा? ऋषि के अनुयायी इस ओर कैसे, क्यों सोचेंगे? उनके पास बहुत बड़े-बड़े काम हैं। बड़े-बड़े लक्ष्य हैं, पर

हमारा प्रश्न है कि हम सबके बाद भी ऋषि का काम कौन करेगा? और सब कुछ छोड़कर कौन ऋषि के रेखाचित्रों में रंग भरेगा? पक्षपात का चश्मा आंखों से उतार कर हमारे विचार को पढ़िए और इनमें कहीं भूल हो, भ्रांति हो तो हमें बताइए। हम अपनी भूल सुधारने को तैयार हैं।

किन्तु.... यदि आपको कुछ ठीक लगे तो फिर... आइए, दयानन्द की सेना में कल से ही लग जाइए। **लाखों में वार करता है-सूरमा अकेला!!** एक दयानन्द का सैनिक एक-एक क्षेत्र का कायाकल्प कर सकता है। **ऐसा सैनिक जो दयानन्द महाराज के लिए अपने जीवन की भेंट चढ़ा सकता हो... कौन है? कहां है? खोज रहा हूं!!!!!!**

काम या नारे

देश की उन्नति के लिए आवश्यक है कि सभी अनवरत काम करें। श्रम की साधना ही प्रत्येक क्षेत्र में लक्ष्मी का वरदान बरसा सकती है। किन्तु **दुर्भाग्य! सर्वत्र काम के स्थान पर नारों की भरमार है।** मजदूर काम के समय नारे लगाते हैं, विद्यार्थी पढ़ने के स्थान पर नारे दोहराते हैं। **मंत्री से प्रधानमंत्री तक, नारों से देश को बहकाते हैं।** धर्म के प्रतिष्ठानों में भी नारे ही नारे हैं। **जो जितना बड़ा नारा जोरों से लगाता है वह उतना ही बड़ा नेता कहाता है।** नारों की गूंज में काम सब बन्द है।

ऐसा लगता है कि **'नारा'** ही आज के युग का मंत्र है। वही जीवन तंत्र है। राजनैतिक दल हों **या** धार्मिक संगठन, मजदूर सभाएं हों **या** साहित्यिक संसद, सभी नारों के बल पर चलते हैं, **और जब नेतागिरी नारों से मिलती है, तो कोई क्या बेवकूफ है जो काम का सिरदर्द मोल ले!** देश, धर्म, लक्ष्य रसातल में जाएं, **हमें क्या**? सब कुछ स्वाहा हो जाए **हमें क्या**? हम तो नारे लगाएंगे, लच्छेदार भाषणों से जनता को बहकायेंगे, वह हमारी जय-जयकार करेगी और मरेगी। हम जियेंगे और बढ़ेंगे। हम जिन्दाबाद फिर और की क्या चिन्ता? गाड़ी नारों पर चल रही है। आप भी सोचिए, आप कितने नारों के भक्त हैं? काम को ठुकराकर आकाश महल बन सकते हैं जमीन स्वर्ग नहीं हो सकती। **धरती को स्वर्ग बनाने के लिए नारे बेकार हैं, यह तथ्य जिस दिन समझेंगे, जिस दिन काम की पूजा होगी और नारे ठुकराए जायेंगे।**

जब रचनात्मक कामों का महत्त्व हमारे मन पर अधिकार जमायेगा तब हमारा भाग्योदय होगा। **संसार का कोई देश भाषण या नारों से आगे नहीं बढ़ा। जीवन के लिए प्रगति के लिए एक ही मार्ग है—काम और बस काम;** काम के महत्त्व को क्या हम समझेंगे? काम की महिमा को क्या हम जानेंगे? **काम की गरिमा कब पहचानेंगे**? या नारों की नगरी में ही खोए हम अपना सभी कुछ खो देंगे।

हम सब हिन्दू हैं

आपने इस अंक का मुख पृष्ठ देखा होगा, (**हिन्दू विशेषांक**) के उस पर ये शब्द **"हम सब हिन्दू हैं"** अंकित हैं। **हम अर्थात् भारत के सभी वासी** जो--"इस देश की धरती का वन्दन करते हैं, मां को, भारत मां को पूज्य वन्दनीय और पावन समझ वन्देमातरम् गाते हैं। गंगा-यमुना-सरस्वती की, वेद-गौ-गंगा-गायत्री के प्रति जिनकी निष्ठा है, जो समवेत स्वर में द्वारिका से निकोबार तक ही सारी **धरती पर फहराते राष्ट्रध्वज के प्रति समर्पित हैं, वे सभी हिन्दू हैं।"**

राम-कृष्ण की गाथाएं सुन जिनका मस्तिष्क गौरव से तन जाता है। प्रताप-शिवा का शौर्य वर्णन जिन्हें नवजीवन देता है। दर्शन-अध्यात्म-आत्मा-चिन्तन जिनके मानस में अमृत बरसाता है, जो भारत की मिट्टी के प्रत्येक कण पर हजार कोहिनूर न्यौछावर कर सकते हैं, वे सब हिन्दू हैं।

हम उन्हें भी हिन्दू कहते हैं, जिनका मानस भारत-पाक-युद्ध में भारत की विजय के समाचार से उछलता है, जो खेलों के प्रांगण में भारत की जय-ध्वनि पर तालियां बजाते हैं, जिनके घर-आंगन में प्यार के

मैं हृदय-मन्दिर से लिख रहा हूँ

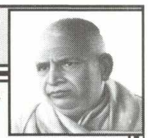

गीत और मिलन के राग स्वयं मचलते हैं–**जो गंगा की लहरों पर गूंजते संगीत के आरोहों-अवरोहों पर झूमते हैं, वे सभी हिन्दू हैं।**

मां की वन्दना में जो शीश कटा सकते हैं, अर्चना में सर्वस्व समर्पित कर सकते हैं, मां की पूजा में जो स्वयं को विस्मृत कर झूम-झूम जाते हों, **जो हिमगिरि के मुकुट पर त्रैलोक्य का साम्राज्य भी न्यौछावर कर सकते हों, वे सब हिन्दू हैं**।

ऐसे सभी राष्ट्रभक्तों को हम हिन्दू कह अपने को धन्य मानते हैं।

जो हिन्दू हैं, वह राष्ट्र भक्त हैं। जो राष्ट्रभक्त हैं, वे हिन्दू हैं। हिन्दू शब्द अब न जातिवाचक है, न किसी मत का प्रतीक। वह भारतीयता का प्रतीक है। वह ध्वज है उस पावन संदेश का, जिसके पीछे मातृभूमि के प्रति सिर कटाने की भावना है।

किन्तु **जो हिन्दू नहीं, वह देशभक्त नहीं**। मत परिर्वतन होते ही राष्ट्र भक्ति में परिवर्तन आ जाता है। इसलिए **हमने संकल्प लिया है कि हम भारत में किसी भी देशभक्त को देशद्रोही बन कर नहीं बढ़ने देंगे। विदेशी शक्तियां भारत को हड़पने की चेष्टा में धन-बल से षड्यन्त्र कर रही हैं**। किन्तु भारत के देशभक्त उनके कुत्सित चिन्तन को विफल करने के लिए कृत संकल्प होकर जुट गए हैं।

मेरी धरती की पावन माटी को कलुषित करने के लिए, **हिन्दू को हिन्दू का शत्रु बनाने का प्रयत्न सफल होना, क्या हम सबके लिए कलंक नहीं है?** क्या भौतिक साधनों से ईमान खरीदा जाएगा? क्या भारत का मानस चांदी के टुकड़ों पर टिक जाएगा? **क्या देश की धरती के बेटे विदेशियो की गर्हित चालों से विद्रोही बन अपनी मां को मृत्यु की ओर धकेलेंगे?**

इन प्रश्नों के साथ हम फिर यही संकल्प दुहराते हैं कि **नहीं, अब हम और नहीं रुकेंगे और एक भी हिन्दू को ईसाई या यवन नहीं बनने देंगे।**

हम हिन्दू हैं–हम राष्ट्रीय स्वर हैं। **हिन्दू सम्प्रदाय विशेष नहीं**। हिन्दुत्व राष्ट्र को पवित्र करने वाली गंगाधारा है। यह वह स्वर है, जो मां का बेटा मां को पुकारते हुए कहता है, मां... मां... **जो मां को मां कहता है, वह हिन्दू है**। आओ, हम उनकी वन्दना करें–हम उसकी अर्चना करें। **'राष्ट्र रक्षाम्' का मन्त्र हिन्दू ही गुंजा सकता है। वही गुंजाएगा और देश को बचाएगा।**

मेरी माँ रो रही है

अपने क्रन्दन से मेरी नींद खोल रही है!
रात के अंधेरे में, गहरी नींद में सोया था,
सब कुछ भूल कर, अपने में मस्त मैं,
जीवन की मीठी, थपकियां याद करता,
सपनों की दुनिया में खोया था!
लगा, कोई रो रहा है–
क्रन्दन के स्वर मेरे कानों में टकराए,
मैं उठ कर बैठ गया,
और फिर बाहर खोजने निकल पड़ा तो देखा–
माँ रो रही थी!
जी हाँ, मेरी माँ,
जिसने मुझे पाला था, बड़ा किया था।
खाने को अन्न, पीने को जल,
रहने को भूमि, और फल दिए थे।
जिस ने मुझे जन्म देकर दुलारा था,
प्यार की थपकियों से पुचकारा था,
सुख में दुःख में जो मेरे साथ हंसी-रोई थी,
वह आज अन्तर पीड़ा में त्रस्त थी, भयग्रस्त थी।
उसका रुदन सुन कर मैं कांप गया,
भूल गया सब कुछ, केवल स्मरण रहा,
माँ के आंसू कैसे रुकें,
वह कैसे हंसे? ताकि मैं भी हंस सकूं!
मेरे तन-मन में अब यही एक प्रश्न है,
यही चिन्तन कर ढंग खोज रहा हूँ!!!!
आप से भी पूछता हूँ कि–क्या आपने माँ का
रुदन सुना है??
क्या करेंगे आप? कैसे हँसेगी माँ?
उलझन है, कम्पन है, काश राह मिल पाती
और मेरी माँ मुस्कराती!!......

(पौष सम्वत् 2041 "जनज्ञान" से...)

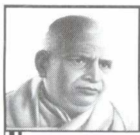

महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणी

मृत्यु निमन्त्रण

तुम जिन्दगी को बुलाओ,
मैं मौत को बुला रहा हूं।
अपनी मृत्यु को,
और उन सब को भी,
जिन्होंने जिन्दगी को जीते जी,
मार दिया है।
जिन्दगी मर जाए,
हम देखते रहें,
क्या इससे यह अच्छा नहीं है,
कि हम मर जाएं,
और जिन्दगी मुस्कुराए।
तूफान-आंधी-झंझा, सब आ रहे हैं।
जो वर्षों से सपने संजोए थे,
सब जा रहे हैं, कफन तैयार है—
गीता के लिए,
वेद-उपनिषद्—दर्शन के लिए।
इसलिए कहता हूँ,
तैयार कफन सिर पर बांध लो
और उन्हें बचाओ,
जिन्हें वे मारने की सोच रहे हैं।
आंसू कायर बहाते हैं,
खून आंखों में उतारो, मेरे वीर!
चूड़ियाँ मत पहनो, तोड़ दो उन्हें,
और हथकड़ियां सजाकर,
उन काली रातों का स्वागत कर,
प्रकाश की किरणें ढूंढ कर लाओ।
चांदनी रात में उल्लू बोलें,
सूरज के साए में अन्धेरा नाचे,
हिमालय पर आग बरसे,
और सागर शान्त हो जाए,
इससे पहले तुम खड़े हो जाओ,
और मेरी कल्पनाओं को स्वर देकर,
मंझधार को किनारा दे दो!!!
जो सपने हैं उनके टूट जाएं,
भले ही सब रुठ जाएं, पर मेरे सपने न टूटें—
क्योंकि मेरे सपने टूट गए तो...
गंगा का पानी जहर बन जाएगा!!!
सोमनाथ से अजान उभरेगी—
बद्रीनाथ पर क्रास लगेगा,
कृष्ण क्राइस्ट का रूप धरेगा,
तब तुम जीकर क्या करोगे????
तो मरना तो है, पर सड़क पर, दबकर न मरो!!
उभरो और "पांचजन्य" को गुंजाओ।
"सुदर्शन चक्र" का दर्शन कराओ,
शिवा की "भवानी", प्रताप का "भाला",
सब जंजालों पर कहर बन टूटे,
मेरा सपना है पर—यह न रूठे,
तुम क्या सोच रहे हो मेरे प्राण!!!
बृहन्नला या अर्जुन?? जयचन्द या पृथ्वीराज??
शक्तिसिंह या प्रताप???
किसके सिर पर बांधोगे ताज??
जवाब दो या मरने की तैयारी करो.......
(आषाढ़ सम्वत् 2035 "जनज्ञान" से...)

वेद प्रचार एवं गौशाला में प्राप्त सहयोग राशि

श्रीमती मीनाक्षी सोबती—लाजपतनगर	31,000 रुपए
श्रीमती शशिबाला छाबड़ा—रोहिणी	25,000 रुपए
श्री सत्यानन्द आर्य—पंजाबी बाग	15000 रुपए
आर्यसमाज—गोंदिया	1000 रुपए
आर्यसमाज—सीताराम बाजार (गुप्तदान)	500 रुपए
श्री विद्या नरुला—दिल्ली	500 रुपए
श्री प्रेमवल्लभ—कोशिक एन्कलेव	500 रुपए
श्री रविन्द्र कुमार—पानीपत	400 रुपए
श्री इन्द्रदेव गुलाटी—बुलन्दशहर	250 रुपए

—सभी दान दाताओं का हार्दिक धन्यवाद

॥ ओ३म ॥

॥ जिसके घर में वेद नहीं वह हिन्दू का घर नहीं॥

''परमात्मा'' की
दिव्य-सनातन वाणी

ऋग्वेद

सामवेद

यजुर्वेद

अथर्ववेद

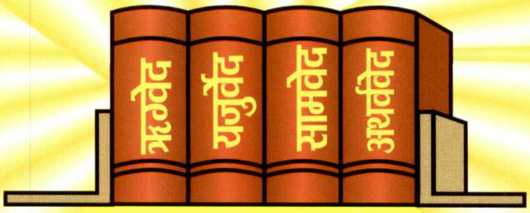

चारों वेद
का सरल, रोचक हिन्दी भाष्य

प्रसारार्थ लागत मूल्य-रू. २८००/-

मन्त्र-शब्दार्थ-छन्द-स्वर, ऋषि-देवता आदि विवरण सहित २३ ३६ सें.मी. साइज में कुल पृष्ठ-२२००, बढ़िया सुनहरी जिल्दें। वजन प्रायः ८ किलो। सुन्दर मुद्रण।

श्रेष्ठ बढ़िया कागज पर लागत मूल्य-३६००/- रूपये

कृपया आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

VEG गुलाटी®
स्वस्थ आहार - शाकाहार

with all new ambience...

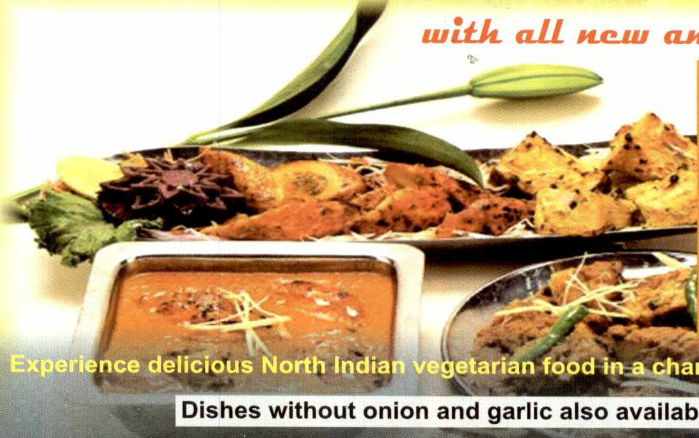

स्वस्थ आहार शाकाहार प्राचीनतम भारतीय विधि के अनुरुप आयुर्वेदिक गुणों से भरपूर, प्राकृतिक मसालों (Natural Herbs) से निर्मित भोजन, आज के समय में तनाव से मुक्ति का श्रेष्ठ उपाय है

Experience delicious North Indian vegetarian food in a charming ambience!

Dishes without onion and garlic also available

8, Pandara Road Market, New Delhi
Tel.: 23388830 / 62, Email : veggulati@gmail.com Website : veggulati.com

जनज्ञान मासिक के सभी पाठकों को 10 प्रतिशत की विशेष छूट, सम्पर्क करें 8459349349

वार्षिकोत्सव : स्वामी दयानन्द संस्थान – दिनांक 15 मार्च

(समयः प्रातः 9:00 से अपराह्न 2:00 बजे)

एवं

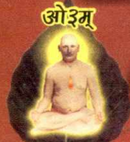

महात्मा वेदभिक्षुः जयन्ती समारोह–14 मार्च

(समयः प्रातः 9:00 से 11:00 बजे)

दिनांक 12 मार्च से 2015 15 मार्च 2015

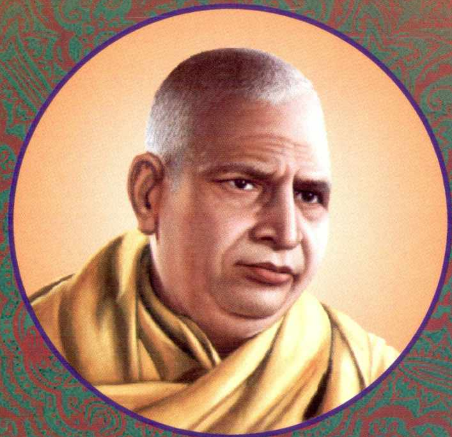

स्थानः वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम,
इब्राहीमपुर (केशव नगर) दिल्ली–36

में आप सपरिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं

उद्घाटन : श्री कैलाश सत्यार्थी

–निवेदक–

रिखबचन्द जैन स्वागताध्यक्ष	**नन्दप्रकाश थरेजा** संरक्षक स्वामी दयानन्द संस्थान सहयोग मण्डल	**राकेश रानी** अध्यक्ष स्वामी दयानन्द संस्थान
सत्यानन्द आर्य स्वागत मन्त्री	आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश दधीचि देहदान समिति	**दिव्या आर्य** संयोजक

महात्मा वेदभिक्षुः जयन्ती एवं दयानन्द संस्थान का वार्षिकोत्सव

मान्यवर बन्धु/ भगिनी!

हमारे प्रेरणा स्रोत और महर्षि दयानन्द के पथ के अप्रतिम अनुगामी महात्मा वेदभिक्षुः (पं. भारतेन्द्र नाथ) ''चारों वेदों के हिन्दी भाष्य'' के विश्व के प्रथम प्रकाशक, दयानन्द संस्थान, जनज्ञान (मासिक) एवं वेद मन्दिर, दिल्ली-36 के संस्थापक महान मनीषी, चिन्तक, प्रमुख लेखक व निर्भीक पत्रकार तथा ओजस्वी वक्ता की 87वीं जयन्ती, उनकी तपोभूमि-आराधना स्थली 'वेद मन्दिर' में आयोजित की जा रही है, जिसमें आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में आप सपरिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।'

बृहस्पतिवार 12, 13, 14 मार्च, 2015

यज्ञ-प्रातः 8.00 बजे से 9.00 बजे तक

यज्ञ के ब्रह्मा होंगे–डॉ वीरपाल वेदालंकार
(यह क्रम 14 मार्च तक चलेगा)

शनिवार 14 मार्च, 2015

युवा गोष्ठी एवं महिला संगोष्ठी

प्रातः 9 से 11 बजे तक

विषयः युवा शक्ति और राष्ट्र निर्माण तथा इसमें नारी की भूमिका

अध्यक्ष	:	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम
विषय प्रवर्तन	:	डॉ. वीरपाल वेदालंकार
मुख्य अतिथि	:	श्रीमती शकुन्तला आर्या (पूर्व महापौर)
विशिष्ट अतिथि	:	श्रीमती नूतन हर्षवर्धन श्री चतर सिंह नागर (महामन्त्री दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल)
प्रमुख वक्ता	:	डॉ. गोविन्द वल्लभ जोशी, श्री जितेन्द्र भाटिया (कोषाध्यक्ष, आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश) श्री सुरेन्द्र आर्य (मन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा)
मुख्य वक्ता	:	श्री सन्दीप आहूजा (अध्यक्ष अखण्ड हिन्दुस्तान मोर्चा) डॉ. शोभा बिजेन्द्र (पार्षद) डॉ. विवेक आर्य

रविवार 15 मार्च, 2015

वेदगोष्ठी

(प्रातः 9:00 बजे से 10:15)

अध्यक्ष : डॉ. विद्यासागर वर्मा (पूर्व राजदूत)
विषय प्रवर्तन : आचार्य ऋषिदेव
विशिष्ट अतिथि : डॉ. नरेन्द्र कुमार मेहरा
(राष्ट्रीय प्रोफेसर एवं पू. डीन एम्स)
प्रमुख वक्ता : डॉ. रघुवीर वेदालंकार
मुख्य वक्ता : डॉ. महेश विद्यालंकार
डॉ. ज्ञानचन्द्र, डॉ वीरपाल वेदालंकार

महात्मा वेदभिक्षुः जयन्ती एवं राष्ट्रीय चेतना सम्मेलन

(प्रातः 10:15 बजे से अपराह्न 1:30 बजे तक)

विषयः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में चुनौतियाँ और उनका निदान

वैदिक राष्ट्रगीत

अध्यक्षः : अध्यक्षः डॉ. श्याम सिंह शशि (पद्मश्री)
विषय प्रवर्तन : दिव्या आर्य
मुख्य अतिथि : डॉ. हर्षवर्धन (केन्द्रीय मन्त्री)
प्रमुख अतिथि : श्री अश्विनी कुमार चौबे (सांसद), श्री विजय कुमार मल्होत्रा
श्री भगत सिंह कोशियारी (पूर्व मुख्यमन्त्री, उत्तराखण्ड)
विशिष्ट अतिथि : श्री मनोज तिवारी (सांसद), श्री बिजेन्द्र गुप्ता (विधायक)
प्रमुख वक्ता : श्री राम समर्थ सद्गुरुदेव आचार्य स्वामी श्री धर्मेन्द्र जी महाराज
स्वामी सम्पूर्णानन्द, डॉ. योगानन्द शास्त्री
मुख्य वक्ता : महन्त योगी आदित्यनाथ (सांसद), डॉ वेद प्रताप वैदिक
काव्य पाठ : डॉ. सारस्वत मोहन मनीषि, श्री विजयगुप्त

सम्मेलन में विशिष्ट सेवाओं के लिए तीन आर्यजनों को 'कर्त्तव्यनिष्ठ आर्य' सम्मान से सम्मानित किया जायेगा।

धन्यवाद ज्ञापन : दिव्या आर्य

संयोजक-समिति

इन्द्रप्रस्थ विश्व हिन्दू परिषद्
श्री अनिल चौधरी (स्टार इन्फ्रा डिज़ाइन प्रा. लि.)
श्री उत्तम कुमार आर्य, श्री गणेशदास गोयल
(नया बांस आर्य समाज)
शर्मा पनीर भण्डार एण्ड स्वीट्स (बुराड़ी चौक)
श्री रवीन्द्र कुमार शर्मा (गाज़ियाबाद)
श्री विशम्भर दयाल शर्मा, श्रीमती विजय शर्मा
श्री डी.आर.आर्य, श्री बाबूराम आर्य
(बाजार सीताराम आर्य समाज)
श्री आदर्श भल्ला-शशि भल्ला (वेद मन्दिर)
श्री अरविन्द मोहन (अरविन्द चेतना समाज)
श्री के.के. शुक्ला, श्री ए.के. मल्होत्रा(कालकाजी)
श्री राजवीर सिंह तंवर
(आर्य समाज श्रीनिवासपुरी)
आर्य समाज नौएडा सैक्टर-33,
आर्य समाज करौलबाग
श्री महेन्द्र आर्य
(प्रधान आर्य समाज, औचन्दी)
आर्य समाज न्यू रोहतक रोड
श्री सुबोध कुमार (गाजियाबाद)

श्रीमती शकुन्तला आर्य
(आर्य समाज दरियापुरकलां)
ओम प्रिन्टर्स
श्री रवीन्द्र चौधरी (आर्य समाज, पूंठखुर्द)
श्रीमती प्रभा खुराना
(डिफेन्स कॉलोनी आर्य समाज)
श्री विनय कुमार सिंघल एडवोकेट
श्री कन्हैया लाल आर्य (आर्य समाज गुड़गाँव)
श्री श्रीपाल सिंह आर्य
(आर्य समाज, गाजियाबाद)
आर्य समाज दीवानहॉल
श्री सत्यपाल भाटिया (आर्य नगर)
श्री रोशन कंसल (आदर्श नगर)
अखण्ड हिन्दुस्थान मोर्चा
आर्य समाज मॉडल बस्ती, दिल्ली
अखण्ड हिन्दुस्थान मोर्चा
महर्षि दयानन्द गो सम्वर्धन केन्द्र
श्री राज खुराना (मॉडल टाउन)
श्री प्रमोद पाण्डे-श्रीमती पूनम शर्मा (वेद मन्दिर)
ह्यूमन केयर चैरिटेबल ट्रस्ट

कार्यक्रम की सफलता हेतु अधिकाधिक सहयोग राशी चैक/ड्राफ्ट/ अथवा मनीआर्डर द्वारा प्रेषित कर सकते हैं। अथवा आप सहयोग राशी सीधे यूनियन बैंक दिल्ली में खाता नं. 307902010054434 IFSC:UBIN 0530794 में जमा करा सकते हैं। बैंक में जमा की गई राशि की रसीद की प्रतिलिपि हमें अवश्य भेजें।

वेद मन्दिर पहुँचने का मार्ग : अन्तर्राज्जीय बस अड्डा तथा किंग्जवे कैम्प (जी.टी.बी. नगर) से बस नं. 192, 162, 143, 105 द्वारा केशव नगर बस स्टैण्ड, वेद मन्दिर पहुँचें।
किंग्जवे कैम्प (जी.टी.बी. नगर) से ग्रामीण सेवा (नत्थुपुरा मोड़ तक) उपलब्ध है।
(नत्थूपुरा मोड़ से वेद मन्दिर एक किलोमीटर है। जहाँ से रिक्शा, टैक्सी आदि की भी सुविधा उपलब्ध रहती है।)
चलभाष : 08459349349, 9810257254

With Best Compliments

From

Amit Maheshwary

SOMANI FABRICS

A-5, Lal Kothi Commercial Complex
Tonk Road, JAIPUR - 302015 (INDIA)

TEL : 91-141-4040071/2743426
FAX : 91-141-5105371
E-mail: somani@somanifabrics.com
Website: www.somani-fabrics.com

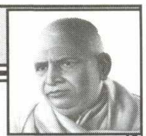

तुम क्या सोचते हो?

तुम कौन हो?

जो करते हो उससे तुम्हें क्या मिलता है? कितना आनन्द और शान्ति तुम्हें मिली? सोचो और अपना रास्ता बदलो। **जिस रास्ते पर चलने से दु:ख न मिले, वह धर्म है।** धर्म एक ही हो सकता है और वह न बदलता है, न मिटता है। **धर्म में देश, काल व्यक्ति की सीमाएं नहीं आतीं।**

धर्म का रास्ता, परमात्मा का बताया रास्ता है। जो उस पर चलता है, परमात्मा का प्यार उसे मिलता है। **दुनिया के बनाने के साथ ही परमात्मा ने मनुष्य को धर्म का रास्ता भी बताया, वह रास्ता भूलने से दु:ख पैदा हुए।**

हमारा आग्रह है कि-भूले हुए उस रास्ते को फिर खोजो!! खोजने और परखने पर, सच्चायी तुम्हें मिल जाएगी। देखो... **परमात्मा का रास्ता वेद की ऋचाओं में आज भी प्रकाश की किरणें फैलाता, हमें बुला रहा है।** उसे देखो.. तुम्हारे सारे दु:ख मिट जाएंगे।

हमारे साथ आओ

समय, काल और देशों की सीमाओं के पार जाकर हम अपने को देखें तो सम्पूर्ण धरती हमें एक परिवार दिखायी देगी। **ऐसा परिवार, जिसमें 300-400 करोड़ मनुष्य रहते हैं। सबकी समस्याएं, आवश्यकताएं और लक्ष्य एक हैं।**

किन्तु मत-वाद-देश की दीवारों ने हमारे चिन्तन में बाधा उपस्थित कर दी है। हम परिवार की दृष्टि से सोचना भूलकर बंटे हुए ढंग से छोटे दायरों के ढंग सोचने लग गए हैं। हमारा जीवन सत्य को भूल चुका है। **असत्य को ही सत्य समझ हम एक ऐसे चक्कर में फंस गए हैं कि दु:ख और कष्ट हमें जीवन के आनन्द से दूर ले जा रहे हैं।** हम उस सत्य के प्रसारक हैं जो सभी को मनुष्य बनाता है। जो अपने मन में आनन्द की धारा बहाता है। **सारे बन्धन तोड़कर दु:खों को जड़ से नष्ट कर देने के लिए हम संसार के सभी मनुष्यों को प्रकाश का सच्चा रास्ता बता रहे हैं।** हमारे साथ आओ! आपके सारे दु:ख मिट जाएंगे।

सबसे कह दो

जो भी इन पंक्तियों को पढ़ें वह दुनिया के हर आदमी तक यह संदेश पहुंचा दें कि-**भारत में फिर एक बार सच्चे ज्ञान की ज्योति उभरी है। ईश्वर का संगीत फिर से एक बार गूंज उठा है। जीवन का अन्धेरा अब दूर होने वाला है।**

स्वर्ग की कहानियां आपने सुनी थीं। अब हम इसी धरा को स्वर्ग बनाएंगे। पाप को मिटाएंगे और ऐसे गीत गाएंगे कि सभी अपने दु:ख भूल जाएं। **एक महापुरुष ऋषि दयानन्द ने हमें परमात्मा की वाणी 'वेद' के ज्ञान से परिचित करा दिया है। वह ज्ञान का समुद्र, धरती को पवित्र कर देगा।** हम अब एक सच्चाई के रास्ते पर चलने का संदेश लेकर निकले हैं। हम इस दुनिया को नई दुनिया बनाने चले हैं।

आओ! सबसे कह दो हम अब कहीं अज्ञान का अन्धेरा नहीं रहने देंगे!

हम कौन हैं?

आप पूछ सकते हैं कि हम कौन हैं? हमारा उत्तर होगा कि हम हैं परमात्मा के पुत्र, जो संसार से शैतान की हस्ती मिटाना चाहते हैं। हम दुनियां के प्रत्येक मनुष्य से प्यार करते हैं। हम हर मनुष्य का भला चाहते हैं। कोई हमारा दुश्मन नहीं है। हम सभी को अपना भाई मानते हैं। **परमात्मा के सच्चे ज्ञान का प्रकाश धरती पर फैलाना हमारा लक्ष्य है।** मनुष्यों को ईश्वर का पुत्र बनाना हमारी इच्छा है। हम वह ज्ञान दे रहे हैं जिसकी छाया में हिंसा, द्वेष, झूठ और युद्ध का जहर सदा के लिए मिट जाएगा। **भारत के एक महान् पुरुष स्वामी दयानन्द के हम शिष्य हैं। जिन्होंने मनुष्य मात्र को प्यार करने का, सभी की भलाई में अपनी भलाई समझने का उपदेश दिया।** उसी के शिष्य हम सारी दुनिया में प्यार बांटने निकले हैं। दु:ख मिटाना और आनन्द फैलाना हमारा लक्ष्य है।

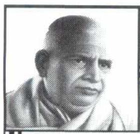

महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणी

लक्ष्य क्या हो?

कांग्रेस का लक्ष्य ठीक नहीं है। **समाजवाद द्वारा राष्ट्र को उठाया नहीं जा सकता, भूदान और साम्यवाद के मार्ग जन-जन का कल्याण नहीं कर सकते।** प्रश्न उठता है कि यह नहीं तो क्या हो?? इसी का **उत्तर हम ने आज देना है।**

निर्माण की ओर जाते हुए ***पहला प्रश्न*** जो सम्मुख आकर खड़ा होता है? वह यह है कि-**'हमने निर्माण करना किसका है?'** मकानों का, सड़कों का, शहरों का, मिलों का या मनुष्यों का? आज के सारे वाद मकानों, कारखानों और अन्य उत्पादन साधनों के निर्माण और उन्नति के लिए नियम बनाते हैं और चाहते हैं कि मनुष्य ऐसा बन जाए जिससे ये सब उन्नति करते रहें। किन्तु हम जिस व्यवस्था द्वारा समाज का निर्माण करना चाहते हैं **इनमें इन सब लौकिक साधनों को मनुष्य के लिए ढाला जाएगा, न कि मनुष्य को इनके लिए।** मनुष्य स्वस्थ हो, बुद्धिमान हो, कर्त्तव्यपरायण हो, शान्त हो, सच्चरित्र हो। उसके लिए क्या-क्या चाहिए, जिसके द्वारा वह ऐसा बने या ऐसा बना हो तो ऐसा ही रह सके, **ऐसी व्यवस्था हमने स्थापित करनी है।** व्यक्ति की उन्नति, व्यक्ति का विकास, व्यक्ति की समृद्धि, व्यक्ति का चरित्र बल-वर्द्धन हमारे समाज निर्माण का आधार है। हम चाहते हैं कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के मार्ग द्वारा समाज का निर्माण हो। संसार के समस्त वाद-**चाहे वह समाजवाद हो या साम्यवाद**-सभी केवल अर्थ और काम की भावना पर समाज का निर्माण चाहते हैं। यह तो हम भी मानते हैं कि अर्थ और काम के बिना जीवन की गाड़ी नहीं चल सकती किन्तु साथ ही **हमारा यह भी विश्वास है कि जीवनरूपी पहियों का सन्तुलन बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं-धर्म और मोक्ष की कीलें, जो पहियों को निकालने न देकर गाड़ी को गिरने से बचाए।**

धर्म वह है जिससे अनुप्राणित होकर हम संसार के समस्त कार्यों को करते हैं। **हिन्दू-मुस्लिम- बौद्ध-ईसाई-सिक्ख ये सब धर्म नहीं है,** अपितु धर्म के कलंक हैं। सत्य बोलना, चोरी न करना, **किसी को न सताना, सब से प्रीति-पूर्वक व्यवहार करना धर्म है।** क्या इसके बिना कार्य चल सकता है? **दूसरे शब्दों में कहें** तो कह सकते हैं कि-'**धर्म** वह प्रेरक भावना है जिसके द्वारा मनुष्य अर्थ और काम में सन्तुलन स्थापित रखता है!' अर्थ संचय का प्रकार और उपयोग, काम अर्थात् मोह की, लगाव की, अपनत्व की भावना किस सीमा तक अनिवार्य व लाभप्रद है इसका निर्देशन भी धर्म द्वारा ही सम्भव है। **अन्य वादों में अर्थ और काम को ही सब कुछ मान इन्हीं की तुष्टी के लिए मनुष्य सब कुछ करता है, किन्तु हमारे प्रकार में अर्थ और काम का प्रेरक-निर्देशक धर्म रहता है। धर्म की प्रेरणा, अर्थ की शक्ति और काम की भावना तीनों का लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति माना गया है।**

आज के पाश्चात्य विचारों से प्रभावित लोग भले ही इस लक्ष्य को मजाक का रूप दें डालें किन्तु तथ्य यह है कि **आत्मा की शक्ति और गति से वे भी इन्कार नहीं कर सकते।** महात्मा गांधी के पास कौन-सी शक्ति थी जिसने संसार के एक बड़े साम्राज्य को हिला कर रख दिया। कठिन तूफानों में भी अडिग रहने का बल व्यक्ति को कहां से मिलता है? और **थोड़ा सोचिए तो, यह चलती-फिरती काया कैसे एक क्षण में निष्प्राण हो जाती है? संसार का समस्त विज्ञान क्यों उसकी रक्षा करने में असमर्थ रहता है?** इन प्रश्नों के उत्तर आज के ये भोगवादी वाद नहीं दे सकते। **कौन बता सकता है कि संसार के सारे भोग प्राप्त कर भी मनुष्य अशांत क्यों रहता है।** दीन-हीन निर्धन की कुटिया में भी शांति क्यों कहीं-कहीं विराजमान पायी जाती है?

> ***हम संसार के समस्त विचारकों को बलपूर्वक चुनौती देते हुए कहना चाहते हैं कि जब तक धर्म-अर्थ-काम का लक्ष्य मोक्ष अर्थात् आत्मा की भूख-प्यास मिटाना न बनेगा, तब तक संसार में शान्ति स्थापना का स्वप्न, स्वप्न ही रहेगा।***

शरीर एक कमरा है, आत्मा इसके अन्दर रहने वाला मनुष्य है। **हम यदि किसी कमरे में किसी मनुष्य को बन्द कर दिन-रात कमरे को ही सजाते रहें, अन्दर रहने वाले मनुष्य की भूख-प्यास मिटाने का उपाय न करें तो क्या कोई भी शान्त बैठ सकेगा?** बिल्कुल यही अवस्था हमारी है। **हमने आत्मारूपी मनुष्य को शरीर रूपी कमरे में बन्द कर दिया। दिन-रात शरीर को सजाने में लगे रहे। आत्मा की भूख-प्यास मिटाने की कभी चिन्ता न की,** परवाह न की; परिणामस्वरूप संसार में अशान्ति का साम्राज्य छाया हुआ है।

मैं हृदय-मन्दिर से लिख रहा हूँ

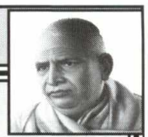

संसार अंधकार में पड़ा है, गलत मार्ग पर चला जा रहा है, केवल रोटी-कपड़े की समस्या सुलझा कर शान्ति स्थापित करने का यत्न कर रहा है। किन्तु ये सब प्रयत्न असफल सिद्ध होंगे यदि हम आत्मा की भूख-प्यास मिटाने का उपक्रम न करेंगे। इतना विचार कर यदि हम जीवन के बारे में सोचेंगे तो हमारा हर बात के बारे में सोचने का दृष्टिकोण ही बदल जाएगा। **दृष्टिकोण का यह परिवर्तन संसार में एक अभिनव महा-क्रान्ति का सूत्रपात करेगा,** जिसकी अविलम्ब आवश्यकता है। **संसार के सब मतों-मजहबों और वादों की समाप्ति हमारा लक्ष्य है।** हमारा दावा है कि आदि से संसार में दो मार्ग, दो वाद, दो धर्म, दो पक्ष रहे हैं और आज भी केवल दो ही हैं। **इन दो पक्षों में विनाश का और एक निर्माण का प्रतीक है।** आदि से आज तक संसार बंटा है। **इन दो में से एक आज विनाश पक्ष की वृद्धि है, उसका साम्राज्य है।** हम इसे समाप्त कर निर्माण पक्ष को बल देना चाहते हैं।

क्या आप हमारा साथ देंगें???.............

(दैनिक "आर्यमित्र" लखनऊ, 11 मई 1955)

अमरत्व का संदेश

निराशा मृत्यु का पूर्व रूप है। इसका आगमन सर्वनाश का निमन्त्रण है। इसलिए एक क्षण के लिए भी निराशा को पास न फटकने दो। आशा का स्वागत करो। **कर्मठ बनो, कर्म करो।** विजय निश्चित है। त्याग, तप, कर्म और आशा मिलकर जो चाहें कर सकती हैं। इसलिए **हारने पर भी निराश होना छोड़ दो अपितु और भी अधिक उत्साह से कर्म में लगो।** बार-बार प्रयत्न करो, सफलता तुम्हारे चरण चूमेगी।

कार्य यदि शुभ है, उद्देश्य यदि पवित्र है, कर्म यदि निरन्तर है तो फिर कौन असफलता देगा? भाग्य? वह तो एक छलना है। भाग्य हमारे पीछे दौड़ता है। आप स्वयं उस के निर्माता हैं। आप उससे भयभीत क्यों हो? कायर नहीं, वीर बनकर धरती पर राज्य करो। सुख-साधन तुम्हारे चरणों पर न्यौछावर होंगे। तुम सफल होंगे।

बस.... **आशा को साथ ले लो, निराशा शब्द को मस्तिष्क से निकाल दो। फिर जिधर चाहो चल पड़ो, कल भी तुम्हारा होगा, और आज भी।**

सब तुम्हारे सौभाग्य को देख कर मुदित होंगे। सफलता पाकर भी नम्र रहना, कर्म करते जाना, बढ़ते जाना। स्वर्ग तुम्हारा होगा।

परमात्मा सर्वत्र है। वह हममें भी है और तुम में भी। हम, तुम, वे और सब परमात्मा के व्यापक होने से एक हैं।

परमात्मा हमारे पास है। पर हम परमात्मा नहीं हैं। हम सबकी पृथक् सत्ता है। अत: सब पृथक्-पृथक् हैं।

यह अनेकता एकता में बदले इसके लिए आवश्यकता है परमात्मा का सामीप्य, उसका दर्शन। वह सर्वत्र है, पर हम उसे ग्रहण नहीं करते, इससे हम अलग-अलग हैं। किन्तु जो अपने में परमात्मा का साक्षात्कार करने की स्थिति में हो जाते हैं। वे सब परमात्मा के कारण एकता की डोर में बंध जाते हैं।

पृथक् होते हुए भी परमात्मा का सामीप्य हमें एक बना देता है। **हमारा लक्ष्य, अनुभूति और चिन्तन एक हो जाते हैं** और इस सिन्धु के पाने से हम अमरत्व के पथिक बन अपने को एक ही पथ का पथिक मान लेते हैं। तब प्यार उमड़ता है, स्नेह उभरता है। द्वेष और ईर्ष्या का लेश भी मिट जाता है। वस्तुत: **परमात्मा ही वह शक्ति है, जो मनुष्य को भेद-भावों से पृथक् कर सकती है।**

मन की कोमल घाटियों में जब प्यार का सितार बजता है, जब मादक गीतों के स्वर अमृत का निर्झरन ले कर उपस्थित होते हैं, जब प्रिय से मिलन की स्मृति अपूर्व आनन्द की धारा बन समस्त कलुष और काल की अंधेरी नींव को कहीं दूर उस पार भेज देती है, तब प्रियतम विहान की प्रथम किरण-सा उषा की रंगीन रश्मियों के साथ मुझे—मेरे अस्तित्व को जागृत कर जो उदात्त भावनाएं देता है उन्हें लिखने में मैं अपने को असमर्थ पा रहा हूं।

जानता हूं केवल यह कि-मेरा प्रभु जब मुझ में ज्ञान जागृत कर अपने स्वरूप का दर्शन कराता है, तब **मैं प्यार का सरोवर बन जाता हूं और तब मैं सबको अपना अनुभव करने लग जाता हूं। एकता के मन्त्र का प्रथम साक्षात्कार मुझे तभी होता है, जब मैं अपने प्रिय परमात्मा को देख लेता हूं।**

तभी मैं अपने को जानता हूं, तभी धरती का सत्य मेरे सम्मुख साकार होता है। अन्यथा उसे भूल कर धरती पर रहना तो ऐसा ही है जैसे नेत्रहीन हो कर सड़क पर चलना। **प्रभु मेरी ज्योति है, वह मेरी दृष्टि है। वही मुझे सत्य के समीप ला सकता है। मेरा वह प्रियतम कितना प्यारा है। कितना महान्, कितना मीठा!**

काश, हम अनुभव कर पाते......!

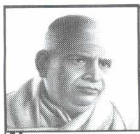

क्या आपको ऋषि दयानन्द से प्यार है?

बहुत सीधा-सा प्रश्न आपसे पूछ रहा हूँ, और यदि आपका उत्तर हां में हो तो हमारा दूसरा प्रश्न है कि **बताइए, आपने ऋषि के मन्तव्यों के प्रसार के लिए क्या किया?** हम कहते बहुत कुछ हैं, भाषण भी देते हैं और उपदेश भी, योजनाएं भी बनाते हैं और प्रस्ताव भी, किन्तु संसार के 200 करोड़ व्यक्तियों तक दयानन्द की बात पहुंचाने के लिये हम क्या करते हैं?

बहुत खोजा है हमने... पर बड़े-बड़े नेताओं को, भाषणों के अतिरिक्त और कुछ करते नहीं पाया। बड़े-बड़े आर्य धनपतियों के पास खुशामदी व्यक्तियों के लिए हजारों रुपये हैं पर दयानन्द के लिए एक पैसा नहीं। नारे और नारे, भाषण और भाषण, बातें और बातें हमारे लक्ष्य की चरम सीमा बन गयी हैं।

आर्यसमाज संगठन दयानन्द का उत्तराधिकारी न रहकर अपने आपमें एक लकीर पीट रहा है। नेता-धनपति और अधिकारी सदन को सम्भालने में जीवन की बाजी लगा चुके हैं और ऐसे में हमारा मन दयानन्द के सन्देश को धरती पर फैलाने के लिए मचल रहा है।......

इच्छा जाग रही है कि **सारी धरती को ''दयानन्द-मय'' बना दूं.......दयानन्द की इच्छा पूरी करने में एक-एक पल की देरी सहन नहीं है।** सारी धरती पर ऋषि का सन्देश फैलाने की उद्दाम कामना मन में उभर चुकी है—कौन देगा इस इच्छा का साथ...विश्व क्रान्ति में कौन देगा अपनी आहुति?

—आर्य विचारधारा का साम्राज्य स्थापित करने के लिए कौन जीवित चिता में जलने को तैयार है? वेद सन्देश फैलाने के लिए कौन आएगा? सत्यार्थ प्रकाश का प्रकाश कौन फैलाएगा?

आज की आर्य समाजें, नेता, अधिकारी, इनसे आशा करना मूर्खता है। **हमने बड़े-बड़े आर्यदानियों को सत्यार्थ-प्रकाश के लिए मुंह सिकोड़ते पाया है। भारत की बड़ी आर्यसमाजों में ऋषि जीवन फैलाना व्यर्थ का कार्य लगता है।** आर्य नेता इस ओर ध्यान देना मूर्खता मानते हैं—सारा आर्यसमाज का बल आज दयानन्द के लक्ष्य विस्तार में न लगकर स्वार्थ पोषण में लग रहा है। इस स्थिति को देख कभी-कभी सोचते हैं, क्या सचमुच यही ऋषि दयानन्द के भक्त है? **यदि भक्त ऐसे होते हैं तो विरोधी कैसे होंगे?**

और इस काली-काली निराशा घटा के मध्य है खड़ी आशा किरण—**आर्य जनता, जो निर्धन होते हुए भी ऋषि के लिए सर्वस्व दे सकती है, देती है।** इस जनता के बल पर आर्य सिद्धान्त और दयानन्द के दिव्य स्वप्न पूरे हो सकते हैं.....**बस यही आशा किरण भविष्य निर्माण का आधार है।** आप हमसे सहमत हों या न हों पर कोई ऋषि दयानन्द का भक्त इस बात से इन्कार नहीं कर सकता कि आज समय आ गया है **कि हम रास्ता बदलें और अपनी सारी शक्ति उस काम में लगाएं जो गुरुदेव दयानन्द को इष्ट था।**

हमारी दृष्टि में आर्यसमाज के प्रत्येक सदस्य को, अधिकारी और नेता को, दानी को, निर्धन को, धनी को अपनी सारी शक्ति लगानी चाहिए—वैदिक विचारधारा के प्रचार में—**1. सत्यार्थप्रकाश, 2. ऋषि दयानन्द का जीवन, 3. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, और 4. वेदभाष्य को।** संसार के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचना चाहिए। **यही हमारा काम है। यही आर्यसमाज का लक्ष्य है।**

हम कहने में नहीं करने में विश्वास रखते हैं। ऋषि जीवन और सत्यार्थप्रकाश के प्रचार का संकल्प हम ले चुके हैं। सच्चे ऋषि भक्तों के बल पर हम इन्हें आपके समक्ष बांटने के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं। पर नेताओं और आर्यनेताओं के अधिकारियों की नींद नहीं खुल रही।

नींद कैसे खोली जाए?—दयानन्द के अनुयायियों को कैसे दयानन्द का भक्त बनाया जाए?—कैसे उनके मन में तड़प पैदा हो?—कैसे वे सर्वस्व देकर भी दयानन्द का काम पूरा करने में लगे...

शिवरात्रि पर इन प्रश्नों का उत्तर आपको देना है। प्रभु के विश्वास पर साधना के नाम पर हम चल रहे हैं और चाहते हैं कि सारा आर्य जगत् पूरी शक्ति से हुंकार कर सिंह के समान उठे और **''सत्यार्थ-प्रकाश''** के प्रकाश से धरती का अन्धेरा भगा दे। आर्य बन्धुओं! सोचो समझो और विचार करो। टटोलो अपने-अपने हृदय को और सोचो अपना कर्त्तव्य। तुमने दयानन्द का नाम लिया पर बताओ तुमने दयानन्द के लिए क्या किया....?

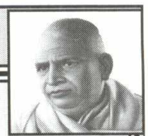

हवा गाए, दयानन्द की जय, सूरज सुनाए, दयानन्द की जय, वर्षा गुंजाए, दयानन्द की जय...

हर घर दयानन्द का भक्त बने, धरती ऋषि के गीत गाये, इसके लिए जो कुछ भी कर सकते हो करो। **मरो! दयानन्द के लिए, जियो! दयानन्द के लिए,** चारों ओर देखो, परखो, सोचो, समझो और अपना कर्तव्य विचारो।

धर्म के नाम पर अधर्म, पुण्य के नाम पर पाप, और सत्य के नाम पर असत्य सर्वत्र सिर उठा रहे हैं। प्रभु पुत्रो! जागो और सत्य का प्रकाश, सर्वत्र सत्यार्थ प्रकाश से पहुंचाओ! शिवरात्रि का यही सन्देश है।

(फरवरी 1972 के 'जनज्ञान' से उद्धृत)

ईमान बिक रहा है...

हमारा ईमान सिकन्दर न खरीद सका, अकबर की कूटनीति उसे डिगाने में असफल रही। औरंगजेब की क्रूर तलवार जिसे हिला न सकी, अंग्रेज अपने शासन के 100 वर्ष में जिसे चोट न पहुँचा सका, वह हमारा धर्म स्वतन्त्रता के 34 (अब 67) वर्षों में बिक रहा है।

भारत का नागरिक आज बिकाऊ है, **राजनीतिज्ञ, नेता, व्यापारी, कार्यकर्ता सब बिकाऊ हैं। सब के मूल्य अलग-अलग हैं, पर हैं सभी बिकने के लिए तैयार।** हम दल बदलते हैं, रंग बदलते हैं, ढंग बदलते हैं–समय को देख, स्वार्थ के लिए, सब कुछ बदलते हैं, **ऐसे महान् हैं हम!....**

कभी इस करवट, कभी उस करवट,
जहाँ देखी तवा परात, वही गुजारी सारी रात,

हमारा स्वभाव बन गया है। देश, वेश, धर्म, कर्म सब स्वार्थ से बंधे हैं। **हमें चिन्ता है अपने स्वार्थ की।** और सब तो हमने भुला दिए, नाते-रिश्ते, नैतिकता-मानवता। स्मरण केवल एक है कि हमें लाभ कैसे हो?

राजनीति नंगी है और परिणाम सामने हैं, सामूहिक धर्मपरिवर्तन का, क्यों हो रहा है यह?? इस्लाम ग्रहण करने वाले कुरान से प्रभावित होकर इस्लाम अपना रहे हैं? नहीं-नहीं और नहीं। बिक रहा है ईमान, खरीदते हैं अरब! **मर चुका है हमारा स्वाभिमान और अट्टहास कर रहे हैं आक्रामक।** 34 वर्षों में 1/12 भाग ईसा के चेलों ने खरीद लिया और अब इस्लाम डंके बजाता बढ़ रहा है। **मर गए हैं, राम कृष्ण के अनुयायी। कायर, दुर्बल गिड़गिड़ाते हुए।**

तलवार से जो डरे नहीं, वे आत्मबल की कमी से मर चुके हैं। सारे देश में वीरानी है। सिवाय शंकराचार्यों के वक्तव्य के, कोई रोता नहीं दीखा, कोई जागता नहीं दिखा। सब इस घटनाचक्र में भी अपना लाभ खोज रहे हैं।

कोई धन संग्रह में लगा है। कोई वक्तव्य छपाने में, कोई भाषण शूर बन गया है और कोई धर्म शूर। पर न किसी के पास समय है, न बलिदान की भावना। एक भी वीर ऐसा नहीं मिला जो बलिदान देने को तैयार हो। अपने कर्मो को छोड़कर आग बुझाने के लिए कोई तैयार नहीं। भारत का कोना-कोना धधक उठा है, पर **कोई मां का पूत आज धर्म की ध्वजा संभालने को तैयार नहीं।**

आँख बंद कर लेना समस्या का हल नहीं है। जिन्होंने आक्रमण किया है वे कुरान के मानने वाले हैं, इस तथ्य को हम स्मरण रखें और समझ लें कि हमें तलवार का, षड्यन्त्र का उत्तर देना ही होगा।

देश के 60 करोड़ हिन्दू जागें और राम-कृष्ण के सैनिक बन जाएं, तभी कुछ बचेगा, नहीं तो सर्वनाश कोई रोक न पाएगा। हिन्दू नेता तो आज भी आपस में लड़ रहे हैं। **चारों और स्वार्थ का तांडव है। पार्टी-संस्था, दल पहले आक्रमण की चिन्ता बाद में। ढंग खुशामदी, यह न कहो, यह न करो। वे रूठ जाएंगे, संस्था पर संकट आ जाएगा। धिक्कार है उन्हें** जिन की रगों का रक्त आज भी शीतल है। **धिक्कार है उन्हें** जो पैसे से प्यार कर ईमान बिकते देख रहे हैं। **धिक्कार है उन्हें** जो अपने को युवक कहते हुए भी अपने कपड़ों के फैशन, रोटी की चिन्ता में लगे हैं।

हम बुझते हुए दीपक हैं, साधनों से शून्य, फिर भी पिछले एक वर्ष में हमने देश को झकझोरने का प्रयास किया है। उसके परिणाम किसी को बताने की आवश्यकता नहीं। आज भी हम **8-10** ऐसे व्यक्तियों की खोज में हैं जो जल सकें, इसलिए कि देशधर्म बच सकें। **पर अनुभव बता रहा है कि भारत मां अब वीरों से शून्य होती जा रही है।**

सत्य के अस्त्र से अज्ञान से टकराने का साहस

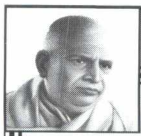

महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणी

हमें जुटाना होगा। मां के बेटों पर होने वाले आक्रमण को रोकने के लिए हमें शासन को जगाना होगा। ग्राम-ग्राम, गली-गली शंखनाद कर पापों की बाढ़ को और उसके कारणों को समूल नष्ट करना होगा।

किन्तु जब हमारा ईमान बिक रहा हो तो आशा किस से करें? **हजारों पढ़ेंगे इन पंक्तियों को, पर कौन आएगा आगे?** हम तो शंखनाद कर यत्न कर रहे हैं। सभी को जगा रहे हैं, उठा रहे हैं। आग फैलती जा रही है, और हम सोच रहे हैं कि इससे भी कैसे लाभ उठाएं?

मेरे देश के वीर पुत्रो! सोचो मृत्यु तो निश्चित है ही। फिर कायरों की भांति क्यों मरा जाए! क्यों न अपने धर्म, परम्परा, देश-संस्कृति की रक्षा के लिए हम कुछ ऐसा करें कि वर्तमान की धारा बदल जाए।

क्रान्ति तो होगी, अग्नि तो धधकेगी, युद्ध भी होगा, पर विजय हमारी हो, यह हमारी चाह है। हम चाहते हैं कि ईमान का बिकना बन्द हो। भारत का **हर बेटा, वेद-रामायण उपनिषद्, गीता, गौ-गायत्री की रक्षा करे। हमें न ईसा का सन्देश चाहिए, न इस्लाम का पैगाम।** हम तो परमात्मा के पुत्र हैं। उसी के बेटे बनकर सच्चे मनुष्य, देव बनें। **हमारा धर्म सत्य हो, हमारी नीति प्यार हो, हमारा मार्ग शांति हो।**

जो इस पथ पर प्रहार करता है, वह मानव का, हमारा शत्रु है। **सब सुन लें, हम अब भारत में ईमान नहीं बिकने देंगे!......**

–(सितम्बर ''जनज्ञान'' 1981 से---)

प्रकाशनादि विवरण फार्म-४

१.	प्रकाशन स्थान	वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, केशवनगर बस स्टैण्ड (इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर, दिल्ली-36
२.	प्रकाशन अवधि	मासिक
३.	मुद्रक का नाम	राकेशरानी
	क्या भारत का नागरिक है?	हाँ
	पता-	वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, केशवनगर बस स्टैण्ड (इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर, दिल्ली-36
४.	प्रकाशक का नाम	राकेशरानी
	क्या भारत का नागरिक है?	हाँ
	पता-	वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, केशवनगर बस स्टैण्ड (इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर, दिल्ली-36
५.	सम्पादक का नाम	राकेशरानी
	क्या भारत का नागरिक है?	हाँ
	पता-	वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, केशवनगर बस स्टैण्ड (इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर, दिल्ली-36
६.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	जनज्ञान प्रकाशन, दिल्ली-36

मैं राकेशरानी एतद् द्वारा घोषित करती हूँ कि मेरी जानकारी व विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

दिनाकं : १.३.२०१५ **–राकेशरानी, प्रकाशक**

मैं हृदय-मन्दिर से लिख रहा हूँ

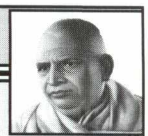

भूली बिसरी यादें

जिन्हें अभिमान हो **राम** पर, **कृष्ण** पर, **वेद** पर, **उपनिषदों** पर, **भारत की वैदिक संस्कृति पर** और **दर्शनशास्त्र** पर, **वे सभी राष्ट्रीयता और भावना की दृष्टि से हिन्दू हैं।**

भले ही सिद्धान्त की दृष्टि से आप हमसे सहमत न हों, किन्तु **व्यवहार की दृष्टि से आर्यत्व के सबसे समीप 'हिन्दू' हैं। हिन्दू शब्द में जो ध्वनित होता है। उसमें वह पावन परम्परा ओतप्रोत है जिसे आर्य परम्परा का वर्तमान रूप कह सकते हैं।**

आज इस पावन परम्परा को समाप्त करने का षड्यंत्र पूरे बल से चल रहा है। **मुसलमान-ईसाई-कम्यूनिस्ट और अनेक विजातीय तत्व हिन्दू धर्म की आधारशिला को नष्ट करने पर तुल गए हैं। नए-नए ढोंग, नए-नए अवतार,** ईसाई राज्यों के षड्यन्त्र हिन्दू धर्म की जड़ों पर कुल्हाड़ा मार रहे हैं।

आर्य परम्परा की पावन गंगा में इतना गंदला पानी मिलाया जा रहा है कि असली गंगाजल की खोज कठिन हो गई है। **वेद, शास्त्र और दर्शन के स्थान पर नए-नए गुरु–गुरुओं के ढोंग सभी कुछ जलाने में लगे हैं।** ऐसी स्थिति में आज आवश्यक हो गया है कि धर्म के सत्य स्वरूप की रक्षा के लिए हिन्दू मात्र संगठित हो जाएं।

चारों धामों के शंकराचार्य, मठों और गद्दियों के सारे महन्त, सनातनी, आर्यसमाजी, सिक्ख और वे सभी जिन्हें अपने हिन्दू होने का गर्व है, फिर संगठित हों और सभी एक स्वर में 'वेद' के नाम पर एक हो जाएं।

वेद के अर्थों और भावों पर विवाद के स्थान पर सभी हिन्दू वेद को धर्म-ग्रन्थ के रूप में स्वीकार करें एक ईश्वर और एक मार्ग के पथिक हम एक होकर **''ओ३म''** पताका सर्वत्र लहराएं। **भुला दें छोटे-छोटे भेदों को, गिरा दें सारी भेदभाव की दीवारें और सभी मिलकर एकता का मन्त्र गुंजाएं।**

वेद हमारा धर्मग्रन्थ, ओ३म् हमारा उपास्य और राम-कृष्ण हमारे आदर्श प्रतीक बनें। हम सब समझ लें कि हमारे धर्म, संस्कृति और परम्परा पर इतना बड़ा संकट कभी नहीं मंडराया, जितना आज छाया है। अनेक रावण अपनी सेनाएं सजाकर धर्मरूपी सीता को हरने चढ़ आए हैं।

रक्षा का उपाय है संगठन। आज छोटे-मोटे भेदों पर लड़ने का नहीं, एक होने का समय है। संसार को सत्य-धर्म की शिक्षा देने और ईसाइयत व इस्लाम के आक्रमण से रक्षा का मार्ग है संगठन। **फूट रही तो भाग्य फूट जायेगा। एकता ही वह मन्त्र है, जिससे हम सारी आसुरी सेना का सामना कर सकते हैं।**

भेद भुलाकर एक बनो अब,
एक बनो धरती को जीतो।
जीवन की प्रेरक वीणा का,
आमन्त्रण स्वीकार करो प्रिय।।

चुनौती स्वीकार करें :-

आज का हिन्दू कायर है और स्वार्थी भी। उसे अपने स्वार्थ के सिवाय किसी की चिन्ता नहीं। वह गालियां खाता है और गो-हत्यारों को वोट-देता है। वह इस्लाम और ईसाइयत से हिन्दुओं को, अपने भाइयों को पिटते देखता है पर वह बहका है, डरता है, रूढ़िग्रस्त है।

हम बजा रहे हैं शंख जागरण का इसलिए कि कायरता और स्वार्थ के मोह को समुद्र में फेंककर **हिन्दू सिंह बनकर उठें। वे शिवा की भांति लड़ें, प्रताप की तरह संघर्ष करें और दयानन्द की तरह एक बार फिर ईसाइयत-इस्लाम की चुनौती वीरता के साथ स्वीकार करें।**

हिन्दुओं! चूड़ियां उतार कर तलवार उठाओ। **सत्य की, ज्ञान की, न्याय की संगठन की तलवार।** सारे देश को एकता के सूत्र में आबद्ध करने के लिए, हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्थान का ध्वज सर्वत्र फहराने के लिए कमर कसकर तैयार हो जाओ! **शंकराचार्य जागें। साधु-संन्यासी- ब्राह्मण जागें। धनिक, श्रमिक, सभी जागें और भारत को भारत बनाने के लिए, देश को विघटन से बचाने के लिए एक हो जाएं।**

हम हिन्दू मात्र को संगठित कर भारत में एक ऐसी शक्ति का उदय देखना चाह रहे हैं जिसमें धरती की दानवता को जलाने की क्षमता हो। **प्रलयंकार शंकर के पुजारी कहां सो रहे हैं? कहां हैं वे जिनकी हुंकार से धरती कांपती थी?**

महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणी

गुर्जर-महाराष्ट्र-तमिलनाडु-केरल पूर्वांचल-हिमाचल- कश्मीर **महाभारत की गाथाएं, वेद उपनिषद् की शिक्षाएं, प्रताप शिवा की विजय लतायें फिर फैलें** और हम सब कुछ भुलाकर **ओ३म्-वेद-गौ-गायत्री** के नाम पर एक हो जाएं। **सोने वालो जागोः रोने वालो उठोः मृत्यु सिर पर खड़ी है, क्या सोच रहे हो? मरना तो सभी को है पर विजय पथ पर चलकर ही मृत्यु का स्वागत करो।**

विश्वास की विद्युत लेकर हम खड़े हैं। जीवन की शक्ति से आप को पुकार रहे हैं। **छोड़ो आलस्य उठो और अपना सब कुछ अर्पित कर भारत मां की पावन माटी को अपावन करने वालों को पाठ पढ़ाने के लिए जाग जाओ।** हम अपने प्राणों की पूर्ण शक्ति से आप के मन को जगाते हैं। कब तक सोते रहोगे?? **हिन्दुओं!**

(जनज्ञान से फाल्गुन 2053 से......)

काम का मूल्य नहीं, नारों पर न्यौछावर सब-कुछ, फिर काम कैसे चले?

हम निराशावादी नहीं रहे, न हैं, इसीलिए आँख बन्द कर सरपट दौड़ते रहे, **इस विश्वास पर कि काम का मूल्य समझने वाले हमारा साथ देंगे और हम धरती का काया कल्प कर नए प्रकाश से ज्योतिर्मय कर सकेंगे जन मानस को। किन्तु अनुभव बता रहा है कि काम का मूल्यांकन करने वाले व्यक्ति 2-4 ही रह गए हैं** और नारों के व्यामोह में बहकने वालों की संख्या भी कम नहीं।.....

यह अनुभव कड़ुवा है कि-'हमारे स्थान पर कोई और होता तो आत्म हत्या कर लेता, या रास्ता बदल डालता।' पर हम उस मिट्टी से बने हैं जो टूट सकती है पर झुक नहीं सकती। इसीलिए दिन रात के भीषण झंझावातों को सहकर भी अपनी धुन में चले जा रहे हैं, इस आशा से कि शायद कभी कोई काम के महत्व का मूल्याँकन करने वाले व्यक्ति मिल जाएं और हमारी मंजिल पास आ सके।

पिछले 3 मास से **''दयानन्द संस्थान'' को जिस भीषण आर्थिक संकट का सामना करना पड़ रहा है, उसे हम ही जानते हैं या प्रभु जानता है।** जिनका धन देना है, उनकी सहनशक्ति भी सीमा लाँघ रही है, और हम बेबस से प्रतीक्षा में हैं कि कब प्रभु कृपा करें और हम आगे बढ़ सकें।

इस संकट ने हमारे पैरों में जंजीरें डाल दीं। जिस तेजी से हम बढ़ रहे थे, उसी गति से बढ़ते जाते तो सारे देश का मानचित्र 10 वर्षों में कुछ और होता। हम तो और भी अधिक तेज चलना चाहते थे पर दुर्भाग्य!! सब सपने किसके पूरे होते हैं।

इन तीनों संकट मासों में भी किसी न किसी तरह हमने आगे बढ़ने का प्रयत्न किया है। ग्रन्थ वैदिक गीता, सामवेद भाषा-भाष्य और वेदाँजलि तथा अपने प्रभु से, नामक प्रार्थना पुस्तक का प्रकाशन किया है। विश्वास था कि श्रावणी पर हमारे 5-6 हजार सदस्य उत्साह दिखलाएंगे और संकट टल जाएगा। किन्तु समस्या सुलझी नहीं, **सहयोग जो मिला वह कार्य को देखते हुए अत्यन्त अल्प रहा। और आज 01-09-1973 को यह पंक्तियाँ लिखते हुए हम सोच रहे हैं कि क्या किया जाए? कैसे तेजी से दौड़ें और देश को 'वेद' की विचारधारा से अनुप्राणित कर दें।....**

आपस में लड़ने में मुकद्दमों के लिए पद-पार्टी प्रचार के लिये धन की कमी नहीं है। **योजनाओं और घोषणाओं के लिए थैलियाँ खोल देने वाले हजारों हैं,** पर 'वेद' को घर-घर पहुँचाने के काम का महत्व समझने वालों से भारत वसुन्धरा शून्य हो गई लग रही है।

15500 घरों में 'वेद' वाणी पहुँचाने का जो पारितोषिक गालियों और चिन्ताओं के रूप में हमें मिला है, उसकी तो हमें चिन्ता नहीं, किन्तु वेद प्रचार के कार्य में जो बाधा आज खड़ी हो गई है उसके कारण हम सोच नहीं पा रहे कि किया क्या जाए?

आपको पत्र भी लिखे और समस्यां भी आपके समक्ष रख दी, पर गाड़ी वहीं की वहीं खड़ी है। आज भी **इन पंक्तियों द्वारा हमारा निवेदन है (केवल उनसे है जो चाहते हैं, काम हो, और जो हमारे काम को ठीक समझते हों) कि काम न रुकने पाये और संक्रान्ति काल में भी 'वेद' ज्योति का**

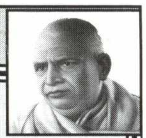

प्रकाश फैलता रहे। इसके लिए आप स्वयं सोचकर रास्ता निकालिए–

1. **वेद भाष्य के नए सदस्य बनाइए।**
2. **कम से कम 10001 या अधिक नया संस्करण छापने में दान भिजवाएं।**
3. **साहित्य भारी संख्या में मँगाइये।**
4. **जनज्ञान के आजीवन सदस्य बनिए और बनाइए।**
5. **अपने इष्ट मित्रों के घरों में वेद भाष्य पहुँचाइए।**

ऐसा न हो कि हम टूट जाएं और फिर कुछ न हो सके।........

(जनज्ञान साप्ताहिक 12 सितम्बर, 1976 से...)

फिर आया पन्द्रह अगस्त...

पन्द्रह अगस्त भारत की स्वाधीनता का दिन। विदेशी पराधीनता के बाद हम इस दिन स्वाधीन हुए थे। इस नाते यह खुशी मनाने का दिन है। पिछले 31 वर्षों से हम यह दिन उल्लास और हर्ष के वातावरण में मनाते रहे हैं। लेकिन **इस दिन के साथ कुछ शोकपूर्ण घटनाएं भी जुड़ी हुई हैं। इसी दिन भारत के दो टुकड़े हुए थे। भारतमाता स्वाधीन हुई, लेकिन उसका अंग-भंग हो गया।** स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में **''हमने सिर कटाकर सिरदर्द की दवा पाई।''** लेकिन हुआ यह कि सिर भी गया और सिरदर्द फिर भी बना रहा।

आज भी वही नारे हैं, वही मांगें हैं जो पाकिस्तान के लिए उठी थीं। आज भी दंगे हो रहे हैं। आज भी साम्प्रदायिकता जिन्दा है, आज भी जातीयता सिर उठा रही है। हमारी आजादी हमें कुछ सिखा न पायी। आर्य देश में आसुरी तत्त्वों का विषधर सिर उठाता था, आज भी उठा रहा है। कोई उनका सिर कुचलने वाला पैदा न हुआ। वीरता नपुंसक हो गई। धर्म प्रेम सो गया!....

गौ जिसे करोड़ों **गौमाता** कहते हैं, **आज भी कटती है। हजारों व्यक्ति प्रतिदिन ईसाई बन रहे हैं। इस्लाम की तबलीग आज भी जोरों पर है।** देश में धर्म की गंगा का अमृतरस आज सूख चुका है। **हिमालय की वादियों में बाइबल का जहर घोलने वाले तो बहुत हैं। पर वेद की ऋचाएं गाने वाले कण्ठ शायद मर चुके हैं। मेरे देश की धर्मप्राण जनता का धर्म आज स्वार्थ बन गया है।** कोई ईसाई बने या मुसलमान उन्हें क्या? **लाखों गरीब भूखे सोते हैं, पर उनका दर्द किसी को कचोटता नहीं। चोरी, डाके, गुण्डागर्दी, रिश्वत, भ्रष्टाचार और कुनबापरस्ती आज का ईमान है।**

पिछड़े वर्ग को उठाने की बात कागजों पर है। ग्रामों को भारत का अंग मानने का अवसर केवल चुनावों में आता है।

नेताओं को गद्दियों से प्यार है। कांग्रेस हो या जनता, सबको गद्दी की भूख ने भटकाया है। सेवा की, सुधार की, कुछ करने की भावना किसी में भी तो नहीं है। **जब तक चाणक्य सा प्रधानमन्त्री नहीं मिलेगा, जब तक ग्रामों को भारत का मूल नहीं माना जायेगा, जब तक रामकृष्ण की परम्परा जागृत नहीं होगी तब तक भारत का स्वराज्य अधूरा है।**

एक मास में देश से गरीबी मिटाई जा सकती है। 6 मास में देश की समस्त समस्यायें हल हो सकती हैं शर्त यह है कि नेता ईमानदार हों, भारतीय हों, भारतीयता कें पुजारी हों। क्या कभी कोई मन्त्री चुपचाप रेल के छोटे दर्जे में चला है? रात को सड़कों पर घूमकर जनता को समझने का मनोबल किसी में है??...

जब तक भारत के कर्णधार स्वयं त्याग नहीं करते, त्याग का पाठ जनता को नहीं पढ़ा सकते और **बिना त्याग भावना के भारत भारत नहीं रह सकता।** स्वार्थी नेता, स्वार्थी जनता पथभ्रष्ट कर्मचारी और हमारी दुर्बलता से लाभ उठाने वाली विदेशी शक्तियां प्रयत्न कर रही हैं भारत को नष्ट करने का, **क्या भारत मां के 50 कोटि पुत्रों में 10-20 पुत्र भी सपूत बनकर मां की रक्षा के लिए प्राण नहीं दे सकते?**

भगतसिंह, बिस्मिल आजाद, सुभाष का देश तीस वर्षों में क्या वीरशून्य हो चुका है? हम सब कुछ बदलना चाहते हैं। स्वराज्य का सुफल लाने के लिए **हम उस क्रान्ति की बाट देख रहे हैं जो इस देश को सचमुच भारत बना सके। क्या कोई इस महान यज्ञ में हमारा साथ देगा?** क्या भारत की

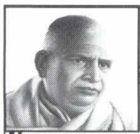

रक्षा के लिए आप कुछ नहीं कर सकते? सोचिए और 15 अगस्त मनाइये।

(अगस्त 1978 जनज्ञान मासिक से.........)

आज नहीं तो कभी नहीं

आज मूल्यवान है। आज इतिहास है, आज का महत्व इतना है जितना धरती पर पहले कभी नहीं रहा।

जो भी इस महत्व का मूल्यांकन करेगा, वह अमर हो जाएगा, जो भूलेगा उसका नामोनिशान तक मिट जाएगा।

युग तेजी से बदल रहा है, मानदण्ड निरन्तर परिवर्तित हो रहे हैं। मनुष्य प्रकाश की गति से भी तीव्र गति से भाग रहा है....

जो सो रहे हैं वे इस दौड़ में कहां रहेंगे? केवल प्राचीन की दुहाई, या पूर्वजों की शौर्य गाथाएं हमें जीवन नहीं दे सकेंगी।

आज **कर्मयुग है, कुछ करो या मरो!** यह सत्य जो जितना शीघ्र समझ ले उतना ही कल्याण है। प्राणों के स्वर जिस संगीत का सृजन कर रहे हैं उसकी भाषा को समझने की शक्ति हमें जागृत करनी होगी।

दूर पार में एक ऐसा अंधड़ चल रहा है, जिसमें पुराने को उड़ा देने की चाह है। **नया सब ठीक, पुराना सब बेकार की गूंज गुंजाने का उपक्रम हो रहा है।**

और हम दिशाहीन, निरुपाय, भाग्यवाद को कोसते मूढ़ बैठे हुए हैं। क्या यह मौन मृत्यु निमन्त्रण नहीं है?.......

साधना नहीं, कर्म नहीं, उत्साह नहीं?... तो फिर क्या होगा? युग के प्रवाह से टकराकर उसे रोकने का बल नहीं, तो कैसे जीतोगे? **जीना है तो जीतना होगा। हारने वाले को कौन पूछता है? सोने वाले को कौन बुलाता है। गिरने वाले को कौन उठाता है?**

मेरी आवाज में शक्ति नहीं रही। उसे सुनने की सामर्थ्य तुम खो चुके हो। **तुम मृत्यु पथ पर बढ़ रहे हो और मैं तुम्हें जीवन की राह पर चलाना चाहता हूं।**

भौतिकता की चकाचौंध में हम डूब चुके हैं। स्वार्थ हमारा आराध्य है। सत्य और असत्य का विवेक हम कर नहीं सकते। तो बताओ, फिर क्या होगा?..

सूरज की किरणें प्रतिदिन पुकारती हैं पर सुने कौन? हवा मेरे कान में चुपके से आकर बहुत कुछ कह जाती है पर उस आवाज को तुम समझोगे कैसे?

तुम्हारे मन में कुछ और बैठा है। मेरी भाषा, भाव स्पंदन सब तुम्हें जगाने में असमर्थ हो गए हैं। सोच रहा हूं...**प्रलय से पहले क्या तुम जाग सकोगे?** सर्वनाश के पहले क्या तुम्हारा व्यामोह टूटेगा?

मन-मन्दिर में प्रभु को बिठा लो, प्रकाश मिल जाएगा और तुम पा सकोगे वह शक्ति, जो सारे आसुरी बल को समाप्त कर धरती पर नया सवेरा छितरा सकेगी। पर क्या तुम जागोगे??....

धर्म के लिए जीवन चाहिए!

'धर्म' केवल धर्म है, उसके आगे-पीछे, नीचे-ऊपर कोई और विशेषण नहीं लगाया जा सकता। **प्रायः यह प्रश्न पूछा जाता है कि आपका धर्म क्या है? यह प्रश्न मूलतः भ्रामक है। प्रश्न यह होना चाहिए कि आप धार्मिक हैं या नास्तिक?**

जो आस्तिक है वह धार्मिक है। जो नास्तिक है वह अधार्मिक है। जो आत्मा को जानता है वह आस्तिक है। जो शरीर रूप में अपने को जानता है वह नास्तिक है।

इसलिए आज आवश्यकता है **'धर्म'** के प्रचार की। **धर्म प्रचार का अर्थ है आत्मा का विज्ञान अर्थात् अध्यात्मवाद का प्रचार।**

जब भौतिकता की आंधी चल रही है। धर्म भी भौतिकवाद का सहारा बनकर अधर्म बन चुका है। तब धर्म के प्रचार प्रसार के लिए कौन जीवन देगा?

मिलेगा कुछ नहीं और **प्राण अर्पित करने होंगे... जिसका मन पवित्र होगा और करेगा प्रेरणा अर्पण की, आहुति की....**भविष्य का इसी पर आधार है।

–भारतेन्द्र नाथ (महात्मा वेदभिक्षुः)

(''जनज्ञान साप्ताहिक'' 26 अगस्त 1976 से...)

संघर्ष का मूल आधार

जीवन का प्रत्येक क्षेत्र आज विवादग्रस्त है। पृथकता का रोग सर्वत्र विकास पा रहा है। मनुष्य के बीच की खाई बढ़ती हुई सर्वनाश का सामान जुटा रही है। देश, जाति, प्रांत, पार्टी और दल के नाम

मैं हृदय-मन्दिर से लिख रहा हूँ

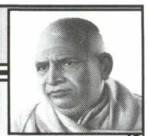

पर संघर्ष जारी है। **जिसके पास जो कुछ है वह अपने स्वार्थ और दूसरे के विनाश के लिए दावं पर लगा चुका है।**

इस संघर्ष ने शान्ति का हरण कर लिया है। धरती साक्षात् नरक बन चुकी है **संघर्ष के कारणों की खोज और शान्ति स्थापना की पुकार जोरों पर हैं**, पर सब व्यर्थ। **"मर्ज बढ़ता गया, ज्यों-ज्यों दवा की।"** चारों ओर विवाद ही विवाद अब दिखाई पड़ते हैं।

हमने इस स्थिति पर जो चिन्तन किया है उससे प्रश्न की गहराई में पैठ कर यह जाना है कि विवाद के ये ऊपरी कारण, कारण के मूल तक नहीं पहुंचने देते।

> ***धरती का वास्तविक संघर्ष तो "सत्य" और "असत्य" का है। "विद्या" और "अविद्या" का है और भी स्पष्ट कहें तो संघर्ष "शरीर" और "आत्मा" का है।***

__एक पक्ष__ शरीर को ही जीवन का सत्य मान चिन्तन करता है। इसी आधार पर अपने समाज, राज्य, अर्थ-व्यवस्थाएं बनाता है और शरीर धर्म के आधार पर विधान-नियम बनाकर धरती पर अपना साम्राज्य स्थपित करना चाहते हैं। **यह पक्ष जीवन को शरीर रूप में देखता है, विचार करता है।** नीति और दर्शन की व्यवस्थाएं भी इसी आधार पर बनाता है। और *__दूसरी ओर एक पक्ष__* 'शरीर' को साधनमात्र मान **'आत्मा' को जान और उसी को सत्य समझ अपनी व्यवस्थाएं निर्मित करता हैं उसकी शान और विज्ञान का लक्ष्य 'आत्मा' है।** शरीर भी आत्मा के वाहन रूप में ही है। ऐसा उसका विश्वास है।।

मूलतः यह पक्ष अध्यात्मवादी और प्रथम पक्ष भोगवाद कहा जा सकता है। भोगवादी भी अनेक बार अध्यात्म का ढोंग रचकर स्वार्थ साधन में जुटते हैं। इससे अध्यात्म मार्ग भी निन्दा का कारण बनता है।

धर्म के नाम को कलंकित करने के उदाहरणों से इतिहास भरा है। जीवन की गहराइयां शरीरसुख की कामना से भरी रहती हैं और शरीर के उपासक धर्म और आत्मा का पवित्र नाम भी अपने लाभ के लिए प्रयोग में लाते हैं। काले-काले कूट कर्मों का आवरण इतना गहरा हो चुका है कि शरीर ही जीवन का धर्म बन गया है। राजनीति की उलझनें बहुत हैं। **राज्य की भूख लुभावनी है। राजमार्ग आकर्षक हैं। किन्तु सत्य क्या है? शरीर की भूख या आत्मा की???**

> ***महर्षि दयानन्द की सबसे बड़ी देन धरती को यदि कुछ है तो इस 'आत्मा' की सत्यता का प्रबल उद्घोष। धर्म और शान्ति जिसे भी इष्ट है, उसे अपने जीवन का आधार चिन्तन बदलना होगा। सत्य को सत्य जान उसे पहचानना होगा और राज्य, धन विज्ञान, शरीर सभी को 'आत्मा' का साधन बनाना होगा।***

वर्तमान की दौड़ में 'आत्मा' को विस्मृत कर दिया गया है। हम इतने व्यस्त (busy) हो चुके हैं कि **हमारे पास और सब कार्यों के लिए समय है पर यदि नहीं तो अपने लिए।** हम और सब कुछ जानते हैं, यदि नहीं जानते हैं तो अपने को। हमारा दृढ़ विश्वास है कि मनुष्य अपने को भुलाकर न धर्म पर चल सकता है न मनुष्य ही रह सकता है। **अपने को जानकर कोई पाप नहीं कर सकता। वस्तुतः संसार के सारे दुःखों का मूल कारण है 'आत्मविस्मृति'।** अंग्रेज गए पर सुख नहीं मिला।

<u>कांग्रेस जाएगी तो भी सुख नहीं मिलेगा</u>। **सुख और शान्ति का आधार केन्द्र तो 'आत्मा' है। जब तक हम इसे नहीं जानेंगे। तब तक सुख नहीं मिल सकता।**

भूला-भूला फिरता है मन अंधकार में, भटक रहा है खोज सुखों की करने को। वहॉ मिलता है उसको केवल दुःख, भारी उलझन। **इसका हल तो वेद की पवित्र ऋचाओं में स्वयं प्रभु ने बताया। हमने वेद का नाम लिया पर इसे जाना नहीं, दुःख बढ़ता गया।** हम भटकते रहे, मंजिल कहां है, जानकर भी अनजान हैं हम।

पाठकों, क्या समय है आपके पास जीवन की गुत्थी को सुलझाने का!!!! यदि है, तो स्व. महात्मा नारायण स्वामी जी की 'उपनिषद्' पढ़ जाइए, ध्यान से, आपको मार्ग मिलेगा, सोच सकेंगे आप जीवन के सम्बन्ध में!!!

हम धरती पर क्रान्ति चाहते हैं पर हमारी क्रान्ति राज्य, नाम और भाषा से सम्बन्धित नहीं।

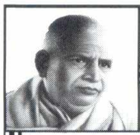

हम मनुष्य को यह ज्ञान कराना चाहते हैं कि वह शरीर नहीं **'आत्मा'** है। वह अपने को जाने, अपनी सत्ता को पहचाने और प्रभु का पुत्र बनकर, प्रभु की गोदी में झूला झूलकर आनन्द की गंगा में स्नान करे।

धरती से दुःख का साम्राज्य मिटाकर आनन्द का, शान्ति का, वैदिक विचारधारा का साम्राज्य स्थापित करना ही दयानन्द का इष्ट था।

प्रभु कृपा करें कि हम वैदिक विचारधारा का आत्मनिरीक्षण कर जीवन की गहराइयों में पैठ संघर्ष के मूल आधार को समझें। क्या आपको **'आत्मबोध** होगा? **क्या आप अपने को समझेंगे?** अपने अन्तर में झांक कर उस सत्य के दर्शन करेंगे जो सत्य तिरोहित होकर धरती को नर्क बना रहा है।

मन करता है हर "मन्दिर" में ज्योति जगाऊं।
अन्धकार की छाया का अस्तित्व मिटाऊं।
मनुज हृदय में 'ज्ञान' स्वयं जागेगा जिस दिन।
सतयुग धरती पर साकार आएगा उस दिन॥

–(जनज्ञान फरवरी, 1970 से....)

हृदय-मन्दिर की शंखध्वनि

हम अर्थात् सभी भारतवासी, **जो इस देश की धरती का वन्दन करते हैं, मां को, भारत मां को, पूज्य वन्दनीय और पावन समझ वन्देमातरम् गाते हैं,** गंगा-यमुना-सरस्वती और वेद-गौ-गंगा-गायत्री के प्रति जिनकी निष्ठा है, जो समवेत स्वर में द्वारिका से निकोबार तक की सारी **धरती पर फहराते राष्ट्रध्वज के प्रति समर्पित हैं, वे सभी हिन्दू हैं।**

राम-कृष्ण की गाथाएं सुन जिनका मस्तक गौरव से तन जाता है, प्रताप शिवा का शौर्य वर्णन जिन्हें नवजीवन देता है, दर्शन-अध्यात्म-ज्ञान-चिन्तन जिन के मानस में अमृत बरसाता है, **जो भारत की मिट्टी के प्रत्येक कण पर हजार कोहिनूर न्यौछावर कर सकते हैं, वे सब हिन्दू हैं।**

मां की वन्दना में जो शीश कटा सकते हैं, उसकी अर्चना में सर्वस्व समर्पित कर सकते हैं, **जो हिमगिरि के मुकुट पर त्रैलोक्य का साम्राज्य भी न्यौछावर कर सकते हैं, वे सब हिन्दू हैं।**

ऐसे सभी राष्ट्रभक्तों को हम हिन्दू कह अपने को धन्य मानते हैं। जो हिन्दू हैं, वह राष्ट्रभक्त हैं। जो राष्ट्रभक्त हैं, वह हिन्दू हैं। हिन्दू शब्द अब न जातिवाचक है और न किसी मत का प्रतीक है। यह भारतीयता का प्रतीक है। यह ध्वज है उस पावन सन्देश का, जिसके पीछे मातृभूमि के प्रति सिर कटाने की भावना है।

जो हिन्दू नहीं, वह देशभक्त भी नहीं। **मत-परिवर्तन होते ही राष्ट्रभक्ति में परिवर्तन आ जाता है। इसीलिए हम भारत में किसी भी देशभक्त को देशद्रोही बनकर नहीं बढ़ने देंगे।** विदेशी शक्तियाँ भारत सत्ता को कमजोर करने पर तुली हैं, किन्तु भारत के देशभक्त उनके कुत्सित प्रयत्न को कभी सफल नहीं होने देंगे। इस धरती की पावन माटी को कलुषित करने के लिए, हिन्दू को हिन्दू का शत्रु बनाने का प्रयत्न सफल हो गया तो क्या हम सबके लिए यह कलंक की बात नहीं होगी? **क्या भौतिक साधनों से ईमान खरीदा जाएगा? क्या भारत मां का सपूत चांदी के टुकड़ों पर बिक जाएगा?** क्या देश की धरती के बेटे विदेशियों की गर्हित चालों से देशविद्रोही बन अपनी मां को मृत्यु की मांद में धकेलेंगे?

हम हिन्दू हैं–यह राष्ट्रीय स्वर है। हिन्दू सम्प्रदाय- विशेष नहीं। हिन्दुत्व राष्ट्र को पवित्र करने वाली गंगाधारा है। यह वह स्वर है जो बेटा मां को पुकारते हुए कहता है–मां...मां... मां!!... जो मां को मां कहता है, वह हिन्दू है। आओ, हम उस की वन्दना करें–हम उसकी अर्चना करें। ❖❖❖

विजय हमारी होगी

मैं मरघट में बैठकर गा रहा हूं तो मुझे विश्वास है कि मैं मरघट को भी तीर्थ बना दूंगा। धधकती ज्वालाओं को शीतल पवन में बदलने का राग गाना भी मुझे आता है। इसलिए मैं निश्चिन्त हूं। **मेरा यह अटल विश्वास है कि महानाश की आंधी हमारे गीतों से मलयानिल बन जायेगी।**

धन-जन की वारुणि पीकर मदहोश हुए उन्मत

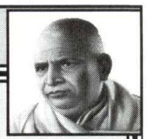

दाय को, सत्य की वीणा मनुष्यता की राह पर लाने में समर्थ होगी। **हमसे टकराने का प्रयत्न काल से लोहा लेने की नादानी है, यह बात जितना शीघ्र सभी समझ लें, उतना ही उत्तम है।**

आज भी हमारा है और कल भी हमारा होगा। दो सौ करोड़ वर्ष पुरानी हमारी परम्पराएं, झंझावातों के हिमालय से टकराकर सदा विजय वरण करती रहती हैं। राक्षस, पिशाच, दैव्यदयान हमारा स्वभाव रहा है।

सत्य कभी हारा नहीं, इसलिए, आज भी हम जीतेंगे–पश्चिम से उमड़ती पादरी मुल्लाओं की आंधी हम रोकेंगे। भारत माता के लौह लाड़ले बलिदानी परम्पराओं में सदा आगे रहे हैं। सारा देश अंगड़ाई लेकर जाग रहा है। कन्याकुमारी से कश्मीर तक देशभक्त अब नींद छोड़ रहे हैं।

हमें पूर्ण विश्वास है कि अगले कुछ वर्षों में ही एक नयी लहर उभरेगी राष्ट्रवाद की, और यह राष्ट्रवाद साम्प्रदायिकता को समूल नष्ट करने में सफल होगा। विजय हमारी होगी, हम अटल विश्वास लेकर बढ़ रहे हैं। हम!!!......... ●●●

दिल्ली भारत की राजधानी सही...पर दिल्ली भारत नहीं है

देश की राजधानी दिल्ली है। **यह नई नवेली वधू की भान्ति प्रतिदिन सजती है, संवरती है, उभरती है आगन्तुक इसे देखते हैं और भारत के बारे में कल्पनाएं करते हैं।** हमारे कर्णधार इसे देख-देखकर प्रसन्न होकर गवोक्ति करते हैं **किन्तु क्या यह सच है?**

नहीं, दिल्ली भारत नहीं है। वह भारत का प्रतीक भी नहीं है। हमारे देश का सबसे बड़ा दुर्भाग्य ही यह है कि वे दिल्ली को ही भारत समझ बैठे हैं। भारत के ग्राम आज भी उपेक्षित हैं। बिहार, पूर्वी उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, आन्ध्रप्रदेश और तमिलनाडु के ग्रामों में जाकर कोई देखे तो सही, कितनी गरीबी की छाया है उन पर!!!.....

भूखे, नंगे पेट, कराहती नारी, टूटे मकान, रुठे भाग्य और निर्धनता के सारे अभिशापों से ग्रस्त भारत के ग्राम, स्वराज्य के 34 (अब 67) वर्षों के बाद भी उसी तरह चल रहे हैं जैसे गुलामी के दिनों में थे।

80 प्रतिशत भूखे पेटों को भोजन न मिले और उस देश के प्रतिनिधि गुलछर्रे उड़ायें। प्रजातन्त्र का इससे बड़ा मजाक और क्या हो सकता है? संसद-विधान सभाओं के सदस्यों को अपनी जोड़-तोड़ से, **मन्त्रिगण को कुर्सी के मोह से अवकाश ही कहां है जो वे जन-मानस के सौभाग्य का सृजन कर सकें!!**

भारत में कांग्रेस का शासन जनतन्त्र के नाम पर कलंक है। वहां राजतन्त्र है। बाप के बाद बेटी, बेटी के बाद बेटा, बेटे का बेटा गद्दी का अधिकारी है। **निर्धनता होती है तो उसके रुदन को अपराध माना जाता है।** कैसे और कब तक चले यह ढोंग?

हमने पिछले अंक में लिखा है कि भारत के सारे बच्चों को 5 वर्ष से 16 वर्ष तक समान शिक्षा, भोजन, वस्त्र, निवास की व्यवस्था सरकार करे।

राजा और भिखारी के बेटे में भेद न किया जाए, तब देश की निर्धनता, असन्तोष, साम्प्रदायिकता–सब मिट जाएंगे।

हमने स्वराज्य के लिए क्रान्ति की थी, अब जनतन्त्र के लिए क्रान्ति करनी होगी। शासन को कुछ ऐसे पग उठाने होंगे जिससे ग्राम का नंगा भूखा-शोषित-अस्पृश्य, नगर का उच्च कोटि का ब्राह्मण, भूतपूर्व महाराजा का बालक, अपनी असमानता मिटाकर एक साथ एक कमरे में रहें। और **सिसकता मजदूर भी यह समझ सके कि यह देश मेरा है।** यह मेरे लिए भी कुछ करता है।

पिछले वर्षों का शासन जनतन्त्र नहीं था। जिसमें जनता उपेक्षित हो वह जनतन्त्र नहीं है। इसलिए आज उग्र राष्ट्रवाद और प्रखर देश प्रेम को ज्योतिर्मय करने के लिए राष्ट्र पर सभी के समान अधिकार का बोध कराना होगा।

अन्यथा क्रान्ति होगी वह कैसी होगी, कौन आएगा उसकी लपेट में, इसके सम्बन्ध में अभी हम मौन रहना ही उचित समझते हैं।........

–(पौष सम्वत् 2038 के "जनज्ञान मासिक से)

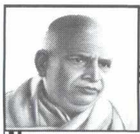

धर्म या अधर्म?

धरती की केवल एक समस्या है, धर्म रहे या अधर्म। **अधर्म आकर्षक है, सरल है,** इसलिए मनुष्य उस पर चलना आसान समझता है किन्तु इस पर चलने का निश्चित परिणाम दु:ख-चिन्ता-कष्ट-क्लेश होता है।

धर्म एक चढ़ाई है, जिस पर चलने में कठिनाई अवश्य है पर यह व्यक्ति को उठाता है, पवित्र बनाता है, शान्ति-सन्तोष प्रदान करता है। धर्म प्रकाश है, प्रेरणा है, गति है, विश्वास है..और है, अमरता का सन्देश-वाहक।

अधर्म अन्धकार है, पशुता है, शून्यता, अविश्वास और मृत्यु है। इसमें निरन्तर असन्तोष है, प्यास और पथभ्रष्टता है। **अधर्म का मार्ग मृत्यु की ओर जाता है।**

जीवन एक अविरल धारा है, जिसमें गति है, स्नेह-साधना-ममत्व का मिश्रण है। किन्तु **धर्म जहां पतवार है वहां नाव में छेद का प्रतीक झूठ-पाखण्ड-चोरी-व्यभिचार-धोखा-हिंसा सब का जनक अधर्म है।**

धर्म का उपासक देवता है **तो** अधर्म का असुर-**धर्म यदि** अमृत है तो **अधर्म** विष-**धर्म यदि** गंगा है तो **अधर्म** गंदा नाला। **धर्म** दूध है तो **अधर्म** शराब।

> ***आज की ही नहीं धरती की शाश्वत् आवश्यकता है धर्म की स्थापना। इसी के लिए महापुरुष राम-कृष्ण- शंकर-दयानन्द समय-समय पर जन्म लेते रहे हैं। इसी के लिए देवता बलिदान देते रहे हैं, शहीद मृत्यु वरण करते रहे हैं।***

और आज हमारा संघर्ष भी केवल धर्म की स्थापना के लिए है। अधर्म का तूफान जोरों पर है। प्राय: सभी समय के प्रवाह में बह रहे हैं किन्तु.....**हम इस अधर्म के तूफान के आगे घुटने टेकने के लिए तैयार नहीं, हमें मरना स्वीकार है पर अधर्म अंगीकार नहीं।**

आपको अधर्म की छाया में रहने की स्वतन्त्रता है किन्तु यह तो सर्वनाश को स्वीकार करना है। **आप का शरीर सदा नहीं रहेगा, फिर इसके मोह के लिए क्यों अपने को अन्धकार में भटकाते हो?** यह क्यों भूल जाते हो कि तुम **"शरीर"** नहीं तुम, **"आत्मा"** हो। **100 वर्ष रहने वाले शरीर लिए अमर आत्मा को क्यों भटकाते हो?** शाश्वत् आनन्द की प्राप्ति के लिए धर्म को क्यों नहीं अपनाते मेरे प्राण!

आज धर्म का शंख फूंकने के लिए शंख भी चाहिए और सुदर्शन चक्र भी। धर्म की स्थापना के लिए प्रत्येक स्तर पर युद्ध करना होगा। यह प्रभु का आदेश है और हम इसी ईश्वर आज्ञा का पालन कर रहे हैं।

प्रभु पुत्रों!, हमारा साथ दो, धर्म की विजय के लिए हमारे साथ आओ। ईश्वर के आदेशों को स्थापित करने के लिए हम तुम्हें बुला रहे हैं-तुम्हें! उन्हें, जो प्रभु के भक्त हैं।

कर्म करो पवित्र, धर्म स्वयं जीतेगा। साधन जुटाओ, साधना करो, प्रकाश फैलेगा। दु:ख दूर होंगे, शान्ति-अमृत बरसेगा, **धर्म पर चलो, धर्म पर चलाओ, धर्म को बढ़ाओ- बचाओ।**

> **हम धर्म की रक्षा कर रहे हैं।**
> **आप स्वयं अपना कर्त्तव्य सोचिए।**

पत्थर भी पिघलते है

सुना था पत्थर भी पिघलते हैं। 12 वर्ष के बाद घूरे के दिन बदलते हैं। पर मैं पिछले 30 वर्षों से देख रहा हूं कि इन्सान भी अपने को बदलने के लिए तैयार नहीं।

प्रश्न यह उठता है कि दयानन्द के अनुयायी पत्थर से भी अधिक कठोर मन के क्यों हो चुके हैं कि अपने को बदलने के लिए तैयार नहीं। शब्दों में दयानन्द की जय बोलकर वे समझते हैं कि उनका काम पूरा हो गया। **मुसलमान-ईसाई-पाखण्डी दनदनाते बढ़ रहे हैं पर हम मौन हैं।** नास्तिकता बढ़े चिन्ता नहीं, धर्म मिटे परवाह नहीं, **धरती के नक्शे से हमारा निशान मिट जाए.. पर हम इतने निर्लज्ज हो चुके हैं कि पिटते रहने पर भी कहते हैं, हम जीत रहे हैं।**

सच और झूठ में से झूठ को चुनकर हम उसके राही बन बैठे हैं। **अपने घर में शेर बनकर आत्म-प्रशंसा**

मैं हृदय-मन्दिर से लिख रहा हूँ

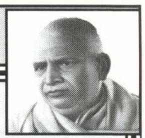

में लीन होकर हम अपने हाथों अपनी मौत का सामान जुटा रहे हैं। आंखें होते हुए भी हम देखने को तैयार नहीं, दुनिया की समस्याओं को समझने के लिए हम तैयार नहीं, **विश्व विजय का हमारा लक्ष्य अपने घर में भी विजय ध्वज नहीं फहरा सका।**

मैं आशावादी हूं, इसलिए ही तो गालियां, ठोकरें, मुसीबतें खाकर **दयानन्द का सपना पूरा करने के लिए युद्ध कर रहा हूं।** पर कितने दयानन्द के भक्त ऐसे मिले जिन्होंने इस संघर्ष की राह को ज्वलन्त करने के लिए हाथ बंटाया।

> ***आर्यसमाजों को भाषण चाहिएं। नेताओं को गद्दियां चाहिएं, युवकों को नारे चाहिएं पर वे दयानन्द के भक्त कहां हैं जिन्हें विजय चाहिए।***
>
> ***रोम और मास्को में, अरब और चीन पर वेद ध्वज फहराने के लिए मृत्यु वरण कौन करेगा? कौन जलेगा इसलिए कि दयानन्द का सपना पूरा हो? बातें तो आसान हैं, पर काम करने के लिए आदमी कहां से आएं।***

रोते हुए भी हंसाना हमें आता है। **मरते हुए भी जीवन के गीत गाता हूं, इसलिए कि शायद कोई अपना जीवन मेरी झोली में डाल सके।** दयानन्द के सपनों में रंग भरने के लिए अपना खून जो रंगों के लिए दे सके। **मेले-उत्सव-आयोजन देखकर लगता है कि कोई दयानन्द की अरथी उठा रहा है।** राजनीति से रंगा, प्रदर्शनों से पंगा, वर्तमान भविष्य की नींव का पत्थर नहीं बन सकता।

भविष्य के लिए रक्त-मांस-हड्डी शरीर जलाकर ही भवन तैयार हो सकेगा। दयानन्द को अपना कहने वाले युवक क्या वर्तमान से अलग होकर कुछ करने की साध मन में नहीं सजा सकते?

कुछ बोलो तो सही, मन के पट खोलो तो सही, इन पंक्तियों को पढ़ने वालों! अपना मानस टटोलो तो सही–तुम दयानन्द के लिए अपनी आहुति दे सकते हो क्या?........

धर्म के लिए दयानन्द ने प्राण दिए थे, हमें भी धर्म के लिए सब कुछ देना होगा। **नारे-घोषणा-प्रस्ताव-प्रदर्शन कुछ न कर सकेंगे–यह सत्य है। जीना है तो मरना होगा–अन्य कोई राह है ही नहीं।** जो साथ आएं स्वागत–जो दूर रहें स्वागत। मैं जब तक जीवित हूं कर्म करता रहूंगा।

वेद मन्दिर निर्माण का सपना यमुना की बाढ़ का, समय का कुचक्र नहीं तोड़ सकेगा।

धरती को वेदमय बनाने के लिए हम आगे बढ़ेंगे। अवैदिक मतों के जाल से मनुष्य को हम मुक्त कराएंगे। सर्वत्र सब धर्मस्थानों पर ओ३म् पताका लहराएंगे।

हम आज एक बार फिर अकेले ही धरती क्या भाग्य प्रवाह बदलने का व्रत लेते हैं और हमारे बाद क्या होगा की चिन्ता हम छोड़ चुके हैं। जो भी होगा ठीक होगा।...... बस अब तो बढ़ना है। वेद को घर-घर पहुंचाना है। गुरुदेव देव दयानन्द का सपना पूरा करना है।

आप अपना कर्तव्य स्वयं सोचिए, क्या सहयोग दे सकते हो। निर्णय कीजिए, आपका प्यार पाकर हम सब कुछ पा लेंगे। **विश्वास कीजिए हम जब तक हैं तब तक हमारी हर सांस सत्य-धर्म-वेद का संगीत गुंजाती रहेगी** और अन्तिम क्षणों में भी हम यही कहेंगे, हम जीतेंगे–**वयं जयेम।**

–(कार्तिक सम्वत् 2035 "जनज्ञान" से...) ●●●

हिमगिरि भी अब डोल उठा है

पिछले कुछ दिनों से हमारा मन विचित्र स्थिति में प्रश्न चिन्ह लेकर खड़ा है । **दिन रात सोच रहा हूँ कि क्या आज कार्य करना भी अपराध है?**

सत्य और असत्य को समझने का विवेक अब कहां है? **कार्य और घोषणाओं में महत्व- झूठी घोषणाओं का बन गया है ।**

> ***पिछले 25 वर्षों में निरन्तर 18-18 घंटे प्रतिदिन आर्यसमाज का कार्य किया । इन 25 वर्षों में 25 रु.की पूंजी भी अपने पास संग्रह नहीं कर सका । सारी बुद्धि विवेक-शक्ति और भक्ति से ऋषि का सन्देश फैलाने का प्रयत्न किया। किन्तु परिणाम क्या मिला ?***

नेताओं का मार्ग अलग-हमारा अलग, शासन उन का!.. **हम काम में विश्वास रख काम करते रहे और परिणाम यह कि कोई हमारा न बन सका ।**

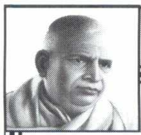

महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणी

जनता ने काम का मूल्य नहीं समझा, नेताओं को इसमें अपना अपमान नजर आया, इस तरह हम अकेले रह गए। और अब.... **अपने जीवन के अनमोल क्षण, उत्तम स्वास्थ्य खोकर** आज यह सोचने पर बाध्य हो गए हैं कि **क्या जो हमने आज तक किया था वह क्या सब गलत था, अपराध था?**

जीवन के हर कदम पर हमने ऋषि दयानन्द के गीत गाए। स्वयं के लिए कुछ भी न करते हुए लगातार 25 वर्ष हमने लेखनी-वाणी से ऋषि की आवाज गुंजायी। लोग आर्यसमाज को छोड़ कर राजनीति में गए पर हमने राजनैतिक पृष्ठभूमि और बना बनाया क्षेत्र छोड़ कर जो कुछ किया आर्यसमाज के लिए किया।

यह सब कुछ किसी पर एहसान नहीं था, हमारा कर्त्तव्य था। हमें अपने कामों के लिए कोई अफसोस भी नहीं है। हमें जीवन के हर क्षेत्र में अभूतपूर्व सफलता मिली और शायद यही हमारे विरोध का सबसे बड़ा कारण बना।

आर्यसमाज शताब्दी पर भी हमने 15 से अधिक बार लाखों की संख्या में सत्यार्थप्रकाश और ऋषि जीवन छपाए। लागत से भी कम मूल्य पर केवल पैंतीस रुपये में चारों वेद हिन्दी भाष्य दिए। प्रथम बार 15500 घरों तक पहुँचाया...यह सब कुछ बिना पूंजी के भगवान भरोसे हुआ। सफलता मिली प्रचार में। पर... हमारा स्वास्थ्य टूटता गया, हम खोखले हो गए और आज एक विशाल ताना बाना तैयार कर हम उस मल्लाह की खोज में हैं जो पतवार हमारे हाथों से संभाल सके।

हमारा मार्ग कांटों से भरा है। इसमें सम्मान नहीं गालियां, मालाएं नहीं कांटे और प्रशंसा नहीं, निन्दा मिलती है। दिन रात की परेशानियां ऊपर से किसी भी प्रकार का कोई लाभ नहीं, फिर कौन माई का लाल चलेगा इस दुर्गम पथ पर...।

हम निराश नहीं हैं, फिर भी मन में एक पीड़ा है, कसक है, **वेदना है, अपनों की उपेक्षा की! विरोधियों के विरोध से लड़ने का साहस तो हम में है पर अपनों से विरोध हमारी कमर तोड़ देता है।**

आर्यसमाज संगठन आज मुकदमे बाजी, गृह कलह और पदलिप्सा की भेंट चढ़ गया है। **नेताओं के इस पतन को देखकर ऋषि दयानन्द के भक्तों की आँखों से क्यों रक्त के आँसू नहीं बहते.....** पर कोई करे तो क्या करे, इस हमाम में सभी नंगे हैं। हमारे सब्र का पैमाना भर चुका है। **सभी को हम बिकता हुआ, बदलता हुआ देख रहे हैं। पार्टी बाजी ने इस विशाल संगठन को विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है।** कोई सोचने वाला, कुछ करने वाला नहीं, **सभी को गद्दियाँ प्यारी हैं।**

भूकम्प आने वाला है, सब कुछ हिल रहा है। **धर्म की, सत्य और न्याय की परिभाषाएं बदल रही हैं।** हम देख रहे हैं बरबादी का यह दौर, **मन विद्रोह कर रहा है, पर एकाकी क्या करें,** कुछ समझ नहीं आ रहा।

आप बता सकें तो बताइए, कि किया क्या जाए, सर्वनाश के तूफान के समक्ष अडिग चट्टान बन कौन, कैसे खड़ा हो? हिमगिरि अब डोल उठा है, कोई रोक सकेगा क्या ......???

(जनज्ञान साप्ताहिक 30 मई 1976 से--)

तब क्या होगा

मां का शीश कट आएगा? मस्तिष्क विकृत हो जाएगा? अपने देश में हम विदेशी होंगे.....**तब क्या होगा?**

'भारत' हमारा देश नहीं, माँ है। भारत माता की जय का स्वर गुंजाकर हमने स्वतन्त्रता का युद्ध लड़ा था। और जब आजादी मिलने लगी। तब स्व. पं. नेहरू ने कहा था–

हमने सर कटा कर सिर दर्द की दवा की है, सिर भी कट गया..... पर दर्द की दवा नहीं हुई। 29 वर्ष बीत गए। **कल की सी बात लगती है, जब सर्वत्र तिरंगा झंडा अपने प्राणों से जो बढ़कर था, हमने फहराया था। हमने स्वयं 47 ग्रामों में से घूम-घूमकर रात के 10 बजे तक उत्सव मनाया था, झंडा फहराया था।**

1942 में इस तिरंगे को लहराने के लिए हम सभी ने कितनी यातनाएं-कष्ट सहे थे। आज कौन उस स्थिति का अनुमान कर सकता है!!...

मैं हृदय-मन्दिर से लिख रहा हूँ

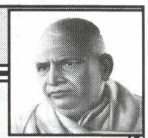

15 अगस्त 1947 को पं. नेहरू के हाथों लाल किले पर तिरंगे का आरोहण देखकर कितना हर्ष उमड़ा था। क्या-क्या कल्पनाएं की थीं। पिछले 29 वर्षों में देश की प्रगति और गौरव की कहानी किसी से भी छिपी हुयी नहीं है।

किन्तु इस सबके बीच आज विदेशी विचारधारा का, विदेशी तत्वों का सिर उठाना सभी देशभक्तों के लिए चिन्ता का विषय है। **जिनकी भक्ति भारत मां के प्रति नहीं है वे बढ़ रहे हैं और भारत मां के बेटे अपने अपने स्वार्थ में उलझे हैं।**

हमें चिन्ता है देश के भविष्य की, क्या होगा जब खाओ, पियो और मौज उड़ाओ का दर्शन सफल होगा। क्या होगा जब विदेशी तत्व सबल होंगे और राम-कृष्ण शिवा-प्रताप के अनुयायी दुर्बल पड़ जाएंगे?

शराब-विलासिता-फैशन और राग-रंग का प्रवाह बढ़ रहा है, शिक्षा की वृद्धि से व्यक्ति क्लर्क तो बन रहा है पर काम करने की भावना खो गयी है।

देश की एकता, सुख और सुनहरे भविष्य के लिए तप-त्याग और बलिदान के अतिरिक्त और कोई मांग नहीं है। देश की 50 करोड़ जनता एक स्वर से भारत मां की जय बोले और कार्य का, रचनात्मक काम का महत्व समझे, तभी यह लहराता तिरंगा धरती को सत्य शान्ति मानवता का सन्देश दे सकता है। काश कि, हम-वे-सब बदल सकते और भारत के चरणों में संसार झुक जाता।

(''जनज्ञान साप्ताहिक'' 22 अगस्त 1976 से.)

आर्यसमाज क्या चाहता है?

आर्यसमाज अपने महान् गुरु के चरण चिन्हों पर चलता हुआ बढ़ता गया। संसार की रुकावटें उसके मार्ग में बाधा न बन सकीं और परिणाम स्वरूप **युग निर्माण के लिये आर्यसमाज ने जो कार्य किया, वह इतिहास में स्वर्णिम पृष्ठों की कहानी है** आर्यसमाज संसार की महान् संस्था है। **वह विश्व बन्धुत्व की भावना का प्रसारक है। समता, न्याय, प्रेम, सत्य और ज्ञान की भावना का मूल है। अज्ञान अन्याय और अभाव का, मूर्ति पूजा, गुरुडम, अन्धविश्वास और भेदभावों का आर्यसमाज विरोधी है।**

आर्यसमाज वर्तमान को सुधार भविष्य का निर्माण भूत के आधार पर करना चाहता है। संसार के समस्त जातिभेद, वर्गभेद, प्रान्तभेद और राष्ट्रभेदों को समाप्त कर आर्यसमाज... सोलहसंस्कारों, चार आश्रमों द्वारा वैयक्तिक जीवन का, कर्म पर आधारित और वर्णाश्रम प्रणाली द्वारा समाज का सुगठित निर्माण करना चाहता है। यह निर्विवाद तथ्य है कि आर्यसमाज का कार्य महान है।

आचार्य देवो भव

वैदिकधर्म की एक प्रधान शिक्षा है **आचार्य देवो भव।** मध्यकालीन सन्तों ने भी आचार्य के महत्त्व को **'गुरु बिन ज्ञान न होय'** कह कर व्यक्त किया है। सच्चा गुरु ही मनुष्य के चरित्र और मस्तिष्क का सही विकास कर जीवन का ग्राह्य मार्ग दिखला सकता है। ईश्वर का महत्त्व 'गुरुओं का भी गुरु' कह कर बताया गया है। **आज जीवन में तो अध्यापक या शिक्षक गुरु या आचार्य होता है। पर समाज का गुरु प्राचीन परम्परा के अनुसार पुरोहित होता है।**

प्राचीन समाज में पुरोहित का विशिष्ट स्थान होता था। **गुरु या पुरोहित,** मनुष्य का सभी दिशाओं में पथ-प्रदर्शन करता था और दिन प्रतिदिन की समस्याओं में उचित परामर्श दिया करता था। **राजकुलों में तो पुरोहित अत्यन्त उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित होता था। राजाओं को अपने पुरोहितों के आदेश मान्य होते थे।** समाज का पौरोहित्य या नेतृत्व वेदाध्यायी ब्राह्मण वर्ग करता था।....

पर.... **समाज में नैतिक व आध्यात्मिक मान्यताओं का मूल्य गिरने के साथ पुरोहित का महत्त्व कम होता गया। इसमें जहाँ समाज की व्यवस्था का दोष है, वहाँ अपने कर्म से च्युत होने वाले पुरोहितों या ब्राह्मणों का भी दोष है।** उन्होंने समाज में अपनी प्रतिष्ठा और उच्च स्थिति का नाजायज लाभ उठाकर अध्ययन, मनन और चिन्तन का तप व कष्टसाध्य मार्ग छोड़कर जन्मना जातिवाद की

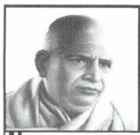

महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणी

कल्पना की नींव डाली और समाज का नेतृत्व छोड़कर अपनी प्रतिष्ठा कराने की परम्परा आरम्भ की। इसी कारण समाज की स्थिति **''अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः''**वाली हो गई। **अन्धा दूसरे को क्या रास्ता दिखाएगा।**

समाज का नैतिक और आध्यात्मिक पुनरुत्थान सच्चे गुरुओं व पुरोहितों की पुनः प्रतिष्ठा से ही हो सकता है। **वेद, शास्त्र तथा ज्ञान-विज्ञान का अध्ययन करने वाले निष्काम तपःपूत कर्मयोगी ही सच्चे पुरोहित हो सकते हैं।**

आर्यसमाज ने वैदिक धर्म को पुनः प्रचलित करने का महान् दायित्व सम्भाला है। अज्ञान, अविद्या और रूढ़ियों के तिमिर जाल का भेदन कर वेद-प्रतिष्ठित सत्य ज्ञान का सूर्य चमकाया है। वैदिक धर्मानुकूल लोकोपयोगी परम्पराओं को पुनः प्रतिष्ठित करना आर्यसमाज का ही कार्य है। किन्तु सच्चे पुरोहितों और आध्यात्मिक नेताओं की कमी के कारण आर्यसमाज जनता को उतना आकृष्ट नहीं कर पा रहा, जितना करना चाहिए।

आचार्य, अध्यापक और पुरोहित ही जनता के सच्चे नेता हैं। **इस युग की व्यवस्था में अध्यापक सही मानों में समाज के गुरु नहीं रह गए हैं।** उनका कार्य वेतन लेकर छात्रों को अक्षराभ्यास का विषय विशेष पढ़ा देना है। अपने उच्च चरित्र का आदर्श सम्मुख रखकर सही नेतृत्व करना नहीं। **पुरोहित तो दान-दक्षिणा पर पलने वाला दयनीय प्राणिमात्र रह गया है। इस स्थिति को बदलना आर्यसमाज का कार्य है।**

वैदिक शिक्षाओं और वेदानुकूल मानवीय मान्यताओं की पुनः प्रतिष्ठापना आर्यसमाजें ही कर सकती हैं। पर वर्तमान आर्यसमाजें नहीं।

यह कार्य तो स्वामी दयानन्द के आदर्शों पर चलने वाले तपःपूत धर्मप्राण और चरित्रवान पुरोहितों के निर्देशन में चलने वाला आर्यसमाज ही कर सकता है।

इस समय अधिकांश आर्यसमाजें बिना नाविक की नाव की तरह हैं। इसी कारण स्वयं सही रास्ते पर चलने में असमर्थ रहकर जनता को आकृष्ट करने में भी अक्षम हैं।

आदर्श चरित्र और वैदिक धर्म का वास्तविक ज्ञान रखने वाले पुरोहितों के अभाव में आर्यसमाज जनता के विचारों की क्रान्ति करने में सफल नहीं हो रहा है।

महर्षि दयानन्द ने विचारों की क्रान्ति करने के लिए आर्यसमाज की स्थापना की थी। यदि आर्यसमाज विचारों की क्रान्ति का महान् कार्य नहीं कर सकेगा, तो उसका अस्तित्त्व निरर्थक हो जाएगा।

ईंट-पत्थर के मकान नहीं विचारशील पुरुषों का समूह ही आर्यसमाज है। इस विचार के विचारशील पुरुषों का समूह तैयार करने का कार्य पुरोहित ही कर सकते हैं। लेकिन उन पुरोहितों की तरह दान-दक्षिणा पर चलने वाला पुरोहित समाज का सच्चा गुरु होना चाहिए। **निष्काम कर्मयोगी विद्वान् ही आर्यसमाज के प्राण बन सकते हैं।** वे ही समाज के **''आचार्य देवो भव''** इस आदर्श की प्रतिष्ठा करा सकते हैं।

(दैनिक 'आर्यमित्र' लखनऊ, 24 दिसम्बर 1955 से)

ताजमहल और झोंपड़ी

ताजमहल वैभव का प्रतीक है। उसका सौन्दर्य सर्वत्र विख्यात है। पर कलाकार की यह अनुपम कृति कला के लिए प्रतीक है। उसका उपयोग नेत्रों के लिए है, जीवन के लिए नहीं। **नेत्र-सौन्दर्य तृप्ति की भावना ने महल बनाने की होड़ पैदा की है। भवनों का निर्माण हमारे जीवन का लक्ष्य बन चुका है।** वैभव प्रदर्शन की दौड़ ने मनुष्य को धन एकत्र करने के लिए उकसा कर अशान्ति को जन्म दिया है।

झोंपड़ी त्याग का प्रतीक है, शान्ति का संगीत उसमें झरता है और बहती है प्यार की गंगा। सादगी में जो भावना है उसमें जीवन का सत्य मुखर हो उठता है और मिलती है प्रेरणा गहराई में पैठ अपने को जानने की।

चन्द्रगुप्त मौर्य का महामात्य चाणक्य झोंपड़ी में रहकर विशाल राष्ट्र का सफल संचालन करता था। विश्व का समस्त दर्शन झोंपड़ियों की ही देन है। साहित्य का सृजन झोंपड़ी ने ही किया है।

प्राचीन काल में महल झोंपड़ी के सम्मुख झुकते थे। आज झोंपड़ी महल के द्वार पर अलख जगाती है। कभी झोंपड़ी का आदेश सर्वोपरि होता था

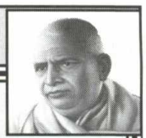

...ौर आज महल झोंपड़ियों की हस्ती मिटा सकता है। **झोंपड़ी धर्म का और महल अधर्म का प्रथम चरण है।** सत्य जंगल में मंगल कर सकता है। झूठ को बनावट के हजार साधन चाहिए और चाहिए सब कुछ दिखाने के लिए।

आज समय के प्रभाव ने हमें भी महल का-ताजमहल का-अनुयायी बना दिया है। भवनों का निर्माण और धन का संग्रह हमारा जीवन लक्ष्य बन गया है। धर्म प्रचारक संगठन परमात्मा के स्थान पर (जमा धन) की आराधना कर रहे हैं।

''विनाश काले विपरीत बुद्धि'' की स्थिति हो चुकी है। पाकिस्तान बना, महल कहाँ गए? विचारों के महायज्ञ में यदि हम पिछड़ गए तो फिर हम कहाँ रहेंगे?

अपने शीर्षस्थ नेताओं से हमें कहना है (यदि वे सुन सकें तो....) ताजमहल मत बनाओ, झोंपड़ी की तसवीर मस्तिष्क में लेकर चलो। धन-सम्पत्ति जमा मत करो जो मिले उसे धर्म प्रचार में व्यय करो।

हमारी दृष्टि में सारी समस्याएं इसी जमा धन ने पैदा की हैं। झगड़े, फूट, पद की लड़ाइयाँ इसी ने उत्पन्न की हैं। **धन का संग्रह अपनी मृत्यु को स्वयं निमन्त्रण दे रहा है।**

धर्म प्रचारक संगठन ब्राह्मण और संन्यासी होते हैं। उन्हें व्यापारी बनाकर सर्वनाश करने वाले नहीं जानते कि वे कितने बड़े अपराधी हैं। **ज्ञान की दीप्त ज्योति ताजमहल से प्रकाश पुंज बन कर रश्मियाँ नहीं फैला सकती?** वहाँ तो केवल कब्रें बन सकती हैं।

आज की झंझा में प्राणों के गीतों की सरगम सुनने को कान तरस गए हैं। धर्म के पहरेदारों! संन्यासी-ब्राह्मण बन लोक में आलोक फैलाओ! धरती तुम्हारी चरण वन्दना करेगी। जिस राह पर तुम चल रहे हो, वह ताजमहल बना सकती है पर उसमें जीवन नहीं-कब्रें बनेंगी।

(जन ज्ञान ''साप्ताहिक'' 18 अप्रैल 1976 अंक से..)

ईश्वर से मिलना है?

मनुष्य को भौतिक दृष्टि से यदि सब कुछ मिल भी जाय, तब भी वह सन्तुष्ट नहीं हो पाता। **धन -सम्पत्ति और परिवार, सोना-चाँदी, हीरे-मोती का अपार भण्डार पाकर भी उसे शान्ति और आनन्द नहीं मिल पाता। इसी कारण विज्ञान और भौतिक उन्नति का चरमोत्कर्ष हो जाने के बाद भी वह शान्ति की खोज में भटक रहा है।**

इस भटकने का ही परिणाम है कि जिसे **जिधर से तनिक भी आशा की झलक दिखाई पड़ती है, उधर ही वह पागल होकर दौड़ पड़ता है। शरीर तृप्त होकर आत्मा की भूख मिटाने के लिए आकुल है** किन्तु मार्ग नहीं मिल पा रहा और अन्ध-विश्वास पनप रहे हैं।

ज्ञान का आरम्भ **'आत्मा'** से होता है। **'मैं'** शरीर नहीं हूँ, अपितु शरीर मेरा साधन हैं **'मैं'** कुछ और हूँ। **मैं क्या हूँ?** इन प्रश्नों का उलझा उत्तर ज्ञान का विषय है। **धर्म नाम है उस मार्ग का, जिस पर चलकर आत्मज्ञान प्राप्त होता** है।

आधुनिक युग के महान **ऋषि दयानन्द सरस्वती ने अपने अगाध ज्ञान भण्डार से जो मोती बाँटे हैं उनमें सबसे प्रमुख यही मार्गदर्शन है कि......**

1. मनुष्य इस संसार में रहते हुए और संसार के सभी शुभ कर्मों को करते हुए धर्म मार्ग पर चल परमात्मा का प्रत्यक्ष कर सकता है।

2. परमात्मा से मिलने के लिए आवश्यक है केवल **आत्म ज्ञान** की। अपने को जान कर कोई परमात्मा से दूर नहीं रह सकता और **अपने को न जानकर कोई परमात्मा को कभी नहीं जान सकता।**

ईश्वर एक है। एक सर्वत्र व्यापक है। उसे खोजने की आवश्यकता नहीं। आवश्यकता है कि हम अपने को जानें, प्रकाशित करें। **धर्म अपने को, आत्मतत्व को ज्योतित करता है। अधर्म आत्मतत्त्व को अन्धकार कूप में ढाँकता है।** अशुभ पाप कर्म आत्मा के चारों ओर अज्ञान का ताना-बाना बुनते हैं। पुण्य शुभ कर्म आत्मा के स्वरूप का दर्शन कराते हैं।

ईश्वर से मिलना इसलिए है कि आत्मा की भूख-प्यास बिना प्रभु से मिले तृप्त नहीं होती। हम भूख लगने पर रोटी और प्यास लगने पर पानी खोजते हैं। ऐसे ही आत्मा अपनी भूख और प्यास मिटाने के लिए ईश्वर से मिलना चाहती है। मनुष्य अज्ञान के कारण जब इस भूख और प्यास को

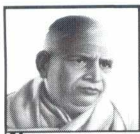

महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणी

अनुभव करता हुआ भी अनुभव नहीं कर पाता, तब वह अपने को भुलाता जाता है। अपने को अन्धकार में डाल संसार के भौतिक पदार्थों में वह सुख और आनन्द की खोज करता है पर सब कुछ मिलते जाने पर भी उससे प्रश्न उलझते ही जाते हैं।

इस उलझन का हल यह है कि धर्म मार्ग पर चलो। ज्ञान को ज्योतित कर अपने रूप को पहचानो, **अपने को जानकर अपने प्रियतम प्रभु से मिलो। वह वह ही है।** उसकी कोई उपमा नहीं। उसका-सा और कोई नहीं। **उससे मिलने के लिए पाखण्डी गुरुओं के चक्कर में न भटककर बिना किसी सिफारिश के अपने मन मन्दिर में आप उससे मिल सकते हैं।**.....मन का मैल मिटाओ, अपने को देखो, जानो! तुम्हारा प्रभु तुम्हारे पास होगा और **तब तुम वह पा लोगे, जिसे त्रिलोकी का राज्य भी तुम्हें नहीं दे सकता।......**

(जनज्ञान पौष सम्वत् 2029)

जीने की बात करो!

भारत रहे का अर्थ है भारत की संस्कृति, आदर्श, इतिहास, परम्पराएं जीवित रहें। बड़े-बड़े काल के गाल में समा गए पर वेद- शास्त्र उपनिषद्-गीता के रूप में आज भी **भारत के पास वह पूँजी है जिसकी तुलना में धरती के साम्राज्य का भी कोई महत्त्व नहीं।** आज भी हम उन्हीं के संरक्षण के लिए लड़ रहे हैं। **हमारी सन्तान इन्हें भूल रही है।** शासन इन्हें भुलवा रहा है। विदेशी शक्तियाँ इन्हें मिटाना चाह रही हैं और इनके रखवारे गहरी नींद में सो रहे हैं।

आज देश धधक रहा है। कोई भी राजनैतिक दल राष्ट्र की रक्षा करने में समर्थ नहीं है। समाज सेवा संस्थानों का उद्देश्य भी धन बटोरना ही रह गया है। न किसी में साहस है, न समस्या पर पकड़ है। ऐसे में देश मृत्यु की ओर न जाए तो कहाँ जाए?

हमसे जो बन पड़ा किया और करेंगे, पर प्रश्न यह है कि क्या ६0 करोड़ हिन्दुओं में से ६ व्यक्ति भी बलिदान नहीं दे सकते?

यदि कुछ व्यक्ति भी बलि वेदी पर शीश कटाने के लिए नहीं आ सकते तो बात, बातों से नहीं बनेगी। **धन-साधन-भाषण समस्या का हल नहीं है। त्याग और बलिदान की भावना ही देश की रक्षा कर सकेगी,** यह सत्य सब समझ लें।

शासन ने हम पर अभियोग आरम्भ किया। धन का अभाव, व्यक्तियों का अभाव, केवल भावना से हम कब तक लड़ें, जबकि साधन शून्य हैं।

समय के प्रवाह को बदलने के लिए प्रत्येक हिन्दू स्वयं सेनापति बने। जोश और होश से अपना कार्य करे। विजय की भावना उसमें व्याप्त हो और अपनी बुद्धि और साधना से एक ही नारा गूँजे-

वन्दे मातरम् गाना होगा या भारत से जाना होगा।

इस नारे में बड़ी शक्ति है। इसमें राष्ट्र की भक्ति का उमड़ता स्रोत है। इसलिए **इस नारे को बल से गुंजाइए और देशभक्ति का वातावरण बनाइए।**

हम मुसलमानों-ईसाइयों से द्वेष न करें, अपितु उन्हें भारत का भक्त बनाएं। भारत के सभी नागरिक चाहे जिसकी पूजा करें पर भारत की महिमा को हृदयंगम करें। उन्हें वेद-शास्त्र-उपनिषद्-दर्शन पर अभिमान हो। मुसलमान राम के भक्त क्यों नहीं बन सकते? कोई बताए तो सही कि वे क्यों नहीं भारत की जन धारा में घुल सकते? सभी की वेश-भूषा यदि एक हो जाए, सबकी भाषा एक हो तो फिर झगड़ा कैसा?

अब एक बात सभी समझ लें कि **औरंगजेब के गीत गाने वाला, तैमूरलंग को महापुरुष मानने वाला, मुहम्मद अली जिन्ना का भक्त, भारतद्रोही तो हो सकता है, भारतभक्त नहीं।...** और भारतद्रोही की नागरिकता हमें समाप्त करनी होगी, **उसे भारत छोड़ना होगा।** जिनके लिए भारत एक धरती का टुकड़ा है, वे इसके प्राणों का स्पंदन नहीं सुन सकते, पर **जिनके लिए भारत माता है**-वे माँ के कष्टों की पीड़ा को अनुभव कर सकते हैं।

जिन नेताओं की राजनैतिक भूल से माँ के टुकड़े हुए, उनका अनुगमन माँ को हानि ही पहुँचाएगा, सशक्त नहीं बना सकता। **कश्मीर, पूर्वांचल सभी कुछ कट रहे हैं। हिमाचल के अनेक भाग आज सुलग रहे हैं। क्या होगा परिणाम?** कौन कह सकता है। इसलिए हमारा आग्रह है कि प्राण और आत्मा को जाग्रत कर भारत माँ की वन्दना करो।

वन्दना के रक्त कण में, एक शिर मेरा मिला लो।

(माघ सम्वत् 2038 के जन-ज्ञान से उद्धृतआज

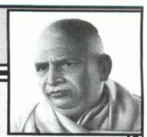

काम मत करो, बातें बनाओ, भाषण दो और नेता बन जाओ!

आज के युग में सबसे बड़ा पाप और अपराध है काम करना! **जो काम करे उससे बड़ा मूर्ख कोई नहीं, क्योंकि जनता अन्धी है,** वह काम नहीं देखती, केवल बातें सुनती है।

पिछले 18 मास से (आज सन् 1982) हम देश को जगाने के लिए दिन-रात काम कर रहे हैं। लाखों की संख्या में साहित्य प्रसारित कर चुके हैं। **देश को जगाने के लिए भयंकर गर्मी में हजारों किलोमीटर की यात्रायें भी कर चुके, पर किसी के कान पर जूँ तक नहीं रेंगी।** किसी ने नहीं सोचा कि यह सब कार्य कैसे चल रहा है?'

आज तक हमने किसी के पास जाकर ''हिन्दू रक्षा समिति'' के लिए एक पैसा नहीं माँगा। पर क्या आपका कोई कर्तव्य नहीं बनता? औरों ने लाखों रुपयों का कोष बना लिया और हम बिना पैसे के दौड़ने की सोचते हैं। **मैं आज इन पंक्तियों द्वारा आप सबसे पूछना चाहता हूँ कि क्या आधे मूल्य में साहित्य का प्रसार और सारे भारत में जागरण का शंखनाद कर हमने अपराध किया?**

आज लाखों की संख्या में साहित्य की माँग आ रही है पर हम अर्थाभाव से माँग पूरी नहीं कर पा रहे। सारा देश जल रहा है। स्वार्थी नेता हाथ सेंक रहे हैं और आप कभी भी यह जाँचने-देखने के लिए तैयार नहीं कि वास्तविकता क्या है? कौन काम करता है और कौन बातें बनाता है? हम तो जैसे भी होगा, जितना सहयोग मिलेगा, काम करते रहेंगे, पर क्या इतिहास कभी आपको क्षमा करेगा?

क्या कभी आपके मन में उत्साहपूर्वक काम को आशीर्वाद देने की भावना नहीं उभरेगी या आप:..पण्डित वही जो गाल बजाए,
नेता वही जो जन बहकाए।....के आधार पर ही सोचते रहेंगे। **जिस उद्देश्य के लिए हम लड़ रहे हैं उसकी प्राप्ति के लिए करोड़ों रुपए चाहियें। ऐसी स्थिति चाहिये कि धन की चिन्ता न करनी पड़े और कार्य होता रहे। पर क्या कभी ऐसा होगा?**

हमारी नीतियाँ, कार्य सब कुछ स्पष्ट हैं? **कभी कोई बात बढ़ा कर कही नहीं, अपितु जो हो रहा है उसका भी विस्तृत विवरण समयाभाव से हम नहीं बता पाते।** पर आपको तो अपने कर्तव्य का चिन्तन करना चाहिए।

सोचिए और देखिए कि आपको क्या करना चाहिए। कार्य को आप महत्व नहीं देंगे तो आने वाली पीढ़ी क्यों काम के प्रति जीवन अर्पित करेगी।

प्रभु सभी को सत्य-असत्य के निर्णय का विवेक प्रदान करें।......

प्रेम से जीता जा सकता है महानगर?

हमारी आँखें अच्छाई देखने की शक्ति खो बैठी हैं। **हम दोष दर्शन में पांडित्य समझ परस्पर आलोचनाओं के शिकार हो गए हैं।**

हमारी आँखें केवल गन्दगी खोजती हैं। **क्या यह जीवन का लक्षण है?** दोष सभी में होते हैं पर कुछ गुण भी तो होते हैं, क्यों न हम सभी के गुणों को चमकाएं!!....

परस्पर प्रेम, एक दूसरे की उन्नति की कामना, सहारा देने की भावना क्या हमारे जीवन का अंग नहीं बन सकती? मेरा प्रश्न है कि **क्या संसार का उपकार करने का दम भरने वाले घर में महाभारत रचाकर ही विश्व कल्याण का कार्यक्रम बनाएंगे?**

श्रद्धा, प्रेम, सौहार्द मिटाकर कोई समाज उन्नति नहीं कर सकता। बिना ऐक्य भावना और सहयोग के प्रगति का स्वप्न मृगमरीचिका ही समझी जा सकती है।

आप स्वयं सोचिए कि आप आखिर जा कहाँ रहे हैं? आपकी मंजिल क्या है? कहाँ जाना था, क्या करना था और क्या कर रहे हैं? क्या हमारा वर्तमान कार्यक्रम ही दयानन्द का लक्ष्य था?

वेद, शास्त्र, ईश्वर, धर्म की बातें करने वाले हम सत्य, प्रेम और स्नेह को भुलाकर कहीं आत्म हवन का

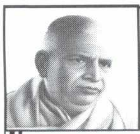

सामान? ही तो नहीं प्रशस्त कर रहे हैं!...

हम नहीं रहेंगे, आप भी नहीं रहेंगे, पर हम सभी के काम इतिहास के पृष्ठों के अमर अक्षर बन जाएंगे। सोचिए और राह बदलिए। प्यार का मन्त्र जीवन का लक्ष्य सूत्र बना लीजिए। **आलोचना के स्थान पर प्रशंसा की भावना जगाइए। और एक-दूसरे को धक्का न देकर सहारा दीजिए।** लड़ने के लिए अवैदिक मत, अज्ञान, अन्धविश्वास और गुरुडम हमारे सामने खड़े हैं। उनसे लड़ने की शक्ति, विजय वरण का वरदान प्राप्त करने के लिए अपने को बढ़ाइए।

जिस दिन आर्यसमाज के सदस्यों के मानस में प्यार की गंगा उभरेगी, जिस दिन हम सबका सुख-दुःख बाँट लेंगे उस दिन विश्व विजय के लिए हमारे चरण बढ़ेंगे और काल भी हमारे सम्मुख नत-मस्तक होगा।......हमारा यह अटल विश्वास है, **आप क्या सोचते हैं। क्या बताएंगे?...**

विजय हमारी होगी

मैं मरघट में बैठकर गा रहा हूँ तो मुझे विश्वास है कि मैं मरघट को भी तीर्थ बना दूँगा। धधकती ज्वालाओं को शीतल पवन में बदलने का राग गाना भी मुझे आता है। इसलिए मैं निश्चिंत हूँ। मेरा यह अटल विश्वास है कि महानाश की आँधी हमारे गीतों से मलयानिल बन जायेगी। धन-जन की वारुणि पीकर मदहोश हुए उन्मत्त समुदाय को सत्य की वीणा मनुष्यता की राह पर चलाने में समर्थ होगी।

हमसे टकराने का प्रयत्न काल से लोहा लेने की नादानी है यह बात जितना शीघ्र सभी समझ लें, उतना ही उत्तम है।

आज भी हमारा है और कल भी हमारा होगा। दो सौ करोड़ वर्ष पुरानी हमारी परम्परायें, झंझावातों के हिमालय से टकराकर सदा विजय वरण करती रहती हैं। राक्षस, पिशाच, दैव्यदयान हमारा स्वभाव रहा है।

सत्य कभी हारा नहीं, इसलिए आज भी हम जीतेंगे-पश्चिम से उमड़ती पादरी-मुल्लाओं की आँधी हम रोकेंगे। भारत माता के लौह लाड़ले बलिदानी परम्पराओं में सदा आगे रहे हैं।

सारा देश अँगड़ाई लेकर जाग रहा है। कन्याकुमारी से कश्मीर तक देशभक्त अब नींद छोड़ रहे हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि अगले वर्षों में ही एक नयी लहर उभरेगी राष्ट्रवाद की, और यह राष्ट्रवाद साम्प्रदायिकता को समूल नष्ट करने में सफल होगा। विजय हमारी होगी, यह अटल विश्वास लेकर बढ़ रहे हैं हम।......

("जनज्ञान मासिक" आषाढ़ सम्वत् 2038 से...)

परम्परा पर अभिमान

आप सब मृत्यु को बुला रहे हो, आत्महत्या कर रहे हो, भारत को नष्ट कर रहे हो, जानबूझ कर, केवल आलस्य से, प्रमाद से या स्वार्थ से। **करोड़ों वर्षों से चली आ रही सत्य और नैतिकता की दीवारें काँप रही हैं।** कभी धर्म की जय सुनते थे, आज पापों की जय गूँज रही है। **असत्य बढ़ रहा है। अत्याचार छा रहा है और तुम केवल मूक दर्शक हो।** सोचता हूँ क्या हो गया है तुम्हें? **कब नींद खुलेगी तुम्हारी.... जब सब मन्दिरों पर क्रास लग जाएगा? या उनमें प्रार्थनाएं नहीं, अजान होंगी** या जब मनुष्य मनुष्य न रहकर राक्षस हो जाएगा?

क्या हो रहा है उन सब को जो गौ-गंगा-गायत्री के गीत गाते हैं। क्या हो गया है उन्हें जो राम-कृष्ण के वंशज हैं। कहाँ सो गए हैं वे जो प्रताप-शिवा की संतानें हैं। कैसा विष पी लिया सबने?....

धर्मनिरपेक्षता का....समाजवाद का या स्वार्थ का किसी को न धर्म स्मरण है न मृत्यु.... **पूछता हूँ क्या सब कुछ माया अपने साथ लेकर जाओगे?**

प्रश्न न हिन्दू का है, न मुसलमान का.....न ईसाई का। प्रश्न है शाश्वत सत्य का, धर्म का, मानवता का। **हमारा विरोध उन शिक्षाओं से है जो मनुष्य को पशु ही नहीं राक्षस बनाती हैं।**

पूर्वाञ्चल धधक रहा है, दक्षिणाञ्चल सुलग रहा है, उत्तराञ्चल उबल रहा है और मध्य पश्चिम में षड्यन्त्र पल रहे हैं-चल रहे हैं।

एक मुस्लिम विश्वविद्यालय यदि भारत के टुकड़े करा सकता था तो 12 मुस्लिम विश्वविद्यालय बनने पर क्या परिणाम होंगे? जब मेरा घर ही नहीं

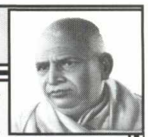

रहेगा, तो हम कहाँ रहेंगे? गंगा कहाँ रहेगी, मन्दिर कहाँ रहेंगे..? वेदशास्त्र कहाँ रहेंगे...?

सोचो और कुछ करो....अन्यथा मरो और कोई राह नहीं है। हम अपने सोचने का ढंग बदलें. ...अपने धर्म पर अपनी परम्परा पर अभिमान करें। हम उन सब आसुरी विचारों को मिटाने का व्रत लें जिससे संसार की शान्ति भंग हो रही है।

स्वयं सोचिए और निर्णय कीजिए अपना कर्त्तव्य! **इस कार्य में आप यथाशक्ति धनराशि मासिक: क्या आप नहीं भेज सकते?**........मुसलमान 12 विश्वविद्यालय खोल सकते हैं **कुरान** की शिक्षा के लिए, तो हम **'वेद'** की शिक्षा दीक्षा के लिए एक **'विद्यापीठ'** स्थापित नहीं कर सकते?

हमने एक सपना देखा था, जिसका आरम्भ वेद मन्दिर के रूप में किया, अर्थाभाव से सब काम रुक रहा है, हमें तो अब बाहर जाने का निषेध है। अत: यहीं बैठकर आपको कुछ कह सकता हूँ।

यदि आप निर्धन हों तो भी प्रतिमाह 10 रु. वेद मन्दिर के लिए अवश्य भेजिए। जो अधिक भेज सकें वे अधिक भेजें। आपका सहयोग ही हमारी शक्ति है।......

मृत्यु या जीवन?

आज जहां हम हैं **यह निर्णय करना है कि हमें जीवन चाहिए या मृत्यु?**

आइए, विचार तो करें कि हम कहां खड़े हैं? **इस समय भारत में आर्यसमाज की शक्ति सर्वाधिक है। इसके पास न धन का अभाव है न जन का, भवन और विद्यालय भी पर्याप्त हैं।** फिर भी निष्पक्ष चिन्तन हमें इस निष्कर्ष पर पहुंचाता है कि **आज राष्ट्र पर आर्यसमाज की छाया नहीं है।** जन-जीवन पर हमारा प्रभाव नहीं है। **अज्ञान पर आधारित छोटे-छोटे मत उभर रहे हैं और समय की दौड़ में हम पिछड़ रहे हैं... क्या कभी आपने सोचा है कि ऐसा क्यों??** जबकि हमारे सिद्धान्त सत्य और अजेय हैं।

आप ने नहीं सोचा और न सोचने के लिए आपके पास समय ही है–किन्तु आज ज्ञान के इस पर्व पर अज्ञान के बढ़ते प्रवाहों को देख हमें सोचना ही होगा कि क्या कारण है इस उल्टी गंगा का...

आइए, निष्पक्ष भाव से स्थिति का विचार करें–**हमारी दृष्टि में इस समय की स्थिति का कारण है**–1. 'वेद' की उपेक्षा 2. महर्षि दयानन्द के प्रति श्रद्धा का अभाव 3. लक्ष्य भ्रष्टता 4. विद्वानों की उपेक्षा और अविद्वानों का सम्मान 5. ईश्वर के प्रति अनास्था 6. धर्म भावना की समाप्ति 7. आर्यसमाज का व्यापारीकरण 8. पदलोलुपता व स्वार्थ परायण 9. सामयिक आन्दोलनों द्वारा सस्ती नेतागिरी की भूख 10. स्वाध्याय-साहित्य का अभाव।

इन सभी कारणों पर विवेचन करने से पूर्व हम क्षमा याचना सहित अत्यन्त दृढ़ता से यह कहना चाहते हैं कि–**हमारी भ्रष्टता से आज का आर्यसमाज संगठन महर्षि दयानन्द का संगठन नहीं रह गया है। आर्यसमाज के भवनों में बैठे अधिकारी वर्ग के पास सब कार्यों के लिए धन भी है और शक्ति भी, किन्तु यदि उनके पास कुछ नहीं है तो ऋषि दयानन्द के कार्यों के लिए इच्छा और आस्था।**

आर्यसमाज संगठन द्वारा ऋषि के पावन उद्देश्य की जो घोर उपेक्षा की जा रही है उसका स्पष्ट परिणाम है कि **हमने, दयानन्द की जय बोलने वालों ने, अपने हाथों दयानन्द की भावना को समाप्त कर दिया है।**

कितनी पीड़ा होती है हृदय में, किसे बताऊं, कौन सुनेगा-कौन समझेगा, जो तूफान उठता है मन में। जब देखते हैं कि यह दयानन्द का नाम लेने वाले आज दयानन्द के लिए कुछ करना पाप समझते हैं। इनके लिए पुण्य है आन्दोलन, कभी कोई, कभी कोई... पर कोई भी संगठन वेदप्रचार आन्दोलन नहीं चलाता। **कोई पाखंड-खंडिनी नहीं उठाता, कोई पाखंड के गढ़ों पर प्रहार नहीं करता। ऋषि के पवित्र नाम पर बहका कर स्वार्थ सिद्ध तो किए जाते हैं पर कोई ऋषि का कार्य नहीं करना चाहता,** आखिर यह सब क्या है, क्या होगा हमारा अन्त, कभी सोचा है???

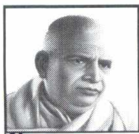

महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणी

आर्य भाइयों और बहनो! हम यह पंक्तियां आपको जगाने के उद्देश्य से लिख रहे हैं।

हम सोए-भटके आर्यसमाज को जगाकर ऋषि दयानन्द के तेजस्वी आर्यसमाज का रूप देना चाहते हैं। हम प्रत्येक आर्यसमाज को दयानन्द-संदेश-प्रसारक-केन्द्र के रूप में परिवर्तित करना चाहते हैं। हम भारत के प्रत्येक नागरिक को ऋषि दयानन्द का अनुयायी बनाना चाहते हैं। हमें न राज्य चाहिए, न धन। हमारा शरीर तिल-तिल कर भले ही जल जाए पर हम समवेत स्वरों में भारत के करोड़ों नागरिकों के मुख से ऋषि दयानन्द की जय ध्वनि सुनना चाहते हैं।

नींद-प्रमाद स्वार्थ के लिए लड़ते रहोगे, क्या तुम्हें दयानन्द का पवित्र नाम भी नहीं जगा सकेगा? सोचता हूं तो सोचता ही रह जाता हूं, **समझ नहीं आता, कौन-सा शंख बजाऊं कि यह सोयी दयानन्द की सेना जाग जाए** और कहे-

दयानन्द के वीर सैनिक जगे हैं
अंधेरा धरा पर न अब टिक सकेगा!

तो आइए क्रमशः विचार करें गहरी नींद के कारणों पर-

1. वेद की उपेक्षा-'वेद' हमारा धर्म ग्रंथ है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना हमारा परम धर्म है।

किन्तु क्या हमारा परम धर्म साधारण धर्म भी रह गया है? **प्रत्येक आर्य आज अपने से पूछे, क्या वह वेद का स्वाध्याय करता है? क्या वह वेद का संदेश दूसरों तक पहुंचाता है? और इससे भी पहले एक उभरता प्रश्न, क्या आपके घर में 'वेद' है? यदि नहीं तो फिर क्या अधिकार है आपको अपने को वैदिक धर्मी कहने का?........** सोचिए और निर्णय कीजिए कि-

1. आज से प्रतिदिन वेद का स्वाध्याय करूंगा।
2. चारों **'वेद'** आज ही घर में लाऊंगा।
3. प्रतिमास **'वेद'** सम्बन्धी साहित्य अपने मित्रों को बांटूंगा। कम से कम 50 रुपए का।
4. **वेद** का संदेश फैलाने में पूरी शक्ति लगाऊंगा।

प्रत्येक ऋषि भक्त से हम प्रार्थना करते हैं कि उसे यदि तनिक भी **'वेद'** पर श्रद्धा है तो इन संकल्पों को जीवन में धारण करें। हम समझें, **"वेद ही जीवन हमारा वेद ही आधार है।" 'वेद' नहीं तो हम नहीं। वेद उभरेंगे तो हम उभरेंगे, सत्य उभरेगा, मनुष्य बनेगा**, अन्यथा सर्वनाश कौन रोकेगा?........

बढ़ते तूफान से टकराओ! आर्यों, घबराओ नहीं, **'वेद'** को अपनाओ, विजय तुम्हारे चरण चूमेगी।

(जनज्ञान मासिक "अगस्त 1966 से...)

धर्म और क्रान्ति

क्रान्ति का अर्थ है परिवर्तन-विकास, आनन्द और शान्ति के लिए। **दुःख समाप्त करने के लिए उठाए जाने वाले पगों का, कार्यक्रमों का नाम क्रान्ति है।**

क्रान्ति जीवन देती है, मृत्यु को निर्माण में बदल देती है। **सर्वनाश की आंधी में जीवन का संगीत बजाने का नाम क्रान्ति है।** तूफान में अडिग रहने का चिह्न **क्रान्ति** है।

क्रान्ति अमृत है, प्यार है, संगीत है, प्रेरणा है और सबसे बढ़कर वरदानों की गंगा है। उसके द्वारा हम वृद्ध को युवा, रोगी को सशक्त बना देने का उपक्रम करते हैं।

धर्म की स्थापना और अधर्म की समाप्ति क्रान्ति का उद्देश्य है। धर्म किसी लकीर पीटने का नाम नहीं, धर्म तो मनुष्य को मनुष्य बनाने के दर्शन की व्याख्या है। **धर्म वह आधार है, जिसके द्वारा मनुष्य सुख-शान्ति और आनन्द प्राप्त करता है।**

जहाँ सुख है वहाँ धर्म है, जहाँ शान्ति है वहाँ धर्म है, जहाँ आनन्द है वहाँ धर्म है। या यह कह लीजिए कि जहाँ ये तीनों हैं वहाँ धर्म है। **धर्म की स्थापना मनुष्य की मूलभूत प्रारम्भिक आवश्यकता है।**

वर्त्तमान शिक्षा में सब कुछ है पर धर्म नहीं है। आज का सन्देश-युग धर्म उस देह के चारों ओर रहता है जो नाशवान् है। **आत्मा को भुलाकर, शरीर को सजाकर आधुनिक चिन्तन उन्नति की ओर बढ़ रहा है। किन्तु उन्नति अवनति की चरम सीमा बनती जा रही है।**

मैं हृदय-मन्दिर से लिख रहा हूँ

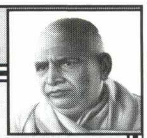

क्या लाभ उस ज्ञान का, जो शान्ति न दे सके? क्या करें उस धन का, जो दु:खों को जन्म दे? आज का प्रवाह सशक्त है किन्तु **हमारा विश्वास है कि कल फिर हमारा होगा।** वर्तमान को अपनी भूल स्वीकार कर धर्म की शरण ग्रहण करनी होगी–उस धर्म की, जिसका मार्गदर्शन स्वयं प्रभु ने आदि सृष्टि में मानव मात्र के लिए किया था।

क्रन्दन के गीतों को सुनकर हमारा मन व्यथित है। **रुदन के स्वर ने हमें अधर्म को ललकारने का सामर्थ्य दिया है। हमारे प्राणों की मेधा ने वर्तमान को देखकर भविष्य की कल्पना की है और हम अपनी आहुति देकर भी कल का निर्माण उस गहरी नींव पर करना चाहते हैं जिसे धर्म कहते हैं।**

धन और भौतिक साधनों के अभाव में भी विश्व को बदलने की बात आपको भले ही पागलों की बहक लगे, पर एक अणु जब शक्ति से विस्फोट करता है तो प्रलय आ जाती है।.....

हम धर्म के धन से, ज्ञान की शक्ति से और प्रभु की प्रेरणा से क्रान्ति यज्ञ का आह्वान कर रहे हैं। आज आप साथ दें या न दें, हमें भले ही ठुकराते रहें किन्तु आने वाला कल निश्चय ही हमारा होगा। **हम धर्म की स्थापना करेंगे। क्रान्ति होगी, अधर्म मिटेगा। हमारे गुरु ने जो सपना देखा था, उसे प्राण देकर भी पूर्ण करना हमारा एकमात्र लक्ष्य है।**

क्रान्ति और धर्म के यज्ञ में क्या आप हमारे साथ आहुति बनेंगे?......

("जनज्ञान मासिक" मार्च 1979 से...)

दीप जलाओ और ऋषि दयानन्द को जीवित करो

अंधेरा बहुत गहरा हो चुका है, प्रकाश कहीं दिखायी नहीं देता, मैं ज्योति की एक किरण देखने के लिए उत्सुक हूँ किन्तु **गहन तमस् में शून्य के अतिरिक्त और कुछ भी तो प्रतीत नहीं हो रहा है!!!!!**

तुम दीपमाला मनाओगे, अपना घर-आंगन दीप पंक्तियों से सजाओगे, फुलझड़ियाँ तुम्हारे मन में उभरेंगी पर मेरा हृदय तो इन सब में वह नहीं देख पा रहा जिसे देखने के लिए वह व्याकुल है।

आज गुरुदेव दयानन्द का बलिदान दिवस है। पाचक जगन्नाथ ने घातक बन मेरे गुरु की देह को समाप्त करने का अपराध किया था, उस दिन भी दीवाली थी। किन्तु **भौतिक शरीर के त्यागने के बाद भी ऋषि दयानन्द मर नहीं सके। वे जीवित रहे नाना रूपों में, गुरुदत्त, लेखराम, श्रद्धानन्द और बलिदानी शहीदों के रूप में, आर्य भाई-बहनों** की श्रद्धा में, उत्साह के ठाठें मारते जोश में। ***मेरा मन नहीं मानता कि दीवाली के दिन 1883 में ऋषि दयानन्द नहीं रहे।***

मैं अपनी आँखों से प्रत्येक दयानन्द भक्त को ऋषि दयानन्द की छाया–प्रतीक रूप में देखता हूँ। जहाँ ऋषि के प्रति श्रद्धा है वहाँ मेरा गुरु जीवित है। इसलिए मैं कहता हूँ कि ऋषि दयानन्द को सर्वत्र जीवित करो।

मेरा गुरु दयानन्द साधारण नहीं, अनुपम था, वह 'वह' ही था, उसका एक-एक गुण उसकी महत्ता का परिचायक है। वह मनुष्य-मात्र का उद्धारक सचमुच देवता था, **ऐसा देवता जिसने सब कुछ दिया, और बदले में पिये विष के प्याले!!** पर विष के प्याले पीकर भी वह अमर बन गया, उसे कोई मार नहीं सका, वह अजेय था।

पर आज कभी-कभी अनुभव होता है कि मेरे गुरु की हत्या हो गई है? **अन्तर्मन पूछता है किसने मारा दयानन्द को??** उत्तर मिलता है–"**दयानन्द की जय" बोलने वालों ने।** उन्होंने जो दयानन्द का नाम लेकर नेता बने, ऋषि दयानन्द की हत्या करने का यत्न किया है।

ये बड़े-बड़े भव्य भवन, ये विशाल संगठन, ये लच्छेदार भाषण देने वाले नेता मेरे गुरु के हत्यारे हैं। यह बात लिखते हुए मुझे कितनी पीड़ा होती है, कौन समझेगा, किस के पास श्रद्धा है, किस के पास हृदय हे जो मेरे दर्द का अनुभव कर सके!!!

कचहरियों और समाचारपत्रों में लड़कर दयानन्द

महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणी

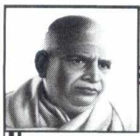

का नाम लेने वाले इन दयानन्द-भक्तों(???) को आप भले ही क्षमा कर दें किन्तु इतिहास क्षमा नहीं करेगा।

नारे लगा कर, झूठे आन्दोलन चला कर, जनता को सब्जबाग दिखा कर इन्होंने ऋषि भक्तों को ठगने के अतिरिक्त आज तक क्या किया है? क्या कर रहे हैं ये आज आर्यसमाज के लिए, ऋषि दयानन्द के लिए?

कौन पूछे कौन उत्तर दे, जब सभी भटक रहे हैं। दयानन्द के लाखों अनुयायी आज भी जीवित है, जन मानस में ऋषि के प्रति श्रद्धा का सागर आज भी विद्यमान है। आशा की किरण यही है, और इन्हीं से मेरा मन कहना चाहता है कि **दीवाली के दिन ऋषि दयानन्द को पुनः जीवित करो।**

ग्राम-ग्राम और गली-गली में दयानन्द के गीत गुंजाने का प्रयत्न करो। अपनी शक्ति अपने क्षेत्र में केन्द्रित करो और ऋषि दयानन्द का प्रकाश फैलाने में लग जाओ।

सत्यार्थ प्रकाश, ऋषि जीवन और वेद हमारे अस्त्र बनें। इनके द्वारा हम विजय करें, ज्योति बिखेरें।

मैं चाहता हूं कि सारा आर्यसमाज अब केवल एक आन्दोलन चलाये–**"वेद-प्रचार-आन्दोलन।"** हम सब कुछ भूल जाएं और याद करें वेद को। उस वेद को, जिसे हम अपना धर्म-ग्रन्थ मानते हैं।

हमें बढ़ना है, जीवन के अन्तिम क्षण तक और चले जाना है। जीवन में हम वह दिन देख सकेंगे जब सर्वत्र ऋषि दयानन्द की जय-जयकार सुनाई देगी।

निराशा की इन घड़ियों को आशा-प्रकाश ज्योतित करने हेतु दीप जलाओ

ऋषि भक्तों! दीपावली के दिन आत्म निरीक्षण कर हृदय मंदिर को पवित्र कर वहां 'ज्ञान-दीप' ज्योतित करो। मन और मस्तिष्क का अंधेरा भगाने के लिए दीपावली से अधिक पवित्र दिन और कौन-सा होगा?

आर्यसमाज के भवनों को, ऋषि की भावना और वेद-ज्योति से जगमगाओ। श्रद्धा की प्रेरणा और प्रभु का प्रकाश हमारे धर्मस्थान में तेज पुंज बन कर प्रकटे। हमारा जीवन देख अन्यों को प्रकाश मिले। **अपने कर्म से धर्म को जीवित करो। अपने प्राण से ज्ञान को गति दो।** एक बार सारे ढांचे को दयानन्दमय कर दो। **फिर देखो, इस धरती से अंधेरा कैसे भागता है?**

घातक जगन्नाथ के साथी मत बनो! मेरे भाई! **याद करो वह दीवाली की शाम**, जब गुरुदेव दयानन्द ने अपने प्राण छोड़ते हुए तुम्हें प्रभु इच्छा पूर्ण करने का आदेश दिया था। तुम **उस दृश्य को मन की आंखों से देखो।** देखो तो सही, आज भी तुम्हें ऋषि का सन्देश गूंजता सुनाई देगा।

प्रभु आज्ञा का पालन करो। प्रभु के मार्ग पर चलो! सभी को चलाओ! वेद-ज्ञान प्रकाश फैलाओ!

यदि आत्मा की पुकार में बल है, यदि ऋषि दयानन्द नाम है उस देवता का जो सत्य का प्रतीक है तो उसे–**मेरे गुरु को, कोई मार नहीं सकता।** न जगन्नाथ पाचक, न नेता। देव दयानन्द अमर हैं, उनकी अमरता उनके संदेश प्रसार में निहित है।

दीवाली के दिन मैं तुम से दयानन्द का सन्देश फैलाने का व्रत लेने की प्रार्थना कर रहा हूँ। मैं तुमसे याचना कर रहा हूँ–सारे द्वेष-भाव समाप्त करने की। मैं तुम्हें पुकार रहा हूँ दयानन्द का प्रकाश फैलाने के लिए।

आप घर में दीपक जलाते हुए यह न भूलें कि धरती पर अभी बहुत अन्धेरा है। यह अन्धेरा मिटाने और ज्ञान-दीप जलाने के लिए जो भी कर सकते हों, कीजिए!!

**दयानन्द का काम पूरा करने का,
दयानन्द के दिखाये मार्ग पर चलने का,
'वेद' प्रकाश सर्वत्र फैलाने का व्रत लेकर
ऋषि दयानन्द को जीवित कीजिए।**

(अक्टूबर 1941 "जनज्ञान" से...)

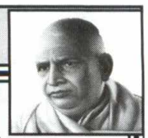

मेरे मन की पीड़ा

मैं अकेला आया, अकेला धरती पर रहा और अब लगता है **अकेले ही जाना होगा**। इतने बड़े जहान में एक भी मन मुझे समझ नहीं सका। कोई मेरे मन के तारों के साथ गा नहीं सका। **कोई मेरे भावों की भावना अपना नहीं सका**।

किसी को दोष क्यों दूं, मैं ही शायद भटकता रहा हूं। क्योंकि कोई भी मेरे सपनों में रंग भरने को तैयार नहीं। यह मेरे चिन्तन का ही अपराध होगा, यही कह सकता हूं।

जीवन भर जला हूं पर कोई मेरे साथ जलने वाला नहीं, पर एक आग मन में थी, वह आग मेरे साथ ही बुझ जाए, इससे बढ़कर पीड़ा और क्या होगी?........

झूठ की बेल को फैलते देखा है, ढोंलों को शहनाइयां बजाते सुना है, आदर्शों के ढोल पर लाखों को लुटते पाया है पर **सच्चाई की आवाज पर मरने वालों को देखने के लिए आंखे तरस गयी हैं।**

धर्म की बात करने वाले, धर्म प्रचार का नाद गुंजाने वालों को धर्म से कोसों दूर पाया। **धर्म प्रचार व्यापार बन गया है** और धर्म प्रचार की बात मुसीबतों का हिमालय बनकर मेरे सामने सदा खड़ी रही है।

कितने अरमान थे, धर्म का सन्देश फैलाने के, कितनी उत्कंठा थी, मत-वाद समाप्त करने की। **कितना उत्साह था पापों को जलाने का**। काल से भी टकराने का साहस मन में लेकर धरती को चुनौती देने में कभी संकोच नहीं किया।

और **आज भी मन-मस्तिष्क वही है जो 30 साल पहले था। एक भी विचार नहीं बदला। मन आज भी बली है पर समय के थपेड़ों से शरीर साथ छोड़ रहा है।**

मुझे कोई दुःख नहीं, आज भी अटल विश्वास लेकर बढ़ रहा हूं। **दर्द सिर्फ इतना है कि मेरी आवाज कमजोर सिद्ध हुई, किसी को अपना हमराह न बना सका।......**

दयानन्द के आदर्शों के अतिरिक्त कभी कुछ सोचा नहीं। उस महापुरुष के सपनों के लिए जीवन लगाया और जो क्षण बचे हैं उन्हें लगाऊंगा, अकेला ही चलूंगा, लड़ूंगा, बढ़ूंगा कोई मेरी पुकार सुने न सुने चिन्ता नहीं। सब कुछ मेरे साथ मेरी चिता पर जल जायेगा, तो भी मुझे कोई गम न होगा।

आप से भी मेरा नाता तभी तक और उतना ही तो है जितना आप मुझे समझ सकते हैं। हजारों लोग ऐसे हैं **जिन्हें मैं नहीं जानता फिर भी वे मुझे प्यार करते हैं। मेरी आवाज सुनते हैं। मेरे कामों को पूरा करने के साधन जुटाते हैं। मैं उन दूर पार के अपने प्रिय जनों को कैसे भूल सकता हूं। जो कमी है वह मेरी है क्योंकि मैंने सदा चद्दर में अधिक पैर फैलाए हैं। इसलिए शायद कष्ट भी मिले हैं।**

आज मैं एक बुझता हुआ दीपक हूं। यमुना **बाढ़ ने मुझे 10 वर्ष अधिक वृद्ध बना दिया। सारे कामों को पीछे ढकेल दिया।** इस भयंकर मुसीबत में भी अकेला वेद मन्दिर में बैठकर यह सब कुछ लिख रहा हूं।

वेद मन्दिर का सपना क्या आपका सपना नहीं बन सकता? क्या मस्जिद-गिरजाघर और मतों की पूजा स्थानों से भरी धरती पर परमात्मा की आवाज फैलाने वाला एक शक्तिशाली केन्द्र नहीं बन सकता?

सोचता हूं तो मेरा मन कहता है बनेगा, जरूर बनेगा, मरने से पहले मैं वेद मन्दिर का वह रूप देखूंगा, जहां धरती का सारा मानव पुजारी बनकर अपना-अपना सौभाग्य मानेगा।

वेद मन्दिर दयानन्द से देवता के सपनों की पूर्ति का केन्द्र होगा। वेद मन्दिर भारत की प्राचीन संस्कृति के प्रसार का आधार होगा। वेद मन्दिर में मत-वादों को समाप्त करने का प्रवाह चलेगा। अज्ञान को मिटाने-ज्ञान को फैलाने के लिए वेद मन्दिर गंगा के समान पावन वेद प्रकाश को भूमंडल में फैलाएगा।

सपना देख रहा हूं। **चाहता हूं कोई मुझ से**

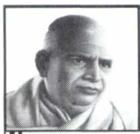

प्यार करे, मेरे सपनों में खो जाए और कहे! **तुम जाओ अब तुम्हारी जगह में जलूंगा, तुम्हारे काम मैं करूंगा।**

मेरे प्राणों को हाथ चाहिएं। जीवन मांगता हूं इसलिए कि जीवन दे चुका हूं। **जीवन भर जो दयानन्द का सपना पूरा करने के लिए जिन्दा जल सके ऐसे उत्तराधिकारी चाहता हूं।**

कोई आएगा, यह देह सदा किसी की भी नहीं रहेगी–फिर क्या कोई अपनी देह का मोह-त्याग कर अपनी आत्मा को ज्योतिर्मय कर वेद-ज्योत्स्ना को छितरा कर धरती का अशान्ति हरेगा।

धर्म की स्थापना के लिए प्राण चाहिएं। प्राण दो इसलिए कि प्राण को सजा सको। स्वयं जलो इसलिए कि ज्वाला को मिट सको।

प्राणों की दीप्त शक्ति से गुहार लगा रहा हूं। **काश!!** कि किसी के अन्तर में मेरी भावना रेखा पहुंच कर मेरी राह की, आशा की भाषा से, भाषा के भावों से, भावों की गरिमा से,गरिमा की गूंजों से गुंजा सकती।

राह देख रहा हूं धर्म को जीवन देने के लिए– धर्म की स्थापना के लिए किसी प्रभु पुत्र की।

(12 दिसम्बर 1978 जनज्ञान साप्ताहिक)

यज्ञाग्नि आहुति मांगती है

1857 में यज्ञ आरम्भ हुआ था। **आरम्भकर्त्ता थे युग-प्रवर्तक "देव दयानन्द।"** इस यज्ञाग्नि की ज्योति ने धरती के भाग्य को नयी दिशा दी। दिशाओं में गुञ्जित पाखंड ध्वनि को वेद की ऋचाओं ने संगीत में बदल दिया। **इस यज्ञ की सुगन्ध जहां-जहां पहुंची, वहां-वहां अज्ञान समाप्त हो गया।** विनाश के तांडव को, निर्माण की ध्वनि पर नृत्य करने हेतु बाध्य होना पड़ा। नए भाव उभरे, नए स्वर गूंजे, नई विधा से प्राचीनतम का चित्र साकार मुखरित हो गया।

राष्ट्र को दिशा मिली, विश्व ने प्राण पाए, आत्मा ने परमात्मा के साक्षात्कार का दर्शन प्राप्त कर अंधकार से मुक्ति का आनन्द अनुभव किया। निशा में आलोक उभरा, विहान में प्रकाश के दर्शन हुए और युग ने नयी अंगड़ाई ली।

अग्नि मन्द न होने पाए, इसलिए लेखराम, लाजपतराय, श्रद्धानन्द, राजपाल अदि अनेकों महापुरुषों ने अपने जीवन को समिधा रूप में अर्पित किया। आहुतियां होती रहीं, यज्ञ चलता रहा। धर्म का नाद गूंजता रहा और वेद के प्रकाश से अधर्म काँपता रहा।

किन्तु भौतिक प्रभाव का प्रवाह फिर उभरा। त्याग-बलिदान का वृक्ष सूखा, यज्ञाग्नि मन्द हुई और एक बार फिर नकली भगवान, नकली धर्मोपदेशक अज्ञान के प्रतिनिधि बनकर बढ़ने लगे।

100 वर्ष बीत गए, हमने देखा-परखा-सोचा-समझा और **एक बार फिर 1875 से आरम्भ यज्ञ कुंड में ज्वाला ज्योतित करने को मन मचल पड़ा।** हाथों में सामग्री, घृत लेकर हमने फिर से ज्योतित की लौ को धधकाने का व्रत लिया है। क्या आप भी हमारे व्रत में साथी होंगे???

हम नहीं पूछते कि आपके पास क्या है? आप कौन हैं? हमारा प्रश्न केवल इतना है कि "आपको देव दयानन्द पर कितनी श्रद्धा है? उनसे कितना प्यार है?"

भाषण, प्रस्ताव, योजनाएं नहीं, बलिदान चाहिए। काम चाहिए, श्रद्धा चाहिए। क्या आप यज्ञाग्नि बुझने देंगे? **क्या आप कुछ करेंगे, बढ़ेंगे?..**

प्रश्न गूंज रहा है। उत्तर की प्रतीक्षा में!।

(फाल्गुन सम्वत् 2032 जनज्ञान)

समय के साथ मत बहो। समय को बदल दो।

आज समय"उल्टा बह रहा है। झूठ सच, पाप, पुण्य, अधर्म धर्म बन गया है। सारी परम्पराएं और नैतिक मान्यताएं बदल रही हैं।

लगता है यह धरती पशुओं और राक्षसों की कर्मस्थली बन गई है। शाश्वत मूल्यांकन की शक्ति

मैं हृदय-मन्दिर से लिख रहा हूँ

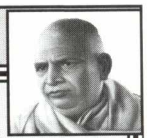

भय खा रही है। **मनुष्य अपने ही हाथों अपनी समाधि का निर्माण कर रहा है।**

हम ऐसे में ऊंचे शिखर पर खड़े होकर प्रभु पुत्रों का आह्वान करते हुए कहते हैं–

मत बहो प्रवाह में, प्रवाह को रोककर,
उसे दिशा दान दो! नये सूर्योदय के लिए,
प्राण दो, प्रमाण दो!

*आदि सृष्टि से आज तक फहराती लहराती सत्य की पताका को गिरने न देने के लिए **क्रान्ति** की आवश्यकता है। **जर्जर समाज को सुदृढ़ चट्टान सम बनाने के लिए प्राणों की ईंटें चाहिएं। समानता, एकता, सत्य, नैतिकता की रक्षा के लिए धर्म की ज्योति का जागरण नाद चाहिए।***

मत-वाद विष घट बनकर सत्य को मार रहे हैं। राजनीतिज्ञ कुर्सी के लिए आग को हवा दे रहे हैं। **धर्म के ठेकेदार धर्म करते हुए धर्म प्रचार का नाटक कर रहे हैं।** ऐसे में आवश्यकता है सर्वतोमुखी क्रान्ति की, ऐसे तीव्र प्रकाश की, जो अन्धकार को समूल समाप्त कर सके।

अंतरिक्ष को ज्योतिर्मय कर, नवजीवन छितराओ रे!
सांस-सांस में आस भरी हो, शक्ति दूत बन जाओ रे।
ओ प्रभु के प्यारे पुत्रों तुम, नए जागरण गीत गुंजाओ रे।
धर्म सत्य की अमर पताका, मानव मानस पर फहराओ रे!!

(चैत्र सम्वत् 2038 "जनज्ञान")

ईसाई धर्म प्रचारकों का कुचक्र:
सावधान हिन्दू समाज

- ईसाई धर्म प्रचारक श्रमिकों, अशिक्षितों और वंचित समाज को अपना शिकार बनाते हैं।
- शुरू में, इन्हें आश्वासन दिया जाता है कि, यदि आप हमारी प्रार्थना सभाओं में आयेंगे तो आपके कष्ट दूर हो जायेंगे।
- जब प्रलोभन में व्यक्ति इनकी प्रार्थना सभाओं में जाने लगता है तो, उसे अपना साहित्य देते हैं।
- धीरे-धीरे घर से देवी-देवताओं की मूर्ति और चित्र हटाने को कहते हैं, भोले-भाले व्यक्ति को यह पता भी नहीं चलता कि, उसका धर्म परिवर्तन किया जा रहा है।
- महिलाओं से कहा जाता है कि, आपके सुहाग के प्रतीक आपको कष्ट पहुँचा रहे हैं, इनका परित्याग करो।
- व्यक्ति धोखे में आ जाता है और फिर किसी चर्च में ले जाकर ईसई बना दिया जाता है।

हम क्या करें?

- हिन्दू संगठनों को चाहिये कि, प्रत्येक मन्दिर में सप्ताह में कम से कम एक बार कीर्तन और प्रार्थना सभा हो। श्रमिकों, वंचितों और निर्धनों को अधिक से अधिक सम्मिलित किया जाये।
- जहाँ भी ईसाई मिशनरियाँ अवैधानिक रूप से धर्मान्तरण करा रही हों, उसकी सूचना प्रशासन को तुरन्त दें।
- हिन्दुत्व का प्रचार करने को लिये प्रत्येक जागरूक हिन्दू को आगे आना होगा। यह कार्य मानवता की रक्षा का कार्य है। किसी का धर्मान्तरण करना सबसे बड़ा मानवाधिकार हनन है।
- श्रमिकों, वंचितों और कृषकों के मध्य वैदिक शिक्षाओं का प्रचार युद्ध स्तर पर हो। आर्यसमाज भी अपनी निद्रा का परित्याग करें और सनातनसभाएं भी सक्रिय हों।
- बौद्ध, सिक्ख और जैन संगठनों को भी चाहिये कि, वे धर्म प्रचार का कार्य तेजी के साथ करें।
- भारत की आध्यात्मिकता में व्यापकता, सौहार्द्र, सहयोग, उदारता और अहिंसा है। **मानवता की रक्षा हेतु** हिन्दुत्व की रक्षा करनी आवश्यक है।

अखिल भारत हिन्दू महासभा, हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1

चन्द्र प्रकाश कौशिक	मुन्ना कुमार शर्मा	वीरेश कुमार त्यागी
अध्यक्ष	मन्त्री	कार्यालय मन्त्री

तांगेवाला कैसे बना मसालों का शहंशाह

—महाशय धर्मपाल गुलाटी (एम.डी.एच.)

गतांक से आगे....

फिर उन लोगों ने भी इसी तर्ज पर दो पार्टियां बनायीं—**पहली एहरार पार्टी और दूसरी खासकार पार्टी।** खासकार पार्टी वाले भी **आर.एस.एस. की तरह ही बाजारों में मिलिटरी की शक्ल में परेड निकालते।** दरअसल जब परेड निकालने का सिलसिला आर.एस.एस. ने शुरू किया, तो मुसलमानों को करंट-सा लगा कि हिन्दू तो इसी बहाने इकट्ठे हो रहे हैं, हमारा क्या होगा। फिर **खासकार पार्टी वालों के हाथों में बेलचा पकड़ाया गया। इसी वजह से उस समय लोग खाकसार पार्टी को बेलचा पार्टी कहते थे।** आहिस्ता-आहिस्ता यह बेलचा पार्टी पूरे पंजाब में बढ़ती गयी।

लाहौर में एक गुरुद्वारा था, जिसका नाम **सीसगंज** गुरुद्वारा था। **जब मुसलमानों का राज था, तो उस जगह पर सिखों पर उन्होंने बहुत जुल्म ढाया। वहां सिखों को मारकर कुओं में फेंका जाता था।** फिर वक्त ने पलटा खाया और उस जगह पर एक गुरुद्वारा बना, जिसका नाम सीसगंज गुरुद्वारा रखा गया। कई सालों तक कोर्ट में उसका मुकदमा चलता रहा। वहां पर कब्जा तो सिखों का था, मगर मुसलमान वहां पर रोज पिकेटिंग करते।

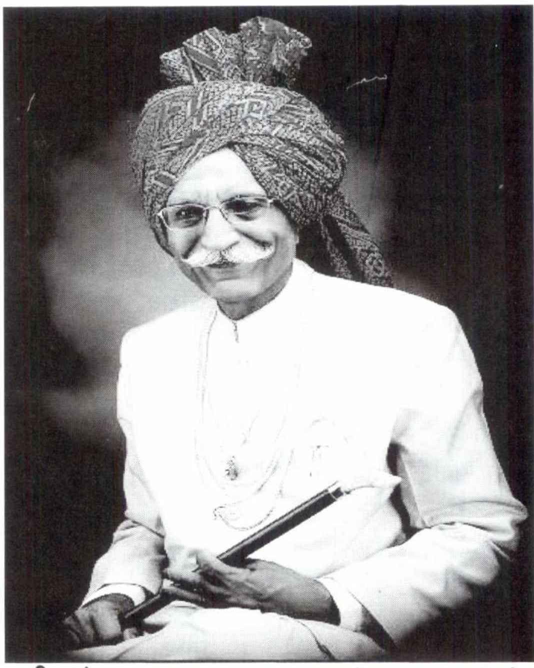

एक बार की बात है। खाकसार पार्टी मतलब बेलचा पार्टी वालों ने एक बहुत बड़ा जुलूस निकालकर सीसगंज गुरुद्वारा पर हमला करने की कोशिश की।

उन दिनों अंग्रेजों की हुकूमत थी और मुख्यमन्त्री चौधरी सिकंदर हयात थे। उन्होंने पुलिस को हुक्म दिया कि बेलचा पार्टी पर लाठी चलायी जाए या न चलायी जाए, पर गोली जरूरी चलायी जाए। अब तो बेलचा पार्टी वालों में हड़कम्प मच गया। सोचकर तो आए थे कि सिखों के गुरुद्वारे सीसगंज को नुकसान पहुंचाएंगे, मगर यहां अपनी जान पर ही मौत के बादल मंडराने लगे। **बेलचा पार्टी वाले जान बचाकर भागे। कोई नालियों में घुस गया, तो कोई और कहीं।** मालूम नहीं इसके बाद बेलचा पार्टी कहां गयी। फिर तो यह समझो खत्म-सी हो गयी।

उन दिनों सियालकोट में दंगा-फसाद अपने चरम पर था, वहां रात-रातभर जागना पड़ता था। लोग रात में बारी-बारी से जागते थे। लाठी-भाले और बन्दूकों का भी इन्तजाम करना पड़ा। एक तरफ मुसलमान लोग सारी-सारी रात नारे लगाते—**'नारा-ए-तदबीर अल्लाह हू अकबर'**, तो दूसरी तरफ हिन्दुओं के परम्परा के चले आ रहे नारे से माहौल गूंज उठता—**'हर-हर महादेव।'** इस तरह खौफ के साये में रातें निकलती जा रही थीं।

14 अगस्त, 1947 की रात को देश के दो टुकड़े हो गए। लोग कहते हैं टुकड़ों में हमें आजादी देकर अंग्रेज ने हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच सरहद की लकीरें खींच दीं, मगर **मेरा तो मन यही कहता है कि सरहद से भी कहीं ज्यादा अंग्रेजों ने हमारे दिलों पर नफरत की तलवार से लकीरें खींच दीं, जो शायद ही कभी मिट सकें।**

वह रात जश्न मनाने की रात थी, **सदियों तक गुलामी की जंजीर में जकड़े रहने के बाद 14 अगस्त, 1947 की रात को इस गुलामी से छुटकारा मिला था। मगर देश का हर हिस्सा इस यादगार मौके पर यादगार जश्न में शरीक नहीं हो पाया। कहीं जश्न का माहौल था, तो कहीं एक तरफा जंग का ऐलान हो चुका था।**

देश के बंटवारे के बाद हमारी जो जन्मभूमि सियालकोट थी, **वह पाकिस्तान की हद में आ गई थी। और वहां जो ज्यादातर मुस्लिम कौम थी, उसे हिन्दुओं के नाम से ही नफरत थी।** आजादी की रात को ही यह नफरत मुस्लिम..... **क्रमशः..**

ओ३म्

वेद मन्दिर की गौशाला एक आग्रह : एक निवेदन

देव दयानन्द के वेद प्रचार के आह्वान् को शिरोधार्य कर दयानन्द संस्थान विगत लगभग पांच दशक से आपके सहयोग-सम्बल के बल पर "चारों वेदों का हिन्दी भाष्य" तथा अन्य वैदिक साहित्य लगभग साढ़े चार लाख परिवारों में पहुंचाने में सफल रहा है।

महर्षि दयानन्द ने गौ पालन और गौ-रक्षण में प्रवृत्त रहने को भी वैदिक आस्थाओं के प्रति श्रद्धालु जन से आह्वान् किया था। दयानन्द संस्थान ने महर्षि के इस निर्देश के अनुसार महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, वेदमन्दिर इब्राहीमपुर, दिल्ली-३६ में लगभग २५ वर्ष पूर्व एक गौशाला का शुभारम्भ किया था। इस गौशाला में उत्पादित गौ दुग्ध का वितरण आश्रमवासियों तथा समय-समय पर आने और ठहरने वाले अतिथि गण में किया जाता है।

गौभक्तों एवं उदारमना तथा स्व-संस्कृति के प्रति आस्थावान दानी सज्जन वृन्द से हमारा आग्रह निवेदन है कि **प्रतिमास सहयोग राशि अपनी सुविधानुसार गौग्रास के रूप में भेजकर संस्थान की गौशाला की गौओं को उत्तम चारा सुलभ कराकर गौ रक्षा में अपने दायित्व के निर्वहन में सहभागी बनें। यदि हमारे एक सौ सहयोगी सदस्य प्रतिमाह गौग्रास रूप चारा-भूसा प्रदान करेंगे तो उनका यह सहयोग गौशाला के संचालन में ठोस योगदान सिद्ध होगा।** अतः गोभक्तों से निवेदन है **कि** गौओं हेतु चारा-भूसा लेने में **अपना सहयोग अधिक से अधिक देने की कृपा करें। इस समय नया भूसा सस्ते मूल्य में मिल रहा है बाद में दुगुने दाम पर लेना पड़ता है। अभी दो लाख रुपए अनुमानतः कम पड़ेगा। अतः आपके सहयोग की तुरन्त आवश्यकता है।** गौओं हेतु अपने योगदान की राशि **"स्वामी दयानन्द संस्थान"** के नाम चैक/ड्राफ्ट/ अथवा मनीआर्डर द्वारा प्रेषित कर सकते हैं। अथवा आप सहयोग राशी सीधे यूनियन बैंक दिल्ली में खाता नं. 307902010054434 IFSC: UBIN 0530794 में जमा करा सकते हैं। **बैंक में जमा की गई राशि की रसीद की प्रतिलिपि हमें अवश्य भेजें।**

स्वामी दयानन्द संस्थान द्वारा संचालित गौशाला के संचालन में चारा प्रदान करने वाले गौभक्तों के नाम और राशि को **'जनज्ञान'** मासिक में भी प्रकाशित किया जाएगा। दानराशि निम्न पते पर प्रेषित करें:-

अध्यक्ष- स्वामी दयानन्द संस्थान
वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, केशवनगर (इब्राहीमपुर)
पो.-मुखमेलपुर, दिल्ली-३६ चलभाष : 9810257254, 8459349349
E-mail : dayanandsansthan.jangyan@gmail.com

संक्षिप्त-सूची पत्र

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

1. चारों वेदों का हिन्दी भाष्य 3700 रु.
2. सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य-विश्वनाथ जी 300 रु.
3. वेद ज्योति चारों वेदों के चुने गये (100-100 मन्त्रों की व्याख्या) 100 रु.
4. वेदांजलि : (वर्ष के 365 दिनों के लिए 365 वेद मंत्रों की व्याख्या)-आ.अभयदेव जी 100 रु.
5. भारत के वीर बच्चों की कहानियां-पं. प्रेमचन्द जी 20 रु.
6. धरती का स्वर्ग -पं. शिवकुमार शास्त्री 20 रु.
7. सरस्वतीन्द्र जीवन (दयानन्द का जीवन चरित्र) 60 रु.
8. महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन परिचय) 20 रु.
9. धर्म का सार (धर्म का रहस्य बताने वाली कथाएं) 20 रु.
10. स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (जीवन परिचय) 5 रु.
11. वैदिक सम्पत्ति- पं. रघुनन्दन शर्मा 300 रु.
12. धर्म का मार्ग (धर्म के दस लक्षणों की सरल व्याख्या) 20 रु.
13. योग और ब्रह्मचर्य-सम्पादक-दिव्या आर्य 20 रु.
14. गीत मंजरी (भजनों का अनुपम संग्रह) 20 रु.
15. Inside the Congress-स्वामी श्रद्धानन्द जी 80 रु.
16. Life and Teachings of Swami Dayanand -बाबा छज्जूसिंह जी 300 रु.
17. History of the assassins 80 रु.
18. Concept of God-स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती 100 रु.
19. Vedic Prayer(दै.संध्या-हवन हिन्दी शब्दार्थ-भावार्थ)60रु.
20. Light of Truth (सत्यार्थप्र. अंग्रेजी में-दुर्गाप्रसाद)300 रु.
21. A Short Life Story of Swami Dayanand 40 रु.
22. प्रकृति और सर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री) 20 रु.
23. वैदिक गीता का सरल हिन्दी भाष्य-आर्यमुनि जी 80 रु.
24. संक्षिप्त महाभारत 100 रु.
25. संक्षिप्त रामायण 20 रु.
26. ऋग्वेद शतकम 20 रु.
27. चतुर्मास की चार पूर्णिमाएं 25 रु.
28. सत्संग पद्धति 15 रु.
29. वैदिक सान्ध्य गीत 20 रु.
30. गायत्री मन्त्र का चार्ट, हिन्दी व्याख्या सहित दोनों ओर पत्ती लगा 5 रु.
31. उपनिषद संग्रह-महात्मा नारायण स्वामी 100 रु.
32. बृहत्तर भारत-पं. चन्द्रगुप्त वेदालंकार 300 रु.
33. ईश्वर-(संसार के वैज्ञानिकों की दृष्टि में) 150 रु.
34. अथर्ववेदीय चिकित्साशास्त्र-स्वामी ब्रह्ममुनि 200 रु.
35. अथर्ववेदीय मन्त्रविद्या-स्वामी ब्रह्ममुनि 100 रु.
36. वैदिक समाज व्यवस्था- प्रशांत वेदालंकार 100 रु.
37. श्रीमद्दयानन्द प्रकाश 100 रु.
38. श्रीमद्भगवद्गीता(काव्य)-मृदुल कीर्ति 80 रु.
39. मोपला (उपन्यास)-वीर सावरकर 20 रु.
40. वीर सावरकर-संक्षिप्त जीवन परिचय 5 रु.
41. भाई परमानन्द (जीवन परिचय) 40 रु.
42. बाल सत्यार्थ प्रकाश-स्वामी जगदीश्वरानन्द जी 80 रु.
43. उपदेश मंजरी-(महर्षि दयानन्द के 14 व्याख्यान)30 रु.
44. योगासन 20 रु.
45. स्वास्थ्य का महान शत्रु अंडा 3 रु.
46. विश्व को वेद का संदेश
47. विश्व को आर्यसमाज का संदेश

हिन्दू धर्मरक्षक साहित्य बाँटिये

1. क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे? 3.00 रु.
2. हिन्दुओं को चेतावनी-वेदभिक्षु: 2.00 रु.
3. भारत के मुसलमानों का क्या करें? -वेदभिक्षु: 2.00 रु.
4. हम सब हिन्दू हैं-सावरकर 2.00 रु.
5. इस्लाम में क्या है? -राकेश रानी 2.00 रु.
6. इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियाँ -जहीर नियाजी 2.00 रु.
7. हिन्दू जागो ! देश बचाओ 2.00 रु.
8. इस्लाम-एक परिचय 2.00 रु.
9. पोप की सेना का भारत पर हमला - वेदभिक्षु: 2.00 रु.
10. पादरियों को चुनौती 2.00 रु.
11. बाईबिल को चुनौती 2.00 रु.
12. क्या ईसा खुदा का बेटा था? 2.00 रु.
13. और पादरी भाग गया 2.00 रु.
14. बाइबल कसौटी पर 5.00 रु.
15. Bible in the Balence 3.00 रु.
16. हमने इस्लाम क्यों छोड़ा? 2.00 रु.
17. क्या भारत का एक और विभाजन होगा? 2.00 रु.
18. हिन्दू राष्ट्र के नाम मां का संदेश 2.00 रु.
19. हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा 2.00 रु.
20. A challange to the Christian Faith 1-00 रु.

मुख्य कार्यालय: स्वामी दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम, केशवनगर बस स्टैण्ड (इब्राहीमपुर), दिल्ली-36 दूरभाष : 91-8459349349, 9810257254

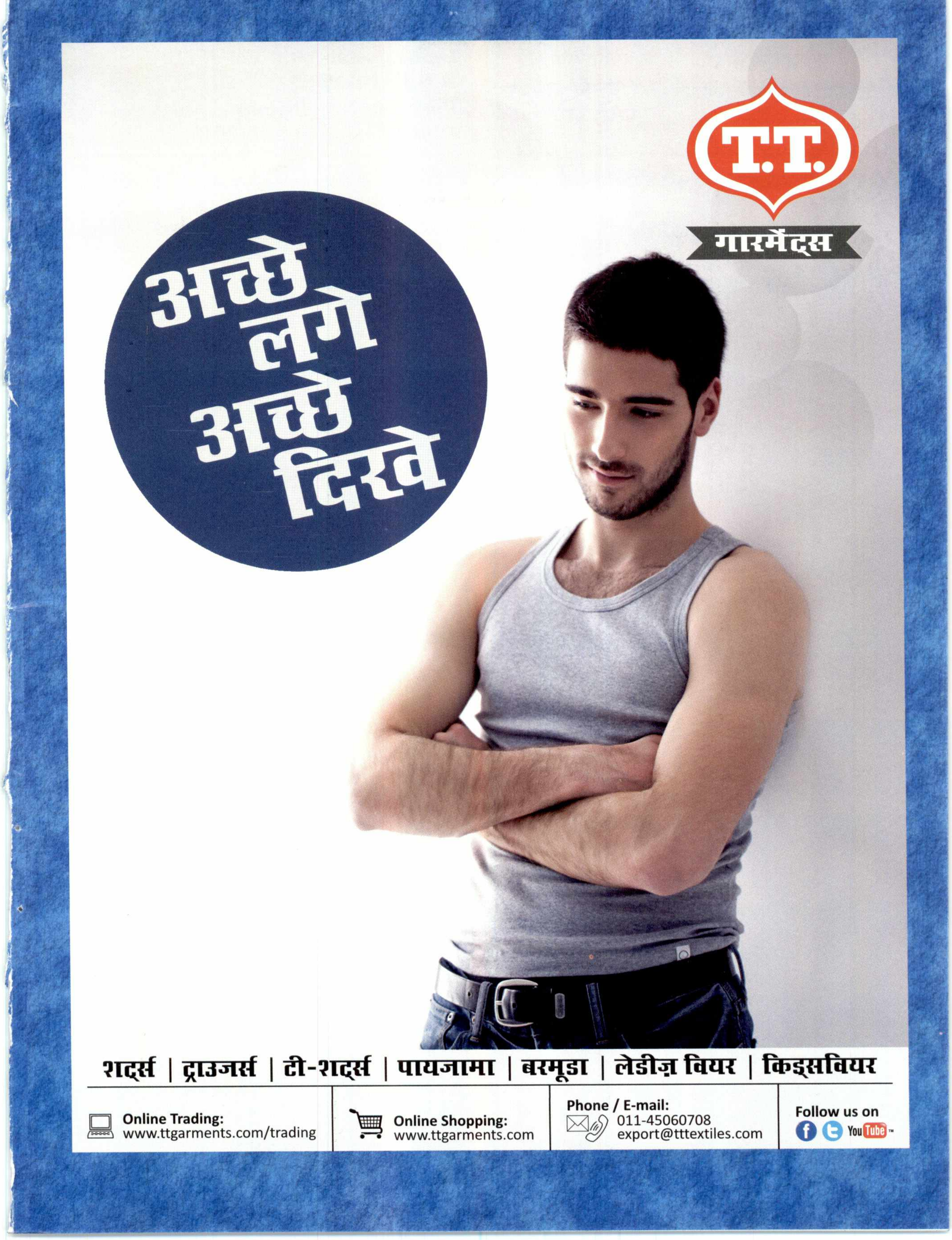
T.T.
गारमेंट्स
अच्छे लगे अच्छे दिखे
शर्ट्स | ट्राउजर्स | टी-शर्ट्स | पायजामा | बरमूडा | लेडीज़ वियर | किड्सवियर
Online Trading: www.ttgarments.com/trading
Online Shopping: www.ttgarments.com
Phone / E-mail: 011-45060708 export@tttextiles.com
Follow us on
YouTube

जनज्ञान (मासिक)
वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
(इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर, दिल्ली-३६

फाल्गुन-चैत्र
सम्वत्- २०७१
मार्च, सन्- २०१५

Delhi Postal NO. G-3/ DL (N) / 333 /2015-2017
R.N.I. -10719/65
Posted at N.D.PSO on
Date 5 & 6 of March-2015